UNIVERSAL LIBRARY

OU_182021

UNIVERSAL LIBRARY

संरक्षक

# संरक्षक

लेखक

हरिकृष्ण 'प्रेमी'

१९५८

भारती साहित्य मन्दिर

फव्वारा — दिल्ली

प्रकाशक
**गौरीशंकर शर्मा**
**भारती साहित्य मन्दिर**
फव्वारा, दिल्ली–६

**एस० चन्द एण्ड कम्पनी**
आसफअली रोड नई दिल्ली
फव्वारा दिल्ली
माई हीरां गेट जालन्धर
लालबाग लखनऊ

Checked 1969

मूल्य २॥)

मुद्रक
**रसिक प्रिंटर्स**
५ सन्त नगर,
करौल बाग, नई दिल्ली–५

# प्रारम्भिक निवेदन

प्रस्तुत नाटक उस समय की एक झाँकी है जब अंग्रेज भारत में अपने राज्य का विस्तार कर रहे थे। राजस्थान के हाड़ौती प्रदेश में हाड़ा राजपूतों के आधीन कोटा राज्य आंतरिक संघर्षों में लीन था। जालिम-सिंह नाम का झाला राजपूत महाराव उम्मीदसिंह का मामा था और उम्मीदसिंह के पिता इस संसार से बिदा लेते समय उसे उम्मीदसिंह का संरक्षक बना गए थे। महाराव उम्मीदसिंह का भी जालिमसिंह के जीवित रहते स्वर्गवास हो गया था किन्तु उनके स्वर्गवास के समय युवराज किशोरसिंह प्रौढ़ावस्था को प्राप्त हो चुके थे। जालिमसिंह और उनका ज्येष्ठ पुत्र माधोसिंह चाहते थे कि संरक्षक का पद वंशानुगत झालावंश में रहे और महाराव नाम मात्र के राजा रहें, वास्तविक सत्ता जालिमसिंह और उनके पश्चात् उनके पुत्र माधोसिंह के हाथ में रहे।

किशोरसिंह जब महाराव हुए तो उन्होंने पूर्ण सत्ता अपने हाथ में लेनी चाही। जालिमसिंह का दासी-पुत्र गोवर्धन जो माधोसिंह से अधिक योग्य और महत्त्वाकांक्षी था इस विषय में महाराव का समर्थक था। महाराव के छोटे भाई राजकुमार पृथ्वीसिंह भी हाड़ा राजगद्दी पर झालाओं के आतंक को समाप्त कर देने को लालायित थे। इस प्रकार कोटा राज्य में गृह-संघर्ष चालू था।

उस समय अंग्रेजों ने भारतीय राज्यों में संरक्षक सेना रखने के लिए संधियाँ करने की नीति चालू कर रखी थी। जालिमसिंह ने अंग्रेजों को अपना मित्र बनाकर अपनी स्थिति को सुदृढ़ करना उचित समझा और महाराव उम्मीदसिंह को ऊँच-नीच समझाकर अंग्रेजों से सन्धि करने के लिए तैयार किया। जिस सन्धि-पत्र पर महाराव ने २६ दिसम्बर १९१७ के दिन हस्ताक्षर किए उसकी शर्तें थीं—

(१) अंग्रेजी शासन और महाराव उम्मीदसिंह और उनके उत्तराधिकारियों में अटूट मित्रता, सहयोग और हितों की एकता रहेगी।

(२) सन्धि करने वाले दलों में से एक के मित्र और शत्रु दूसरे के भी मित्र और शत्रु होंगे।

(३) कोटा-राज्य की प्रभुसत्ता और सीमाओं की रक्षा का भार अंग्रेजी शासन लेगा।

(४) महाराव और उनके उत्तराधिकारी अंग्रेजी शासन को सदा ही अधीनतापूर्ण सहयोग देते रहेंगे और अंग्रेजी शासन की अपने ऊपर श्रेष्ठता स्वीकार करेंगे। अभी तक जिन राज्यों और राजाओं से उनके किसी प्रकार के सम्बन्ध हैं वे अब भविष्य में नहीं रखेंगे।

(५) भविष्य में महाराव और उनके उत्तराधिकारी किसी राज्य या राजा से अंग्रेजी शासन की अनुमति के बिना कोई सम्पर्क स्थापित नहीं करेंगे लेकिन उन्हें मित्रों और नातेदारों से साधारण पत्र-व्यवहार करने का अधिकार होगा।

(६) महाराव और उनके उत्तराधिकारी किसी पर आक्रमण नहीं करेंगे और महाराव और उनके उत्तराधिकारियों के किसी कार्य से अथवा किसी अन्य राज्य या व्यक्ति के किसी कार्य के कारण उनका किसी से कोई विवाद खड़ा होगा तो उन्हें अंग्रेजों को अपना पंच स्वीकार कर उनका निर्णय स्वीकार करना पड़ेगा।

(७) अभी तक कोटा राज्य जो कर किसी अन्य राज्य को देता रहा है वह अंग्रेजी शासन को देगा।

(८) कोई दूसरा राज्य कोटा से कर नहीं ले सकेगा और यदि कोई किसी कर की माँग करेगा तो अंग्रेजी शासन उससे निबटेगा।

(९) कोटा राज्य की सेना आदेश मिलने पर अंग्रेजी शासन को उपलब्ध हो सकेगी।

(१०) महाराव और उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य में पूर्ण

प्रभुसत्ता सम्पन्न रहेंगे। अंग्रेजी शासन के कायदे-कानून कोटा राज्य पर लागू नहीं होंगे।

इस सन्धि-पत्र में जालिमसिंह और माधोसिंह के लिए संरक्षक का पद प्राप्त होगा और उन्हें राज्य का शासन चलाने का अधिकार होगा ऐसी कोई शर्त नहीं थी। बाद में अंग्रेजों ने चाहा कि इस सन्धि-पत्र में यह शर्त भी रहे किन्तु इस शर्त वाले सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर होने के पहले महाराव उम्मीदसिंह का देहान्त हो गया। उनके उत्तराधिकारी महाराव किशोरसिंह ने इसे स्वीकार करने से इनकार किया तथा सन्धि-पत्र की दसवीं धारा के अनुसार अपने राज्य में पूर्ण प्रभुसत्ता प्राप्त करने की उन्होंने माँग की। अंग्रेजों ने जालिमसिंह और माधोसिंह का पक्ष लिया। किस प्रकार कोटा के हाड़ाओं ने इस सम्बन्ध में अंग्रेजों से वीरतापूर्वक संघर्ष किया यह इस नाटक में चित्रित है।

यह नाटक भारत के अंग्रेजी काल के इतिहास का एक पृष्ठ है। वे कौनसी बातें थीं जिनके कारण भारत पराधीनता के पाश में बँध गया—भारतीय चरित्र की वे कौनसी दुर्बलताएँ थीं जिनके कारण वह स्वाधीनता की रक्षा न कर सका उनकी झाँकी इस नाटक में पाठक पा सकेंगे। हम अभी स्वतन्त्र हुए हैं और हमें अपनी स्वाधीनता की रक्षा करनी है, इसलिए हमें अपना इतिहास इस दृष्टिकोण से भी पढ़ना है कि हम अपनी उन दुर्बलताओं को जान सकें जिनके कारण हम पराधीन हुए थे ताकि भविष्य में उन भूलों को हम दुहरावें नहीं।

इस प्रारम्भिक निवेदन के साथ मैं अपने देशवासियों के सम्मुख यह नाटक प्रस्तुत करता हूँ।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी'

# पात्र-सूची

## मुख्य पात्र

१. **महाराव उम्मीदसिंह** : कोटा के महाराव (इनका देहांत प्रथम दृश्य के पश्चात् हो जाता है)।

२. **महाराव किशोरसिंह** : महाराव उम्मीदसिंह के ज्येष्ठतम पुत्र (यह महाराव उम्मीदसिंह के देहांत के पश्चात् कोटा राज्य के राजा बनते हैं)।

३. **राजकुमार पृथ्वीसिंह** : किशोरसिंह का छोटा भाई।

४. **ज़ालिमसिंह** : महाराव उम्मीदसिंह का मामा और संरक्षक।

५. **माधोसिंह** : ज़ालिमसिंह का ज्येष्ठ पुत्र।

६. **गोवर्धन** : ज़ालिमसिंह का दासी-पुत्र।

७. **दुर्गा** : झाबुआनरेश की दासी-पुत्री।

८. **सर्फ़ अली** : कोटा का एक सेनापति।

९. **मिर्ज़ा मोहम्मद अली** : कोटा का एक सेनापति।

१०. **अंग्रेज़ एजेंट** : अंग्रेज़ी शासन का प्रतिनिधि।

## गौण पात्र

राजवैद्य, नर्तकी, दासी, सामंत, किसान, सैनिक, सेवक आदि।

# पहला अंक

## पहला दृश्य

[कोटा के राजमहल में महाराव उम्मीदसिंह का शयन-कक्ष। महाराव रुग्णावस्था में शय्या पर शयन कर रहे हैं। एक दासी पंखे से हवा कर रही है। एक सेवक उनके पाँव दाब रहा है। राजवैद्य महाराव की नाड़ी देख रहे हैं। पर्यंक के निकट हाथी-दाँत की पच्चीकारी की हुई शीशम की तिपाई पर स्वर्ण-पात्रों में औषधियाँ रखी हैं। कक्ष में उपयुक्त स्थानों पर ढाल, खड्ग, भाले, धनुष-बाण आदि अस्त्र-शस्त्र रखे हुए हैं। दीवारों पर सिंहों की मुखों सहित खालें टँगी हुई हैं। फर्श पर बहु-मूल्य कालीन बिछी हुई है। सारा कक्ष राजसी ठाट से सुसज्जित है।]

**महाराव उम्मीदसिंह :** (धीमे एवं टूटे से स्वर में) वैद्यराज, अब नाड़ी देखने से क्या होगा ?

**राजवैद्य :** महाराव, नाड़ी की गति शरीर के सम्पूर्ण विकारों को सूचित कर देती है। आयुर्वेदिक चिकित्सा का तो आधार ही नाड़ी का ज्ञान है।

**महाराव :** (धीमे एवं टूटे स्वर में) मैं आयुर्वेदिक चिकित्सा पर विश्वास नहीं करता वैद्यराज, न आपकी नाड़ी-

परीक्षा पर मुझे संदेह है, किन्तु (**खाँसते हैं**) मेरा अंतर्वासी बोलता है—तेरे जीवन की साँसें गिनती की रह गई हैं।

**राजवैद्य** : नहीं महाराव, जब तक साँस है तब तक आशा है। आयुर्वेदिक औषधियों में ऐसा चमत्कार है कि जहाँ संसार की सारी चिकित्सा-पद्धतियाँ पराजित हो जाती हैं वहाँ ये जादू कर दिखाती हैं। अभी कोटा राज्य के निवासी वर्षों अपने वीर और उदार महाराव की छत्रछाया में रहेंगे।

**महाराव** : (**अपना हाथ राजवैद्य के हाथ से खींचकर**) महाराव की छत्रछाया। हुँ (**खाँस उठते हैं**) महाराव, कौन है महाराव। विदेशियों का बारंबार मान-मर्दन करनेवाले पृथ्वीराज चौहान का वंशज, अलाउद्दीन खिलजी के दाँत खट्टे करनेवाले महाहठी महाराव हमीरसिंह का वंशज, मानवता की मूर्ति दारा शिकोह की ढाल बननेवाले वीरवर छत्रसाल हाडा का वंशज उम्मीदसिंह क्या है ? (**खाँसता है**) क्या है ! एक खिलौना-कठपुतली शक्तिहीन-पराधीन ·····(**खाँसी बढ़ती है**)।

**राजवैद्य** : महाराव, उत्तेजना से रोग बढ़ता है। असल में आपका रोग शरीर से अधिक मन का है।

**महाराव** : (**धीमे स्वर एवं अवरुद्ध-से कण्ठ से**) हाँ, वैद्यराज मन का है। मन का है और इस मन के रोग की चिकित्सा तुम्हारे आयुर्वेद में भी नहीं है।

महाराव उम्मीदसिंह ने ··(**खाँसते हैं**) उम्मीदसिंह ने कितनी उन्नति की, उसके पूर्वज औरंगज़ेब को छोड़कर शाहजहाँ एवं सभी मुग़ल सम्राटों के भाग्यविधाता रहे हैं, उनके संकेतों पर भारत की राजनीति का चक्र घूमता था—लेकिन यह उम्मीदसिंह इंग्लैण्ड की बादशाहत का मित्र बना है। कितने गौरव की बात है। (**खाँसी तेज़ हो उठती है।**)

**राजवैद्य** : (**सेवक से**) पानी दो।

[**सेवक पानी देता है। महाराव बैठकर पीते हैं और पीकर पात्र सेवक को देते हैं।**]

**महाराव** : वैद्यराज, ये अंग्रेज़ भारत में व्यापार करने आए थे और अब हमारे देश के बहुत बड़े भाग के शासक बन बैठे हैं। भारत की शक्तियाँ—मराठे, राजपूत और मुसलमान—सभी डेढ चावल्ल की खिचड़ी अलग-अलग पका रहे हैं। एक दूसरे को ही खा लेने को मुँह फैला रहे हैं। परस्पर लड़ते हैं और सहायता के लिए अंग्रेज़ों को बुलाते हैं—सहायता के प्रतिदान में अपने राज्य का भू-भाग देते हैं। आज स्थिति यह है कि अंग्रेज़ सर्वोपरि हैं। वैद्यराज, आपके आयुर्वेद में भारतीय राजाओं की मूर्खता और अंग्रेज़ों की धूर्तता का भी कोई इलाज है?

**राजवैद्य** : अन्नदाता, आयुर्वेद मानव-शरीर के रोगों को चिकित्सा करता है।

**महाराव** : वैद्यराज, मानव का मन, हृदय और आत्मा क्या ये शरीर के अंग नहीं हैं। आज भारतीय मानवों का मन स्वार्थी, लोभी और बेईमान क्यों हो गया है। उनका हृदय कायर क्यों हो गया है, उनकी आत्मा पतित क्यों हो गई है ? (**खाँसते हैं**)

**राजवैद्य** : महाराव, आपका शरीर दुर्बल है, हृदय की गति दुर्बल है—उत्तेजना का परिणाम·····

**महाराव** : परिणाम मृत्यु है। मृत्यु होती है जीवित व्यक्तियों की—मुर्दों की नहीं (**खाँसते हैं**) महाराव उम्मीदसिंह की मृत्यु तो उसी दिन हो चुकी जिस दिन इसने भारत के स्वयंसिद्ध संरक्षक और शासक अंग्रेज़ों के प्रतिनिधि लार्ड हेस्टिंग्स से सहायक सेना रखने के लिए संधि की।

[**ज़ालिमसिंह का प्रवेश और झुककर महाराव को दण्डवत् करना**]

**ज़ालिमसिंह** : महाराव के चरणों में सेवक ज़ालिमसिंह नमन करता है।

**महाराव** : मामा जी का भतीजे के चरणों में नमन ! कैसी विडंबना है ? मैं तो नादान बच्चा हूँ। आपकी अँगुली पकड़कर चलनेवाला शिशु। नमन तो मुझे करना चाहिए। (**उठने का यत्न करते हैं।**)

**राजवैद्य** : (**महाराव को उठने से रोककर**) महाराव, उठने से कष्ट होगा।

**महाराव** : (**फिर बैठते हुए**) किन्तु मामा जी के चरण न छूने से और भी अधिक कष्ट होगा।

**ज़ालिमसिंह** : महाराव की उदारता पर मानवता गर्वित है किन्तु इसे न भूलिए कि मैं आपका मामा होते हुए भी आपका सेवक हूँ। आप जानते ही हैं राजपूत स्वामी को भगवान के समकक्ष मानता है। मेरे शरीर के चर्म की महाराव के लिए जूतियाँ बनवाई जावें तब भी मैं समझूँगा मैं स्वामी-ऋण से उऋण नहीं हुआ।

**राजवैद्य** : धन्य हो, फौजदार जी।

**महाराव** : फौजदार ? कौन है फौजदार ?

**राजवैद्य** : मेरा मतलब·····

**महाराव** : हाँ, हाँ, जानता हूँ, तुम मामा जी के सम्बन्ध में कह रहे थे, किन्तु मैं समझता हूँ तुम भूल कर रहे हो। मामा जी फौजदार नहीं, महाराव हैं।

**ज़ालिमसिंह** : महाराव ?

**महाराव** : हाँ, हाँ, मामा जी, मेरे कंधों पर जो मस्तक है, जिस पर राजमुकुट शोभा पाता है वह उम्मीदसिंह का नहीं ज़ालिमसिंह का मस्तिष्क है। ग़लती से किसी ने उस मस्तिष्क को इन कंधों पर रख दिया है।

**ज़ालिमसिंह** : महाराव, अपने अनुचर पर कुपित जान पड़ते हैं।

**महाराव :** कुपित। हः हः हः ! **(ज़ोर से हँसते हैं। हँसी के कारण खाँसी उठती है। ज़ालिमसिंह उनके वक्ष को दबाता है।)**

**ज़ालिमसिंह :** वैद्यराज, महाराव को खाँसी कब तक दूर होगी ?

**महाराव :** घबराओ नहीं ज़ालिम, यह खाँसी दूर हो जावेगी। खाँसने वाला भी दूर हो जावेगा। तुम निष्कण्टक·····

**ज़ालिमसिंह : (सेवकों से)** थोड़ी देर के लिए तुम लोग जाओ।

**[सेवक-सेविका का प्रस्थान]**

**ज़ालिमसिंह :** महाराव, ज़ालिमसिंह से अपराध बन पड़ा है तो उसे दंड दीजिए—व्यंग के शरों से घायल न कीजिए। मैं कितना चाहता हूँ कि मैं राजकाज से छुटकारा पालूँ किन्तु कोटा राज्य की नैया को अभी तक भयानक भँवरों में से मैं निकालता रहा हूँ, आज भी भारत की राजनीति के समुद्र में तूफ़ान उठ रहा है। भारत की प्रत्येक राजसत्ता विपत्ति में ग्रस्त है। कोटा राज्य पर भी विपत्ति के बादल मँडरा रहे हैं। एक तरफ मराठे, दूसरी तरफ़ हाड़ाओं के चिरशत्रु जयपुरवाले हमारे हरे-भरे उपजाऊ प्रदेश को हज़म कर जाने को लालायित हैं। मैंने साम, दाम, दण्ड और भेद-नीति से कोटा राज्य की स्वाधीनता और समृद्धि की रक्षा की है।

**महाराव :** हाँ, मेरे और कोटा राज्य के संरक्षक मामा जी, आपने कोटा राज्य का संरक्षण किया है मराठों को खिराज देकर और अंग्रेज़ों की सहायक सेना अपनी सीमा में रखने की संधि कर अपनी गर्दन उनके जुए में फँसवाकर। आपने राजपूत होकर भी व्यापार-बुद्धि से काम लिया है।

**ज़ालिमसिंह :** महाराव, यह आवश्यक नहीं कि राजपूत सदा ही आवेश में आकर चट्टान से सिर टकराकर आत्महत्या करता रहे। ज़ालिमसिंह कायर नहीं है, इसकी नसों में राजपूत रक्त है इसका प्रमाण इसने बटवारे के युद्ध में दिया था जहाँ जयपुर की प्रबल सेना के दाँत खट्टे किए थे। उस दिन के शौर्य पर मुग्ध होकर जीजा जी—अर्थात् आपके पिताश्री ने कोटा राज्य की सुरक्षा और शासन का सम्पूर्ण भार इसके कंधों पर डाल दिया था, तभी उन्होंने देवलोक प्रस्थान करते समय इसे आपका संरक्षक नियत किया था। केवल बटवारे के युद्ध में ही इसके राजपूत-धर्म की इतिश्री नहीं हो गई। आप तो जानते हैं वैद्य-राज, उसके पश्चात् भी कोटा पर कितने आक्रमण हुए—वे सब ज़ालिमसिंह ने ढाल बनकर झेल लिये। ठीक है न वैद्यराज।

**वैद्यराज :** हाँ, आपकी और आपके साथी झालाओं की वीरता किसे अविदित है।

**जालिमसिंह :** मैं झाला हूँ, लेकिन मैंने हाड़ाओं का नमक खाया है इसलिए हाड़ाओं के मान की रक्षा के लिए प्राण देना मेरा धर्म है।

**महाराव :** क्योंकि आज हाड़ाओं की राजगद्दी भी आपकी है।

**जालिमसिंह :** हे गिरिधारी, हे घनश्याम, यह तुम मुझे क्या सुना रहे हो। हाड़ाओं की गद्दी का स्वप्न में भी मुझे लोभ हुआ हो तो हे सुदर्शनधारी तू सुदर्शन से मेरी गर्दन काट डाल। महाराव !

**महाराव :** मामा जी !

**जालिमसिंह :** बेटा, तू ने अपने शब्दों से मेरे अंतःकरण को घायल कर दिया है। मैं कैसे अपने अंतःकरण को चीरकर दिखाऊँ ? मुझ पर विश्वास करो उम्मीदसिंह मेरे जीवन की सबसे बड़ी मनोकामना है कोटा के राज्यवंश और कोटा राज्य के अस्तित्त्व को कायम रखना एवं उन्नत करना। वैद्यराज जी !

**वैद्यराज :** जी !

**जालिमसिंह :** मुझे महाराव से विशेष बातें करनी हैं।

**वैद्यराज :** अच्छी बात है। तो मैं चलता हूँ लेकिन महाराव के उपचार·····

**महाराव :** तुम जाओ, वैद्यराज, उपचार ज़रूरी काम नहीं है। फ़ुरसत से हो जावेगा।

**वैद्यराज :** जो आज्ञा अन्नदाता ! जो औषधि चालू है अभी तो उसी को नियम से लीजिए। कल मैं फिर आऊँगा ।

[ **वैद्यराज का प्रस्थान** ]

**ज़ालिमसिंह :** महाराव, मैं एक विशेष कार्य से आया हूँ ।

**महाराव :** क्या किसी और संधि-पत्र पर हस्ताक्षर कराने हैं ?

**ज़ालिमसिंह :** अंग्रेज़ सरकार से हमने जो संधि की है उसमें लार्ड हेस्टिंग्स ने एक शर्त और बढ़ाई है ।

**महाराव :** क्या ?

**ज़ालिमसिंह :** आप समझेंगे यह शर्त मैंने बढ़ाई है—लेकिन भगवान श्रीजी जानते हैं—मेरा इसमें ज़रा भी हाथ नहीं है ।

**महाराव :** शर्त क्या है, जिसके लिए आपको पहले से ही इतनी सफ़ाई देनी पड़ रही है ।

**ज़ालिमसिंह :** उनकी शर्त है कि कोटा राज्य में संरक्षक का पद स्थायी और वंशानुगत रहे ।

**महाराव :** अर्थात् वर्त्तमान महाराव अपने मामा ज़ालिमसिंह के आश्रित रहें और भावी महाराव मामा जी के बच्चों के आश्रित रहें ।

**ज़ालिमसिंह :** ये अंग्रेज़ हमारे बीच अविश्वास के बीज बो रहे हैं । मैंने उन्हें कितना समझाया कि महाराव की मुझ पर अपार अनुकम्पा है । उनकी अनुमति से मैं ही सारा राज-काज सम्हालता हूँ । मेरे दोनों

पुत्रों पर भी महाराव की बहुत कृपा है। वह स्वयं ही स्वेच्छा से मेरे पुत्रों को उचित पद प्रदान करेंगे। इस संधि-पत्र में यह शर्त नहीं आनी चाहिए।

**महाराव :** तब ?

**ज़ालिमसिंह :** तब भी लार्ड हेस्टिंग्स अपनी हठ पर स्थिर हैं। वह कहते हैं, होल्कर से युद्ध करने में तुमने जो हमारी सहायता की है उसका पुरस्कार हम तुम को अवश्य देंगे।

**महाराव :** पुरस्कार देने का यह अच्छा तरीका है। कदाचित इंग्लैण्ड में ऐसा ही होता हो कि कोई व्यक्ति किसी का भी माल उठाकर पुरस्कार में किसी को भी दे डाले।

**ज़ालिमसिंह :** अंग्रेज़ अपने आपको सम्पूर्ण भारत का·····

**महाराव :** स्वामी मानते हैं। वे ऐसा मान सकते हैं—लेकिन कोई कारण नहीं कि हम भी ऐसा मानें। वे आपको पुरस्कृत करना चाहते हैं तो अपने अधिकृत प्रदेशों में से कोई जागीर आपको दें। आपको पुरस्कार देना है, इसलिए वे हमें दण्ड देने का कोई अधिकार नहीं रखते।

**ज़ालिमसिंह :** महाराव !

**महाराव :** जानते हो ज़ालिमसिंह, ओह भूल गया, मामा जी, इस कोटा राज्य को स्थापित करने और स्थिर

रखने के लिए हाड़ाओं ने सहस्रों प्राणों की आहुति दी है। आप चाहते हैं कि मैं लेखनी की नोंक से कुछ लकीरें खींचकर इसे सदा के लिए आपके हवाले कर दूँ।

**जालिमसिंह :** मेरे संरक्षण में आपके सम्मान को·····

**महाराव :** कोई आँच नहीं आई। नहीं आई—क्योंकि जब स्वर्गीय पिताश्री का स्वर्गवास हुआ तब मैं अल्पायु था। उस समय आपकी संरक्षक के रूप में नियुक्ति सार्थक थी। अब मेरे बच्चे अल्पायु नहीं हैं। मेरे बच्चे और आपके बच्चे समान आयु के हैं। बल-बुद्धि में भी कम नहीं हैं। तब क्या कारण है कि आपका कोई बच्चा मेरी मृत्यु के बाद मेरे बच्चे का संरक्षक बने। यह पद स्थायी और वंशानुगत कैसे हो सकता है ?

**जालिमसिंह :** महाराव, मैं आपसे सहमत हूँ किन्तु लार्ड हेस्टिंग्स किसी तर्क को सुनने को प्रस्तुत नहीं है। मैं चाहूँ चाहे न चाहूँ, वह मुझे पुरस्कृत अवश्य करेंगे। कोटा का राज्य हाडावंश का रहा करेगा और संरक्षक, फ़ौजदार और दीवान का पद झालावंश के पास रहेगा। महाराव राजकाज की झंझट से मुक्त रहेंगे। क्योंकि सम्पूर्ण शासन-यंत्र संरक्षक के हाथ में होगा।

**महाराव :** और हम इस शर्त को न मानें तो ?

**जालिमसिंह :** तो लार्ड हेस्टिंग्स का कहना है कि अंग्रेज़ी सेना

की संगीनों की छाया में महाराव को हस्ताक्षर करने पड़ेंगे।

**महाराव :** (**उत्तेजना में खड़े होकर**) तो हम रणभूमि में लार्ड हेस्टिंग्स से बातें करेंगे। (**खाँसते हैं**)

**ज़ालिमसिंह :** महाराव, आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। आपको लेट जाना चाहिए।

**महाराव :** मामा जी, उम्मीदसिंह हाड़ा है—उन हाड़ाओं का वंशज, जिनके मुण्ड कट जाने पर भी रुण्ड लड़ते थे (**खूँटी से तलवार उठाकर म्यान से निकालकर घुमाते हैं। सहसा खाँसी आती है।**)

ओह, मुझे क्या हो गया है। जान पड़ता है जैसे कोई मुझे धीरे-धीरे विष देता रहा है। (**फिर तलवार घुमाते हुए**) हाथ काँपते हैं। दम फूलता है। फिर भी मुझे युद्ध करना होगा। कोई चिन्ता नहीं मामा जी यदि आज कोटा राज्य की सेना पर मेरे संरक्षक का अधिकार है। मैं अपने मुट्ठीभर हाड़ाओं को लेकर युद्ध करूँगा। ज़ालिमसिंह, जाओ, तुम अपने अंग्रेज़ मित्रों की सेना लेकर आओ हम अपने हाड़ाओं को तैयार करने जाते हैं।

[**महाराव फुर्ती से प्रस्थान करते हैं।**]

**ज़ालिमसिंह :** महाराज! सुनिए। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

[**महाराज के पीछे ज़ालिमसिंह का भी प्रस्थान।**]

**पट-परिवर्त्तन**

## दूसरा दृश्य

**स्थान** : वन प्रदेश

**समय** : संध्या

**[दुर्गा एक शिला पर बैठी हुई है। उसके पैरों के पास धनुष-बाण पड़े हुए हैं और कमर से तलवार बँधी हुई है। देखने में वह परम रूपवती एवं स्वस्थ है। आयु लगभग बीस वर्ष है।]**

**दुर्गा : (गाती है)**

मैं मधुर मुसकान से
ज्वाला जलाना चाहती हूँ।
पर्वतों ने धूल मेरी
ज़िंदगी को है बनाया।
पर्वतों को धूल में मैं
भी मिलाना चाहती हूँ।
मैं मधुर मुसकान से
ज्वाला जलाना चाहती हूँ।
फूल हूँ मैं, कंटकों के
लाड़ में पाली गयी हूँ।
शूल जो जग का बनें वे
प्राण पाना चाहती हूँ।
मैं मधुर मुसकान से
ज्वाला जलाना चाहती हूँ।
खेल दुनिया के लिए है
आज तो मेरी जवानी,

किन्तु जग का नाश कर मैं
खिलखिलाना चाहती हूँ।
मैं मधुर मुसकान से
ज्वाला जलाना चाहती हूँ।
धड़कनें मेरे हृदय की
आज आकुल हो रही हैं।
मैं सुरीली तान से
तूफ़ान लाना चाहती हूँ।
मैं मधुर मुस्कान से
ज्वाला जलाना चाहती हूँ।

**[माधोसिंह का प्रवेश। माधोसिंह चालीस वर्ष का प्रौढ़ व्यक्ति है। वह बहुमूल्य वस्त्र पहने हुए है एवं स्वयं सैनिक वेश में सज्जित है।]**

**माधोसिंह :** राजकुमारी दुर्गा।

**दुर्गा :** कौन माधोसिंह ?

**माधोसिंह :** केवल माधोसिंह।

**दुर्गा :** नहीं तो क्या तुम्हें जंगली जानवर कहकर पुकारूँ ?

**माधोसिंह :** राजकुमारी !

**दुर्गा :** क्यों दर्पण में अपना भयानक मुख देखकर क्रोधित हो उठे ?

**माधोसिंह :** दुर्गा, यद्यपि तुम्हें राजकुमारी कहा जाता है लेकिन तुम एक····

**दुर्गा :** दासी-पुत्री हो—यही तो कहना चाहते हो, माधोसिंह, मैं दासी-पुत्री हूँ इसलिए शायद तुम मेरे जीवन से खिलवाड़ करने का अधिकार रखते हो, यही तुम्हारी मान्यता है।

**माधोसिंह :** मैं तुम्हें आदर के ऊँचे सिंहासन पर बैठाना चाहता हूँ।

**दुर्गा :** आदर का ऊँचा सिंहासन। झाबुआनरेश अर्थात् मेरे पिता जी ने एक दिन मेरी माता के रूप-सौंदर्य पर मोहित होकर उसे आदर के ऊँचे सिंहासन पर बैठाना चाहा था। और ऐसा आदर दिया कि आज उसकी बेटी स्वयं महाराजा की पुत्री—एक दासी-पुत्री से अधिक कुछ नहीं। स्वयं तुम्हारे पिता जी ने एक दासी को आदर के ऊँचे सिंहासन पर बैठाया था। किन्तु उनको वह आदर उसके पुत्र, तुम्हारे पिता से उत्पन्न पुत्र, तुम्हारे भाई गोवर्धन को राजपूत समाज में ऊँचा न उठा सका।

**माधोसिंह :** समाज के नियमों को हम एक दिन में······

**दुर्गा :** मिटा नहीं सकते तो फिर आदर के ऊँचे सिंहासन की बात क्यों करते हो ? इतने दिनों से मैं तुम्हारी बातें सुन रही हूँ। शिकारी की भाँति तुम मेरे शिकार करने के लिए निरंतर पीछा कर रहे हो। यह मत समझो कि मैं एक कोमल मृगी हूँ। जिस तीर ने मेरी माँ को आहत किया उस तीर को मैं अपने कलेजे में प्रवेश नहीं करने दूँगी।

**माधोसिंह** : लेकिन माधोसिंह तो तुम्हारे तीर से आहत मृग है।

**दुर्गा** : तुम्हारे जैसे पुरुषों को आहत होने में आनन्द आता है। एक क्षण के लिए वे जाति का अभिमान और वंश का गौरव भूलकर कीचड़ में खिलने वाले पंकज के आगे नतमस्तक होते हैं और दया की भीख माँगते हैं और फिर उसकी पँखुरी-पँखुरी नोच डालते हैं। माधोसिंह, तुम्हारी इन उन्माद की मादक घड़ियों के पीछे जो एक भयानक काली रात छुपी हुई है क्या उसे तुम नहीं देख पाते।

**माधोसिंह** : दुर्गा, तुम बहुत निष्ठुर हो।

**दुर्गा** : हाँ, मैं निष्ठुर हूँ इसीलिए तो तीर-कमान लेकर जंगलों में घूमती हूँ और अबोध हिरनों का नहीं सिंहों का शिकार करती हूँ।

**माधोसिंह** : लेकिन नारी पुरुष का अनुकरण कर जीवन भर शिकार तो नहीं करती रह सकती।

**दुर्गा** : तो क्या इसलिए उसे पुरुष का शिकार हो जाना चाहिए ?

**माधोसिंह** : नहीं दुर्गा, नारी पुरुष की माँ है, और माँ बनने में ही उसके जीवन की सार्थकता है।

**दुर्गा** : तुम ऊँचे वंशवाले पुरुष मेरी जैसी नारी को माँ तो बना सकते हो, उसे महलों में रख सकते हो, स्वर्ण और रत्नों से उसे लाद सकते हो, लेकिन माँ का वास्तविक सम्मान नहीं दे सकते, उसके

पुत्र को अपने समान अधिकार नही दे सकते ।

**माधोसिंह** : मैं तुम्हें जीवन-संगिनी·····

**दुर्गा** : रहने दो माधोसिंह, इस शब्द का अपमान मत करो । तुम एक बेटे के बाप हो । उसकी माँ इस समय कोटा में है और तुम झाबुआ में, किन्तु यह दूरी भी उसके अंतःकरण की श्रवण-शक्ति को छीन नहीं सकती । जो विवाहित पुरुष किसी अन्य नारी को जीवन-संगिनी बनाने की बात करता है वह अपनी दुष्टता का परिचय देता है ।

**माधोसिंह** : किन्तु राजपूत अनेक विवाह·····

**दुर्गा** : कर सकता है—लेकिन राजपूत जो कुछ करता है वह उचित ही करता है, यह मान लेना क्या आवश्यक है । फिर मान भी लो, मैं तुम्हारे प्रस्ताव को स्वीकार भी कर लूँ फिर भी मैं अच्छी तरह जानती हूँ, तुम परम्पराओं और रूढ़ियों से विद्रोह करने का साहस नहीं कर सकते । तुम समाज में मुझे वह स्थान नहीं दिला सकते जो तुम्हारी शुद्ध क्षत्रियरक्त का वरदान प्राप्त पत्नी को प्राप्त है । मैं अपने आपको अपमानजनक स्थिति में नहीं डालना चाहती । तुम मेरा पीछा छोड़ दो, माधोसिंह ।

**माधोसिंह** : कोटा के वास्तविक महाराव ज़ालिमसिंह के पुत्र माधोसिंह की आकांक्षा की अवहेलना के परिणाम

केवल तुम्हारे लिए ही नहीं अपितु तुम्हारे पिता झाबुआनरेश के लिए भी बुरे हो सकते हैं।

**दुर्गा :** परिणामों से कायर डरा करते हैं। तुम मुझे पथ-विचलित नहीं कर सकते, माधोसिंह। तुम मुझसे मेरी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं करा सकते।

**माधोसिंह :** तुम मुझे उत्तेजित कर रही हो, दुर्गा।

**दुर्गा :** उत्तेजित होकर तुम क्या कर लोगे ?

**माधोसिंह :** (दुर्गा का हाथ पकड़ते हुए) मैं तुम्हें यहाँ से उठा कर अपने घोड़े पर लादकर ले जा सकता हूँ। चलो मेरे साथ।

**[माधोसिंह दुर्गा को बाहुओं में भरकर उठाना चाहता है। इतने में सहसा गोवर्धन प्रवेश करता है।]**

**गोवर्धन :** **(तलवार खींचता हुआ)** दादाभाई, छोड़ दो इसे, नारी पर अत्याचार करना क्षत्रियों को शोभा नहीं देता।

**माधोसिंह :** गोवर्धन ! मुझे क्षत्रियों का धर्म दासी-पुत्र से नहीं सीखना होगा।

**गोवर्धन :** कौन क्षत्रिय है इसका उत्तर तो केवल तलवार ही दे सकती है। गोवर्धन के शरीर में भी उसी राजपूत का रक्त प्रवाहित है जिसका माधोसिंह के शरीर में। तुम्हें बहुत अभिमान है अपने क्षत्रियत्व पर तो निकालो तलवार !

**माधोसिंह :** (**दुर्गा को छोड़कर तलवार निकालता हुआ**) माधोसिंह अपने मार्ग में आने वाले व्यक्ति को क्षमा नहीं कर सकता, भले ही वह किसी कारण उसका भाई ही हो।

**गोवर्धन :** गोवर्धन भी सत्य के लिए किसी से भी लोहा लेने को प्रस्तुत रहता है। तुम्हारे उन्माद का उपचार करने की शक्ति उसमें है।

**दुर्गा :** शांत गोवर्धन, दुर्गा के लिए तुम दोनों भाइयों को तलवारें उठाने की आवश्यकता नहीं।

**गोवर्धन :** तो क्या तुम इस कापुरुष के कुत्सित प्रस्ताव से सहमत हो ?

**दुर्गा :** नहीं, गोवर्धन, मैं तो इनकी वास्तविक झाँकी पाने के लिए शांत थी—देखना चाहती थी कि ये राजपूत कहानेवाले किस सीमा तक पशु बन सकते हैं। इनके बाहुपाश में इतनी शक्ति नहीं कि ये उसमें मुझे बाँध रख पाते। तलवार मेरे पास भी है और उसका संचालन भी मैं जानती हूँ। समय आने पर उसका प्रयोग कर सकती हूँ। (**तलवार खींचती है**) माधोसिंह, उठाओ तलवार !

**माधोसिंह :** संध्या के डूबते हुए सूर्य की भाँति तुम्हारा रक्त-वर्ण कुपित मुखमण्डल कितना सुन्दर जान पड़ता है।

**दुर्गा :** मैं तेरे रक्त से धरती को लाल कर दूँगी। कापुरुष ! उठा तलवार !

**माधोसिंह :** माधोसिंह, नारी के रक्त से अपने हाथों को लाल नहीं करेगा।

**गोवर्धन :** लेकिन उसके जीवन को एक कभी न बुझनेवाली ज्वाला में झोंक देगा, जिस तरह तुम्हारे और मेरे आदरणीय पिता ने मेरी माँ के साथ किया है।

**दुर्गा :** और जिस तरह मेरे पिता झाबुआनरेश ने मेरी माँ के साथ किया है। तुम कंचन और प्रभुता के ज़ोर पर नारी के जीवन से खिलवाड़ करनेवालो—दुर्गा तुम्हारे जाल में फँसनेवाली नहीं है। उसने अपने हाथों में तलवार इसीलिए पकड़ी है कि तुम्हारे जैसे कापुरुषों से बदला ले।

[**एक सेवक का प्रवेश**]

**सेवक :** राजकुमारी जी!

**दुर्गा :** क्या है?

**सेवक :** महाराज ने आपको और आप दोनों अतिथियों को तुरन्त महल में बुलाया है।

**दुर्गा :** कारण?

**सेवक :** समाचार मिला है कि कोटा के महाराव उम्मीदसिंह जी का स्वर्गवास हो गया है और·····

**माधोसिंह :** और हम दोनों को तुरन्त कोटा जाना होगा। और अब·····

**गोवर्धन :** माधोसिंह और गोवर्धन के जीवन का वास्तविक संघर्ष प्रारम्भ होगा और सचमुच हाड़ौती की भूमि रक्त से लाल होगी।

**माधोसिंह :** गोवर्धन, तो केवल दुर्गा पर ही नहीं, तुम्हारी नज़र कोटा की गद्दी पर भी लगी हुई है। कदाचित समझते हो, पिता जी तुम्हारी माँ के हाथों में खेलनेवाले कठपुतली हैं, पर याद रखो कोटा की गद्दी को तुम्हारी काया भी न छू सकेगी।

**गोवर्धन :** गोवर्धन दासी-पुत्र भले ही हो लेकिन वह नीच नहीं है। वह कोटा के वास्तविक अधिकारी से छल या विद्रोह करके उसकी गद्दी छीनने का स्वप्न नहीं देख सकता। मेरा प्रण है कि मैं कोटा की गद्दी के स्वामी को वास्तविक महाराव बनाऊँगा।

**माधोसिंह :** मूर्ख, अपने पिता से विद्रोह करेगा, जिसकी कृपा से तू महलों में रहता है, बहुमूल्य रत्नाभूषणों से अपने शरीर को सजाता है और न केवल बड़े जागीरदारों और सामंतों के समाज में स्थान पाता है बल्कि कोटा के राजकुमारों का सहचर बनने का गौरव भी तुझे प्राप्त है।

**गोवर्धन :** राजकुमारों का सहचर उनके सम्मान और वास्तविक अधिकारों की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझता है। समझे माधोसिंह।

**माधोसिंह :** (**क्रोधित स्वर में**) गोवर्धन, ईर्षा के उन्माद में अपने बड़े भाई से किस प्रकार बोला जाता है यह भी भूल गया।

**गोवर्धन :** (**हंसकर**) शिष्टाचार सिखानेवाले, माधोसिंह, पहले दर्पण में अपना मुँह देख । जो राजपूत होकर भी स्वामी से विश्वासघात करता है, उस पर क्षत्रियत्व हँसता है । जिसमें राजपूत के गुण नहीं, वह राजपूत वंश में जन्म पाने पर भी राजपूत नहीं हो सकता, वह किसी से सम्मान पाने का अधिकारी नहीं । तुम मुझसे कभी सम्मान नहीं पा सकते, माधोसिंह !

**[माधोसिंह तलवार तानकर गोवर्धन पर आक्रमण करता है । किन्तु विद्युत् गति से दुर्गा तलवार म्यान से निकालकर माधोसिंह की तलवार का वार अपनी तलवार पर झेल लेती है ।]**

**दुर्गा :** माधोसिंह—राजपूत की तलवार भाई का सर काटने के लिए नहीं होती ।

**[नेपथ्य से आवाज़ आती है**—राजकुमारी दुर्गा··· ]

**सेवक :** राजकुमारी जी, महाराज आपको बुला रहे हैं ।

**दुर्गा :** तू चल हम आते हैं ।

**[सेवक का प्रस्थान]**

**दुर्गा :** माधोसिंह, अपनी तलवार को म्यान में करो । अपने कर्त्तव्य को समझो । गोवर्धन, तुम भी विवेक से काम लो । चलो, पिता जी से विदा लेकर आप दोनों को अभी कोटा जाना होगा । संभवतः मैं और पिता जी भी चलें । कोटा के

वीरवंशज हाड़ाओं का सभी राजपूत सम्मान करते हैं। झाबुआनरेश स्वर्गीय महाराव के अंतिम संस्कार एवं महाराव के अभिषेक में सम्मिलित होने अवश्य जावेंगे। चलो, अब हम चलें।

[तीनों का प्रस्थान]

**पट परिवर्त्तन**

## तीसरा दृश्य

**स्थान** : माधोसिंह के महल का एक विशाल कक्ष

**समय** : रात्रि

**[कक्ष बहुमूल्य वस्तुओं से सुसज्जित है। कक्ष के फर्श पर रेशमी जाजम बिछी है। पीछे की दीवार से सटाकर एक कालीन बिछा हुआ है, जिसके बीच में एक मसंद है जिससे टिककर महाराव किशोरसिंह बैठे हुए हैं। वह राजसी पोशाक में हैं। उनकी आयु लगभग चालीस वर्ष है। चेहरे पर राजपूती तेज झलकता है। उनकी तलवार उनकी बगल में रखी हुई है। महाराव के मसंद से ज़रा हटकर दो बाजुओं में दो मसंद हैं। एक के सहारे माधोसिंह बैठा है दूसरा खाली है।]**

**माधोसिंह :** (**आवाज़ लगाता हुआ**) दासी !

[**एक सुन्दर और यौवनमयी दासी का प्रवेश**]

**दासी :** आज्ञा अन्नदाता !

**माधोसिंह :** मदिरा लाओ ।

**दासी :** जो आज्ञा ।

[**दासी का प्रस्थान**]

**महाराव किशोरसिंह :** माधोसिंह, हम मदिरा नहीं पिएँगे ।

**माधोसिंह :** क्यों अन्नदाता, आपके सेवक से कुछ अपराध हुआ है अथवा महाराव मुझ पर अविश्वास करते हैं ।

**किशोरसिंह :** नहीं माधोसिंह, अभी अपराध करने का अवसर तुम्हें नहीं मिला है और न अविश्वास करने की आवश्यकता हम अनुभव करते हैं ।

**माधोसिंह :** तब महाराव ?

**किशोरसिंह :** अभी पूज्यनीय पिता जी की चिता की आग भी ठंडी नहीं हुई और हम अपने आपको मदिरा के नशे में गर्क कर दें ? क्या तुम इसे उचित समझते हो ?

**माधोसिंह :** महाराव, पिता की मृत्यु पर किस पुत्र को शोक नहीं होता ? मेरे लिए भी तो स्वर्गीय महाराव पिता-तुल्य थे । उनके स्वर्गवास का क्या मुझे शोक नहीं है ? किन्तु सच्चे राजपूत स्वजनों के स्वर्गवास पर शोक में नहीं डूबते, तभी तो हमारे यहाँ

नियम है कि जैसे ही गद्दी के गत स्वामी की चिता में आग दी जाती है वैसे ही उसके उत्तराधिकारी का राज्याभिषेक होता है, पूरे धूमधाम और गाजे-बाजे के साथ, सो महाराव शोक में डूबे रहकर स्वाभाविक जीवन से मुँह न मोड़िये।

[**दासी का प्रवेश जो सुराही में मदिरा, दो स्वर्ण-पात्र और एक दूसरी सुराही में पानी लाकर माधोसिंह के निकट रखती है। माधोसिंह दोनों पात्र मदिरा और पानी से भरता है।**]

**माधोसिंह :** (**दासी से**) नर्तकी को भेजो।

[**दासी का प्रस्थान**]

**माधोसिंह :** (**मदिरा से भरा एक पात्र महाराव किशनसिंह की ओर बढ़ाकर**) महाराव, सेवक का आतिथ्य स्वीकार करें।

**केशोरसिंह :** नहीं माधोसिंह, हमें डर लगता है।

**माधोसिंह :** किस बात का ?

**केशोरसिंह :** तुम्हारे हृदय में मेरे लिए अचानक इतना स्नेह कैसे उमड़ आया। हम बचपन से एक साथ पले है। हमारे पिता सदा ही तुम्हारे पिता अर्थात् हमारे नाना जी के हाथ के खिलौने बने रहे, तुम हमारी अपेक्षा अधिक ठाट से सदा रहे, हम तीनों भाई राजकुमार होकर भी वे सुविधाएँ न पा सके जो तुम्हें प्राप्त थीं और तुम सदा ही हम भाइयों को उपेक्षा की नज़र से देखते रहे. किन्तु आज

तुमने हमें आमन्त्रित किया है और इतना आदर प्रकट कर रहे हो, इसके पीछे रहस्य क्या है ?

**माधोसिंह** : महाराव, मेरो बचपन की भूलों को याद कर रहे हैं ।

**किशोरसिंह** : भूलों को नहीं, माधोसिंह, व्यवहार को याद कर रहा हूँ । जब कोई परदेशी अच्छे घोड़े बेचने आता था तो तुम सबसे अच्छा घोड़ा लेने की ज़िद्द करते थे और तुम्हारी ज़िद्द पूरी होती थी, तुम्हारी पोशाक सदा ही हम से अच्छी रही और तुम्हारी इच्छाओं को कभी किसी ने लगाम नहीं लगाई । आज……

**माधोसिंह** : महाराव, मै अपने कृत्यों पर पछताता हूँ । बचपन की बातों को इतनी गम्भीरता से नहीं लेना चाहिए ।

**किशोरसिंह** : पाण्डवों और कौरवों के आख्यान से तुम परिचित हो, माधोसिंह । वे बचपन की ही बातें थीं जो उग्र होकर महाभारत के रूप में प्रकट हुईं । उन बातों ने ही कुरुक्षेत्र के मैदान को रक्त का समुद्र बना दिया, भारत की महान् शक्ति का सर्वनाश किया । हमें भय है कि हमारी पारस्परिक ईर्षा हाड़ावंश का सर्वनाश न करा दे ।

**माधोसिंह** : महाराव ! माधोसिंह दुर्योधन नहीं है और दुर्योधन और माधोसिंह की स्थिति में बहुत अंतर है । महाभारत प्रारम्भ होने के पूर्व दुर्योधन राज्य का

स्वामी था, पाण्डव राह के भिखारी। मैं आपका सेवक मात्र हूँ। आपसे प्रतिस्पर्धा करने का दुस्साहस मैं कैसे कर सकता हूँ। अपने महाराव के प्रति अटूट आस्था को प्रकट करने के लिए ही तो मैंने आपको आज आमन्त्रित किया है। लीजिए, डरिये नहीं, संदेह भी न कीजिए।

**किशोरसिंह :** (**मदिरा पीते हुए**) हम तुम्हारे स्नेह का अपमान नहीं करेंगे। कुछ भी हो, आखिर तुम राजपूत हो। यदि कभी तुम हमारे प्राण लेना भी चाहोगे तो मदिरा अथवा ज़हर को अपना अस्त्र नहीं बनाओगे इसका हमें विश्वास है।

**माधोसिंह :** तो फिर पान कीजिए।

[**किशोरसिंह और माधोसिंह मदिरा के घूँट पीते हैं। नर्तकी संगत करने वाले के साथ प्रवेश करती है।**]

**नर्तकी :** अन्नदाता को नर्तकी प्रणाम करती है और आज्ञा की प्रतीक्षा करती है।

**किशोरसिंह :** किस बात की आज्ञा नर्तकी ?

**नर्तकी :** महाराव का मनोरंजन करने की।

**माधोसिंह :** नर्तकी, महाराव को इसमें क्या आपत्ति हो सकती है। तुम अपना नृत्य और गान आरम्भ करो।

[**संगत वाले अपने वाद्यों सहित बैठते हैं। नर्तकी नाचने के लिए तैयार होती है।**]

**किशोरसिंह :** (**मदिरा का घूँट पीते हुए**) हम देखते हैं, तुम्हारा व्यूह चक्रव्यूह से भी अधिक अबेध्य है ।

**माधोसिंह :** व्यूह कैसा ?

**किशोरसिंह :** मदिरा, सुन्दरी, संगीत इन त्रिशूलों से तुम हमें बेधना चाहते हो ।

**माधोसिंह :** (**मदिरा का घूँट पीते हुए**) राजपूत के हृदय को कुसुम-बाणों से नहीं बेधा जा सकता, महाराव । यह तो कुछ क्षणों का दिल-बहलावा है । शुरू करो, नर्तकी ।

[**नर्तकी गीत गाती और नृत्य करती है । संगत वाले साथ देते हैं ।**]

**नर्तकी :** (**गीत और नृत्य**)

बोल बाँसुरी के अलबेले
बोल गये, रस घोल गये रे ।
जल भरने जमुनातट आई,
राधा ने सुधबुध बिसराई,
बंसी की ध्वनि पड़ी सुनाई,
लज्जा के पग डोल गये रे ।
बोल बाँसुरी के अलबेले,
बोल गये, रस घोल गये रे ।
जैसे नाचे मोर देख घन,
नाच उठे राधा के तनमन,

गूँज उठे मृदु नूपुर छन-छन,
हृदय बिक गया बिना मोल रे।
बोल बाँसुरी के अलबेले,
बोल गये, रस घोल गये रे।

[**नर्तकी के नृत्य-गान के बीच महाराव किशोरसिंह और माधोसिंह मदिरा पीते रहते हैं।**]

**किशोरसिंह** : (**नशे के प्रभाव में**) नर्तकी, हम तुम पर प्रसन्न हैं। एक पात्र तुम्हारे हाथ का भरा हुआ पीना चाहते हैं।

**नर्तकी** : यह मेरा सौभाग्य है अन्नदाता कि महाराव ने मुझे नर्तकी से मधुबाला बनाना चाहा है किन्तु·····

**किशोरसिंह** : किन्तु क्या ?

**नर्तकी** : अन्नदाता, मैं मदिरा को स्पर्श नहीं करती।

**माधोसिंह** : नर्तकी, महाराव की इच्छा की अवहेलना करने का साहस इस हाड़ौती प्रदेश की हवा भी नहीं करती। चंबल की धारा भी महाराव के संकेतों की प्रतीक्षा करती है।

**किशोरसिंह** : माधोसिंह, यह तुम बोल रहे हो या तुम्हारे मस्तिष्क पर सवार यह मदिरा बोल रही है। कोटा के महाराव पिछली दो पीढ़ी से आज्ञा देना भूल गये हैं। वह केवल प्रार्थना कर सकते हैं। नर्तकी, सुनते हैं सुन्दर नारी के हाथों ढाली हुई मदिरा में अधिक नशा होता है। ढालो न अपने हाथ से·····

**नर्तकी** : महाराव, आप बालक की भाँति नादान हैं। आप की आज्ञा न मानकर मैं अपनी आत्मा को दुखी नहीं कर सकती।

**[नर्तकी मदिरा ढालकर देती है]**

**किशोरसिंह** : (**मदिरा पीते हुए**) तुम सचमुच इन्द्रलोक की अप्सरा हो।

**माधोसिंह** : और महाराव इन्द्र हैं।

**किशोरसिंह** : हम नहीं माधोसिंह, वास्तविक इन्द्र तुम हो। हम इन्द्र होते तो हमारे हाथ में वज्र होता और हम दैत्यों का संहार कर पाते।

**माधोसिंह** : महाराव, सम्पूर्ण हाड़ौती प्रान्त में कोई दैत्य नहीं है।

**किशोरसिंह** : हाँ, दैत्य नहीं हैं, लेकिन काले नाग बहुत हैं, देखने में सुन्दर किन्तु उनकी नस-नस में ज़हर है।

**माधोसिंह** : महाराव, सम्भवतः मदिरा के प्रभाव में मनुष्य को भी काला नाग समझ रहे हैं।

**किशोरसिंह** : नहीं माधोसिंह, हम काले नाग को भी मनुष्य समझने की भूल करते रहे हैं। हमारे सिंहासन के चारों तरफ़ काले नाग लिपटे हुए हैं। हम धरती पर पाँव भी नहीं रख सकते। किन्तु हमने सोचा है हम सिंहासन पर बन्दी बनकर नहीं बैठेंगे।

**माधोसिंह** : महाराव ! आपके पाँव लड़खड़ाते हैं—बैठ जाइए।

**[माधोसिंह महाराव किशोरसिंह का हाथ पकड़कर मसंद के सहारे बैठाता है।]**

**नर्तकी** : अब तुम जाओ ।

[**नर्तकी और उसके साजिंदे जाते हैं** ]

**किशोरसिंह** : माधोसिंह, सचमुच हमारे पाँवों में अपने बल पर खड़े होने की शक्ति नहीं है । हमें बैठे रहना पड़ेगा । सदा ही बैठे रहना पड़ेगा ।

**माधोसिंह** : महाराव, मैं आपका बल हूँ । भाला सदा ही हाड़ाओं की ढाल बनकर रहे हैं और रहेंगे ।

**किशोरसिंह** : तुम अभी तक होश में हो । और पियो । पियो हमारी आज्ञा है ।

**माधोसिंह** : आपका भी तो पात्र खाली है ।

[**माधोसिंह अपना और महाराव किशोरसिंह का पात्र भरता है ।**]

**किशोरसिंह** : तुम हमारे खाली पात्र को भर सकते हो किन्तु, खाली हृदय को नहीं ।

**माधोसिंह** : महाराव, माधोसिंह अपने हृदय का रक्त पिलाकर महाराव के खाली हृदय को भरेगा । किन्तु·····

**किशोरसिंह** : किन्तु क्या ?

**माधोसिंह** : किन्तु (**जेब से एक कागज़ निकालकर**) महाराव को इस पर हस्ताक्षर करने होंगे । (**दासी को आवाज लगाता है** ) दासी !

**किशोरसिंह** : हमारे हाथों में कलम पकड़ने की शक्ति नहीं है । हाँ, कहो तो तलवार हम पकड़ सकते हैं ।

[**दासी का प्रवेश** ]

**दासी** : आज्ञा अन्नदाता !

**किशोरसिंह** : तुम नाचना जानती हो। नाचो, आज हम नृत्य देखना चाहते हैं। माधोसिंह, तुम भी नाचो।

**माधोसिंह** : (**दासी से**) कलम-दावात लाओ।

[**दासी का प्रस्थान**]

**किशोरसिंह** : कलम-दवात नहीं। उससे कहो, घुँघरू बाँधकर आवे। हम आज नाच देखना चाहते हैं। (**मदिरा का घूँट पीकर**) हाड़ौती की संपूर्ण नर्तकियों को बुलाओ। माधोसिंह, तुम मृदंग बजाओ।

[**दासी कलम-दवात लाकर रखती है।**]

**माधोसिंह** : इस काग़ज़ पर हस्ताक्षर कीजिए।

**किशोरसिंह** : काग़ज़ ! क्या लिखा है इसमें ?

**माधोसिंह** : महाराव, यह वही संधि-पत्र है जो स्वर्गीय महाराव और अंग्रेज़ों के बीच हुआ था। इसमें एक शर्त बाद में अंग्रेज़ी शासन ने बढ़ाई थी किन्तु हस्ताक्षर करने के पहले महाराव स्वर्ग सिधार गये और संधि-पत्र अधूरा रह गया। कीजिए हस्ताक्षर।

[**किशोरसिंह कलम उठाकर मदिरा के पात्र में डुबाते हैं।**]

**माधोसिंह** : कलम मदिरा के पात्र में नहीं, दवात में डुबाइए। हस्ताक्षर स्याही से किए जाते हैं मदिरा से नहीं।

[**गोवर्धन और पृथ्वीसिंह हाथों में तलवारें लिये हुए प्रवेश करते हैं।**]

**गोवर्धन** : हस्ताक्षर रक्त के अक्षरों में किये जावेंगे, माधोसिंह !

**पृथ्वीसिंह** : राजपूत होकर तुम छल करते हो, माधोसिंह। महाराव को मदिरा पिलाकर उन्हें राजसत्ता से वंचित करने वाले संधि-पत्र पर हस्ताक्षर कराना चाहते हो।

**माधोसिंह** : राजकुमार पृथ्वीसिंह, मैं तो गृह-कलह की आग को बुझाने का यत्न कर रहा हूँ। मेरे पिता स्वर्गीय महाराव के संरक्षक रहे हैं, उनके पिता आपके दादा के संरक्षक थे और स्वाभाविक है कि मैं चाहूँ कि मेरे पिता के बाद मैं वर्त्तमान महाराव का संरक्षक रहूँ। महाराव आनन्दपूर्वक महलों में रहें और राज्य की चिन्ता उन्हें न करनी पड़े।

**क़शोरसिंह** : हाँ, राज-काज की चिन्ता न करनी पड़े। जहाँगीर की तरह वह नशे में गर्क रहे और नूरजहाँ की तरह तुम मुझ से हस्ताक्षर कराया करो। लेकिन माधोसिंह तुम नूरजहाँ की भाँति सुन्दर नहीं हो। तुम गाना नहीं जानते, नाचना नहीं जानते। तुम्हारे हाथों में वह कोमलता नहीं है जो मदिरा में नई जवानी भर दे।

**माधोसिंह** : महाराव, मैं नूरजहाँ बनने का दावा नहीं करता किन्तु अपना न्यायपूर्ण स्थान चाहता हूँ। जब तक मुझे न्यायपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं होगा इस हाड़ौती प्रदेश में शान्ति नहीं होगी।

**गोवर्धन** : तुम्हारा न्यायपूर्ण स्थान तो कालकोठरी है या शमशानभूमि।

**पृथ्वीसिंह** : (**माधोसिंह**) हाड़ाओं को अशान्ति से डराते हो, माधोसिंह। अच्छी बात है जलने दो अशान्ति की ज्वाला। ऐसी ज्वाला से हाड़ा अनेक बार खेले हैं। उठिये महाराव (**मदिरा की सुराही को लात मारकर**) ठोकर मारिये इन विलास-वस्तुओं को, पकड़िये अपनी तलवार।

[**महाराव को उठाकर ले चलता है।**]

**माधोसिंह** : तो महाराव सचमुच चले जाएँगे।

**किशोरसिंह** : क्या करूँ माधोसिंह, ये दो हैं और तुम अकेले।

**माधोसिंह** : मैं अकेला नहीं हूँ महाराव, मेरे साथ अंग्रेज़ों की महान् शक्ति है।

**पृथ्वीसिंह** : विदेशियों के पालतू कुत्ते, तेरे पास अपना मस्तिष्क भी नहीं है। चलिए महाराव।

[**महाराव किशोरसिंह, गोवर्धन और पृथ्वीराज का प्रस्थान**]

**माधोसिंह** : मेरा ऐसा अपमान। मैं भी राजपूत हूँ। कोटा की गद्दी को रक्त के समुद्र में विलीन न कर दूँ तो मेरा नाम माधोसिंह नहीं। मुझे तुरन्त ही इन मूर्खों का प्रबन्ध करना होगा।

[**माधोसिंह का भी प्रस्थान।**]

**पट-परिवर्त्तन**

## चौथा दृश्य

**स्थान :** ज़ालिमसिंह के तंबू के बाहर एक मैदान।

**[दो कुर्सियों पर ज़ालिमसिंह और अंग्रेज़ एजेंट बैठे हैं। बीच में एक गोल मेज़ है, जिस पर कुछ खाने के पदार्थ, एक सुराही मे मदिरा, एक सुराही में पानी और एक प्याला रखा है जिसमें शराब ढाली हुई है।]**

**अंग्रेज़ एजेंट :** मिस्टर ज़ालिमसिंह, टुम को भी पीना होगा।

**ज़ालिमसिंह :** मुझे क्षमा करें। मेरा एक पाँव मरघट में है। पीना-पिलाना तो जवानों का काम है।

**अंग्रेज़ एजेंट :** राजपूट कभी बूढ़ा नही होटा। टुमारा शरीर में बोहुट टाकट है। टुम आज भी केवल कोटा राज पर ही नहीं मारा राजपूटाने पर राज करटा है। टुम बूढ़ा किढर से हुआ।

**ज़ालिम :** अब मुझे आँखों मे भी ठीक दिखाई नहीं देता, अब मैं क्या राजस्थान पर राज करूँगा।

**अंग्रेज़ एजेंट :** अंग्रेज़ सरकार टुमको सारा राजपूटाने का राजा बनाने सकटा है। टुम क्या नहीं समझटा कि अंग्रेज़ों की टाकट क्या है ? **(शराब का घूँट पीता है।)**

**ज़ालिम :** मे अच्छी तरह जानता हूँ कि व्यापारी बनकर आनेवाली इस जाति में वीरता से अधिक समझदारी है। आज वह भारत के आधे से अधिक भाग पर राज कर रही है और मेरा विश्वास है

कि एक दिन अंग्रेज़ों का झण्डा सारे भारत में फहरायेगा।

**अंग्रेज़ एजेंट :** टुम ठीक कहटा ज़ालिमसिंह। लेकिन अंग्रेज़ सारा हिंदुस्टान का हुकूमट नहीं माँगटा। हमने मुग़ल सल्टनट का निशान मिटाया—मराठों की टाकट को टोड़ा। फ्रांसीसियों को हिंदुस्टान में पैर नहीं फैलाने डिया **(शराब पीता है)** बाकी जो राजे-रजवाड़े हैं उन्हें भी मिटा सकटा है—लेकिन·····

**ज़ालिम :** मिटाते क्यों नहीं ?

**अंग्रेज़ एजेंट :** हिंदुस्टान में हुकूमट करने के लिए हमको हिंदुस्टानी लोगों की मदद भी चाहिए। हम हमारा सारा फौज इंग्लैण्ड से नहीं लाने सकटा। हमको टुम जैसे डोस्टों का ज़रूरट है, ज़ालिमसिंह। हम हिंदुस्टानी हाकिम और हिंदुस्टानी फौज के ज़रिए हिंदुस्टान पर राज करना माँगटा है।

**ज़ालिम :** हर समझदार भारतवासी इस बात को जानता है।

**अंग्रेज़ एजेंट :** जानटा है। दूसरे के शासन में रहना बुरा समझा जाटा है, ज़ालिमसिंह। **(शराब का घूंट पीता है।)** फिर भी हिंदुस्टानी हमारा हुकूमट कबूल करटा है।

**ज़ालिम :** यह केवल भाग्य का खेल है।

**अंग्रेज़ एजेंट :** भाग्य का खेल नहीं, ज़ालिमसिंह, हिंदुस्टान सैकड़ों सालों से बर्बादी, लड़ाई-झगड़ा और अशांति का

वातावरण में रहटा चला आया है। अंग्रेज उसे शांटि और बहबूडी डे सकटा है, यह हिंदुस्टान का लोग समझटा है और इसीलिए हमारा साथ डेटा है। अंग्रेज़ नहीं था तो सारा राजा आपस में लड़टा था, खून का नडियाँ बहटा था। अब अंग्रेज़ ने यह लड़ाई-झगड़ा बंद किया। अब परजा चैन से अपना काम-धंडा कर सकटा है। किटना आराम डिया अंग्रेज़ों ने।

**जालिमसिंह :** ज़ालिमसिंह जानता है कि अंग्रेज़ों ने भारत को मौत की शांति दी है।

**अंग्रेज एजेंट :** **(शराब ढालते हुए)** टुम हमसे मज़ाक करटा, ज़ालिमसिंह। हम मौट नहीं भारट को ज़िंदगी डेटा। टुम भी टो हमारा डोस्ट है, ज़ालिमसिंह। क्या हम टुमको मौट देटा है।

**जालिमसिंह :** मर चुकने के बाद ही तो ज़ालिमसिंह अंग्रेज़ का मित्र बना है, मित्र अर्थात् आश्रित।

**अंग्रेज एजेंट :** इसका मटलब, टुमको हमारा डोस्ट बनने का पछटावा है। टब टो टुम हमको कभी भी धोखा डे सकटा।

**जालिमसिंह :** ज़ालिमसिंह अंग्रेज़ों का विरोध नहीं करेगा। आप निश्चिंत रहें। उसने सोच लिया है कि अंग्रेज़ी राज्य रूपी दुर्भाग्य भारत को सहना ही पड़ेगा। जो उसके विरुद्ध मस्तक उठायेगा वह जीवित नहीं

बचेगा। व्यर्थ ही पहाड़ से मस्तक टकराकर जान क्यों गँवाई जावे। ज़ालिमसिंह ने केवल राज्य-शासन ही नहीं चलाया। वह एक बड़ा व्यापारी और एक बड़ा किसान भी है। हाड़ौती प्रदेश में उसके दोहरे जुए के ४,००० हल चलते हैं। गत वर्ष एक करोड़ रुपए का अनाज उसने बेचा है। मराठे, पिंडारी, अंग्रेज़ सभी ने उससे दोस्ती बनाए रखी क्योंकि सबको उससे अपनी सेनाओं के लिए अनाज चाहिए।

**अंग्रेज़ एजेंट :** खेटी और टिजारट करने के लिए शांटी चाहिए और शांटी अंग्रेज़ी हुकूमट ही देने सकटा है, ज़ालिमसिंह।

**ज़ालिमसिंह :** इस समय बात कुछ ऐसी है, इसीलिए मैं राजस्थान के प्रत्येक राजा से कहता हूँ—अंग्रेज़ों से लड़ने का यत्न न करो। अपना मस्तक और मस्तक पर राजमुकुट कायम रखना चाहते हो तो अंग्रेज़ों से संधि करो।

[**माधोसिंह का प्रवेश**]

**माधोसिंह :** पिता जी, मैं गोवर्धन को मौत के घाट उतार दूँगा।

**अंग्रेज़ एजेंट :** ओहो माधोसिंह, तुमारा आँखें लाल है। तुमने शराब पिया। तुम हमारे काम का आदमी है। ज़ालिमसिंह, एक कुर्सी मँगवाइए।

**माधोसिंह :** नहीं, मै पिताजी के सामने कुर्सी पर नहीं बैठ सकता ।

**अंग्रेज एजेंट :** तब पिटा के सामने शराब कैसे पी सकटा । हमको अकेला पीना बुरा लगटा । टुम हमारे साथ पियो ।

**माधोसिंह :** मैं शराब पीने नहीं, अपने भाग्य का फैसला कराने आया हूँ ।

**ज़ालिमसिंह :** बात क्या है, माधो ?

**माधोसिंह :** गोवर्धन के बहकाने से महाराव किशोरसिंह ने संधि-पत्र की नई धारा पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया है ।

**अंग्रेज एजेंट :** इसका मटलब कि वह टुमको अपना संरक्षक मानने से इनकार करटा ।

**माधोसिंह :** हाँ, और वह तो कहते हैं, मैं अंग्रेज़ों का गुलाम नहीं बनना चाहता ।

**अंग्रेज एजेंट :** इटना गुस्टाखी । ज़ालिमसिंह टुम महाराव को समझाओ । माधोसिंह को हम ने वचन डिया है । भले ही महाराव नाम माट्र के वास्टे राजा रहे लेकिन राजकाज इन्ही के हाथ में रहेगा । माधोसिंह का अपमान अंग्रेज़ हुकूमट का अपमान है ।

**ज़ालिमसिंह :** यह हमारा घरेलू मामला है, आप इसकी चिंता न करें ।

**अंग्रेज एजेंट :** नहीं ज़ालिमसिंह, टुम अपने बेटे का डुशमन हो सकटा लेकिन अंग्रेज़ नहीं । माधोसिंह टुम चिंटा

मट करो। अंग्रेज़ों की पूरी टाकट जिसने मराठों का घमण्ड टोड़ा वह महाराव किशोरसिंह का घमण्ड भी टोड़ेगा।

**माधोसिंह :** कोटा के राजमहल में अंग्रेज़ी शासन को समाप्त करने का षड्यंत्र रचा जा रहा है। केवल हाड़ौती प्रदेश ही नहीं बल्कि सारे राजस्थान में और राजस्थान के बाहर भी अंग्रेज़ों के विरुद्ध ये लोग विद्रोह की ज्वाला भड़काना चाहते है।

**अंग्रेज एजेंट :** (**उठकर खड़ा होकर**) हम समझटा, माधोसिंह, हम सब समझटा। हम इस चिनगारी को फैलने नहीं डेगा। हम बगावट फैलानेवालों को मौट के घाट उतार डेगा। ज़रूरट समझेगा टो महाराव किशोरसिंह के सर से राजमुकुट छोनकर टुमारे सर पर रखेगा।

**मालिमसिंह :** (**उठकर**) मै कहता हूँ, आप महाराव को गलत समझते हैं। उनके दिल में अंग्रेज़ों के प्रति असम्मान का भाव ज़रा भी नहीं है। अभी तो आपको राजस्थान के सारे राजाओं से संधियाँ करनी हैं। यदि महाराव के विरुद्ध आपने कुछ किया तो सारे राजस्थान में अंग्रेज़ों के प्रति अविश्वास की लहर फैल जावेगी। जानता हूँ अंग्रेज़ जाति बहुत चतुर है—लेकिन मैंने भी राजनीति में बाल सफेद किए हैं। मेरी प्रार्थना है महाराव के विरुद्ध

कोई भी कदम उठाया तो परिणाम अभीष्ट न होगा ।

**अंग्रेज एजेंट :** हमने अगर महाराव के खिलाफ लड़ाई छेड़ा टो टुम किसका साथ डेगा ।

**ज़ालिमसिंह :** मैं नहीं चाहता कि ऐसा कोई कदम उठाया जावे । माधोसिंह, तुम से भी मेरा आग्रह है कि तुम गृह-कलह की आग न फैलाओ । हमने महाराव का नमक खाया है, किसी भी परिस्थिति में राजपूत अपने स्वामी के विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकता । मैंने स्वर्गीय महाराव को अंग्रेज़ों से संधि करने के लिए इसलिए तैयार किया था कि इसके अतिरिक्त और कोई चारा नही था । मैंने अपने और अपने वंशजों के हितों की रक्षा के लिए संधि-पत्र में कोई शर्त नहीं रखवाई थी । हमारे हित हमारी ईमानदारी से ही सुरक्षित रह सकते हैं, माधोसिंह ।

**अंग्रेज एजेंट :** इसका मटलब टुम अंग्रेज़ों से बेईमानी करना माँगटा । माधोसिंह, इस बूढ़े का दिमाग़ खराब हो गया है । टुम हमारे साथ आओ । हम इस मसले पर टुम से अलग में विचार करना माँगटा । ज़ालिमसिंह, टुम से भी हम कहटा, टुम सोचकर डेखो । एक तरफ़ टुमारा महाराव है, डूसरी टरफ अंग्रेज़ी हुकूमट । टुम ने हमारा बोहट मडड न किया होटा तो हमारा मुमीबट बोहट बढ़ जाटा ।

हम इसका इनाम तुम को और तुमारे पुत्र माधोसिंह को डेना माँगटा। महाराव को नई संधि पर हस्ताक्षर करना होगा। अंग्रेज़ का डिया हुआ वचन खाली नहीं जा सकटा। आओ, माधोसिंह हमारा साथ आओ।

[माधोसिंह और अंग्रेज़ एजेंट का प्रस्थान।]

**ालिमसिंह :** हे भगवान, अब क्या होगा। जीवन के चौथे प्रहर में ज़ालिमसिंह की सफ़ेद चादर में दाग लगेगा। अंग्रेज़ों का हित तो भारत के कोने-कोने में गृह-कलह फैलाने में ही है। अपनी इसी कला से वे भारत में सर्वशक्तिमान बन गये हैं। उनकी इच्छा के विरुद्ध जाने में भी तो सर्वनाश है। जाऊँ महाराव के पास, कदाचित उन्हें ही सधि-पत्र पर हस्ताक्षर करने को राज़ी कर पाऊँ।

[ज़ालिमसिंह का प्रस्थान।]

**पट-परिवर्त्तन**

## पाँचवाँ दृश्य

**समय :** संध्या

**स्थान :** चंबल तट पर एक शिला

**[चंबल का तट दिखाई नहीं देता। सिर्फ नदी का चट्टानों से टकराने का शब्द सुनाई देता है। आकाश में बादल घिरे हुए हैं उसका आभास**

**बादलों की गरज से मिलता है। दुर्गा और गोवर्धन शिला पर बैठे हैं। दोनों सैनिक वेश में हैं। दोनों के हाथों में तलवारें हैं।]**

**गोवर्धन** : दुर्गा, आकाश में मेघ घिरे हैं।

**[बादलों की गरज सुनाई देती है ]**

**दुर्गा** : हाँ, और गरजकर शीघ्र ही घोर वर्षा होने की सूचना दे रहे हैं।

**गोवर्धन** : हाँ, और शीघ्र ही हाड़ौती प्रदेश में रक्त की वर्षा होने की सूचना भी दे रहे हैं। चंबल की तूफ़ानी धारा शीघ्र ही रक्त से लाल हो जावेगी। एक भयानक तूफ़ान उठने वाला है।

**दुर्गा** : तूफ़ान तो तूफ़ान होता है, गोवर्धन। उसके परिणाम की कोई पूर्व कल्पना नहीं की जा सकती। सोचकर देखो, इस तूफ़ान को शांत नहीं किया जा सकता।

**गोवर्धन** : डरती हो, दुर्गा ?

**दुर्गा** : नहीं, मैं डरना नहीं जानती।

**गोवर्धन** : तुम्हारे अंतःकरण में तूफ़ान नहीं उठता है।

**दुर्गा** : उठता है, प्रबल वेग से उठता है।

**गोवर्धन** : तब हमें अंतर के तूफ़ान को शांत करने के लिए बाहर भी तूफ़ान उठाना होगा। हम जीवित हैं इसका प्रमाण देना होगा।

**दुर्गा** : तुम्हारे पिता जी तुम्हें प्यार करते हैं गोवर्धन ?

**गोवर्धन** : कदाचित माधोसिंह को जितना करते हैं उससे भी अधिक।

**दुर्गा** : तब वह क्यों चाहते है कि उनके बाद माधोसिंह हो उनका स्थान ग्रहण कर महाराव का संरक्षक बने। योग्यता और पराक्रम में क्या तुम उससे कम हो ?

**गोवर्धन** : माधोसिंह शिकार के मैदानों में, कुश्ती के अखाड़े में और बुद्धि के क्षेत्र में तुम्हारे गोवर्धन से कभी न जीत पाया।

**दुर्गा** : और शारीरिक सौदर्य में भी। सचमुच तुम देवपुत्र-से जान पड़ते हो।

**गोवर्धन** : और तुम शौर्य में दुर्गा, बुद्धि में सरस्वती और सौंदर्य में रतिरानी जान पड़ती हो।

**दुर्गा** : किन्तु हमारी माताएँ शुद्ध क्षत्रिय रक्त से नहीं हैं यही हमारी अयोग्यता है। तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता माधोसिंह मेरे रूप-यौवन के प्रशंसक हैं और मुझे उपलब्ध करना चाहते हैं।

**गोवर्धन** : तो तुम उसकी आकांक्षा पूरी होने दो।

**दुर्गा** : क्यों ?

**गोवर्धन** : क्योंकि उसके पास धन है, वैभव है और कोटा राज्य की वास्तविक राजसत्ता भी उसके हाथों में होगी। तुम रत्नाभूषणों से सुसज्जित होगी, हर प्रकार की विलास-सामग्री तुम्हें उपलब्ध होगी। मैं तुम्हें क्या दे पाऊँगा, दुर्गा।

**दुर्गा** : गोवर्धन, नारी क्या प्रेम का व्यापार करती है ?

**गोवर्धन :** व्यापार तो नहीं करती, लेकिन जान-बूझकर अभावों के अग्निकुण्ड में भी नहीं कूदती।

**दुर्गा :** तब मुझे कहना पड़ेगा कि तुमने नारी को समझा ही नहीं। नारी केवल देना जानती है—लेना नहीं। मैं तुम्हारे साथ अंगारों पर चलना पसंद करूँगी, अभावों को गले लगाऊँगी। प्रत्येक संकट में तुम्हारे साथ रहूँगी और तुम पर होने वाले प्रहारों को अपने ऊपर झेलूँगी।

**गोवर्धन :** फिर भी मुझे भय है कि तुम मुझे पा न सकोगी। मेरा जीवन तूफ़ान में बहने वाली नौका है, वह कभी किनारे पर लगेगी इसका कोई विश्वास नहीं। तुम अपने जीवन को नष्ट न करो, दुर्गा !

**दुर्गा :** जीवन भर मरते रहने से सदुद्देश्य के लिए संघर्ष करते हुए मर जाना कहीं अच्छा है गोवर्धन। जीने के लिए तुम्हारी माँ भी जी रही है और मेरी माँ भी। बाह्य दृष्टि से देखा जाए तो वे अपनी पूर्व-स्थिति से अधिक अच्छी हैं—लेकिन राजा या सामंत की हृदयेश्वरी बनने से क्या उन्हें समाज में मानवोचित अधिकार प्राप्त है ? नहीं। यदि उनकी आत्मा जीवित है तो निश्चय ही वे अपनी भूल पर पछताती हैं, यह मानना पड़ेगा।

**गोवर्धन :** किन्तु वे अपनी स्थिति से असंतुष्ट हैं ऐसा तो नहीं जान पड़ता। मेरी माँ तो मुझ से कहती हैं—

'गोवर्धन तुम्हें अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहिए। जिसने तुम्हें जन्म दिया है उसके उपकारों को तुम्हें नहीं भूलना चाहिए। मान लो, मेरा तुम्हारे वर्त्तमान पिता से प्रेम न हुआ होता और स्व-जाति के ही किसी व्यक्ति से विवाह होता तब मेरे पुत्र को क्या यह वैभव प्राप्त होता जो आज तुम्हें प्राप्त है। तुम्हें तो उनका कृतज्ञ होना चाहिए।'

**दुर्गा :** गोवर्धन, तुम्हारी माता जी का यह कथन अस्वाभाविक नहीं। नारी भूल से भी जिसे स्वीकार कर लेती है उसके प्रति अपनी आस्था को अटूट रखती है। वह उसकी बुराइयों की ओर से आंखें बन्द कर लेती है। वह उसके अन्यायों को भूल जाती है। किन्तु गोवर्धन, अन्यायों और छल की शिकार नारियों की संतानें अपनी माताओं और स्वयं अपने ऊपर होने वाले अन्याय को चुपचाप नहीं सह सकतीं। उन्हें अपने अन्यायी पिता से भी विद्रोह करना पड़ता है। गोवर्धन, हमारा संघर्ष अपने जन्मदाताओं से नहीं, समाज की परम्पराओं से है। यदि तुम्हारे पिता या मेरे पिता इन परम्पराओं से लड़ने का साहस नहीं कर सकते तो हमें तो अपने जन्मदाताओं से लड़ना ही पड़ेगा।

**[पृथ्वीसिंह का प्रवेश। वह भी सैनिक वेश में है।**

**हाथ में तलवार लिये हुए है। पृथ्वीसिंह को आते देखकर गोवर्धन और दुर्गा खड़े हो जाते हैं।]**

**गोवर्धन** : महाराव किशोरसिंह जी के लघुभ्राता राजकुमार पृथ्वीसिंह को नमस्कार करो, दुर्गा !

**दुर्गा** : **(हाथ जोड़ते हुए)** नमस्कार राजकुमार। मैंने आपकी प्रशंसा बहुत सुनी है। आज दर्शन पाकर कृतार्थ हुई।

**पृथ्वीसिंह** : मैंने भी गोवर्धन से तुम्हारे सम्बन्ध में बहुत कुछ सुना है, दुर्गा। तुम्हारी स्थिति से भी परिचित हूँ। दुर्गा, हम जिस अनुष्ठान में संलग्न हैं उसमें तुम्हारी भी आवश्यकता है। हमारे विरुद्ध बहुत बड़ी-बड़ी शक्तियाँ हैं। महाराव कहने के लिए कोटा के अधिपति हैं लेकिन अंग्रेज़ों, ज़ालिमसिंह और माधोसिंह का जाल बहुत ज़बर्दस्त है।

**गोवर्धन** : क्या पिताजी भी।

**पृथ्वीसिंह** : हाँ, वे भी अंग्रेज़-एजेंट के दबाव में आकर महाराव को समझाने आए थे कि संधि की नई शर्त पर हस्ताक्षर कर दें किन्तु महाराव अपनी बात पर दृढ़ रहे। उन्होंने ज़ालिमसिंह से पूछा, "अंग्रेज़ हमारे शासन में हस्तक्षेप करनेवाले कौन होते हैं। आपने और माधोसिंह ने मराठों और पिंडारियों के विरुद्ध अंग्रेज़ों की सहायता की इसका पुरस्कार वह आपको या आपके पुत्रों को देना चाहते हैं तो अपने

अधिकृत इलाकों में से आप लोगों को जागीर दे दें। वे हाड़ाओं के रक्त से अर्जित प्रभुसत्ता आप लोगों को सौंपने का कोई अधिकार नहीं रखते।"

**दुर्गा** : धन्य, महाराव के मुख से ऐसे ही शब्द शोभा देते हैं।

**पृथ्वीसिंह** : उसके पश्चात् ज़ालिमसिंह जी बोले, महाराव, स्वर्गीय महाराव आयु में मुझसे छोटे नहीं थे, फिर भी वह मेरी संरक्षकता मानते रहे। आपके दादा श्री भी मेरे पिता की संरक्षकता को स्वीकार करते रहे। अब यह पद परम्परागत बन गया है। कोटा का राज-काज झालावंश के ही हाथ में रहना चाहिए।

**दुर्गा** : अधिकार का नशा गहरा होता है राजकुमार।

**गोवर्धन** : वह सरलता से छोड़ा भी नहीं जा सकता।

**पृथ्वीसिंह** : किन्तु हाड़ाओं की नसों में बहनेवाला रक्त सूख नहीं गया है। महाराव ने कहा—'नाना जी, आपके पिता जी और आपको सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप जो अधिकार दिए गए थे—वे आपके पुत्र को भी दिए जावें इसका हम कोई कारण नहीं देखते। आप अंग्रेज़ों की तोपों की छाया में हम से हस्ताक्षर कराना चाहते हैं। ये सात समुद्र पार से आए फिरंगी हमारे भाग्यविधाता बनने का अधिकार नहीं रखते।'

**दुर्गा** : निश्चय ही यदि भारतवासी प्रारम्भ में इन

व्यापारियों के लक्ष को समझ पाते और सम्मिलित यत्न करते तो क्या भारत की एक गज़ भूमि पर भी इनका आधिपत्य हो पाता ।

**पृथ्वीसिंह** : कभी नहीं । और अफसोस इस बात का है कि हम अब भी नहीं चेत रहे । आज भी ज़ालिमसिंह और माधोसिंह जैसे लोग मीर ज़ाफर की भाँति अंग्रेज़ों के हथियार बने हुए हैं । ये हमारे आपसी संघर्षों में बंदरबाँट करने पंच बनकर दौड़ पड़ते हैं और सब कुछ स्वयं हड़प जाते हैं ।

**दुर्गा** : फिर महाराव ने क्या निश्चय किया है ?

**पृथ्वीसिंह** : राजपूत आन के लिए लड़ना अपना कर्त्तव्य समझता है, दुर्गा । ज़ालिमसिंह ने डराया कि हमारी सेना अंग्रेज़ अफसरों के अधीन है ।

**दुर्गा** : अंग्रेज़ अफसरों के अधीन ?

**पृथ्वीसिंह** : हाँ, ज़ालिमसिंह जी ने अपनी स्थिति मज़बूत रखने के लिए बहुत पहले सेना के हाड़ा अधिकारियों के स्थान पर अंग्रेज़ों को नियुक्त कर दिया था । कहने को उन्होंने कहा था, 'मराठों से हमें सदा ही भय बना रहता है, इसलिए अंग्रेज़ अधिकारियों के अधीन एक सुशिक्षित सेना हमें रखनी चाहिए ।' स्वर्गीय महाराव इनके झाँसे में आ गये । आज हमारे ही धन से पली सेना का प्रयोग ये हम पर ही करना चाहते हैं ।

**गोवर्धन :** किंतु न्याय हमारे साथ है। महाराव और कोटा की गद्दी के प्रति हमारे सैनिकों में आस्था है।

**दुर्गा :** और जनबल भी हमारे साथ है। मैंने आपके हाड़ौती प्रदेश के अनेक गाँव देखे हैं। वहाँ के लोगों के विचार जाने हैं। ज़ालिमसिंह जी ने जिस प्रकार किसानों को बेदखल कर उनके खेतों पर अपने हल चलवा दिए हैं उससे उनमें घोर असंतोष है। जो पहले अपनी भूमि के स्वामी थे वह आज ज़ालिमसिंह जी के नौकर हैं। वे किसी भी घड़ी हल छोड़कर शस्त्र उठाने को तैयार हैं।

**पृथ्वीसिंह :** यह मैं जानता हूँ – लेकिन अंग्रेज़ों की महान् शक्ति, ज़ालिमसिंह जी की बुद्धि और माधोसिंह की नीचता का सामना करके विजय पाना सरल नहीं है, दुर्गा। किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि हम अन्याय के आगे दब जावें। हमें संघर्ष करना होगा। दुर्गा, तुम्हें भी हमारे इस यज्ञ में भाग लेना होगा। तुम दोनों मेरे साथ चलो, इसी समय महाराव से सलाह करके हमें अपना कार्य-क्रम निश्चित करना चाहिए।

**[सब का प्रस्थान।]**

**पट-परिवर्त्तन**

## छठा दृश्य

**स्थान** : कोटा की राजसभा

**समय** : दिन

[**महाराव किशोरसिंह सिंहासन पर विराजमान है। उनके पीछे एक सेवक छत्र पकड़े खड़ा है। महाराव के एक तरफ़ पृथ्वीसिंह और दूसरी तरफ गोवर्धन आसीन है। गोवर्धन की बगल में सर्फ़ अली बैठा है। पृथ्वीसिंह की बगल में मिर्ज़ा मोहम्मद अली बेग बैठा है। हाड़ौती के अन्य सामन्त भी बैठे हुए है। क़िले के बाहर से तोपों की आवाज़ें सुनाई देती हैं।**]

**महाराव** : हमारे वीर सामन्तों और साथियो, आप कोटा के बाहर गूँजनेवाली तोपों की आवाज़ें सुन रहे हैं।

**सर्फ़ अली** : हम इन तोपों का मुँह बंद करने को तैयार हैं।

**पृथ्वीसिंह** : हाड़ाओं ने पहली बार तोपों की आवाज़ नहीं सुनी है।

**गोवर्धन** : सम्पूर्ण हाड़ौती प्रदेश महाराव की आज्ञा पर अपने प्राण न्यौछावर करने को प्रस्तुत है।

**एक सामन्त** : महाराव, हमारे धैर्य की सीमा समाप्त हो चुकी है अत्याचारी ज़ालिमसिंह ने हाड़ाओं की राजगद्दी का सम्मान करनेवाले हाड़ौती के सामन्तों को एक-एक कर जिस प्रकार नष्ट किया है, जिस प्रकार उनमें से अनेक को दर-दर का भिखारी

बना दिया है इसे आप जानते हैं। उन्होंने कोटा की राजगद्दी पर अपना एकाधिकार स्थापित करने के लिए ही ऐसा किया है। आज स्थिति यह है कि किसी-किसी सामन्त को अपनी छोटी-सी सेना की टुकड़ी रखने का भी अधिकार नहीं है। पहला युग होता तो हाड़ौती के सामन्त हज़ारों की संख्या में वीर योद्धा महाराव की पताका के नीचे युद्ध करने को एकत्रित कर देते।

**मो० अली :** महाराव, इसमें शक नहीं कि पिछले पचास सालों से लगातार ज़ालिमसिंह अपनी ताकत बढ़ाने में लगे है। उन्होंने हर उस शख्स को, जिसके दिल में महाराव और कोटा की गद्दी की इज़्ज़त है, मिट्टी में मिला डाला है और खूबी यह है कि जो भी जुल्म किया वह महाराव का नाम लेकर। हर वफादार आदमी को महाराव की निगाह में गद्दार ठहराने में वह कामयाब रहे। हाड़ौती के लोग इस ज़ालिम के जुल्मों के जुए के नीचे सिसक रहे हैं, महाराव।

**गोवर्धन :** महाराव, मिर्ज़ा मोहम्मद अली ठीक ही कहते हैं। मैं तो उनका पुत्र हूँ और मुझ पर उनकी अपार कृपा और स्नेह भी है, लेकिन जिस प्रकार उन्होंने हाड़ौती की ग़रीब प्रजा को चूसा है उससे मेरे प्राण उनके प्रति विद्रोह कर उठे हैं। इसमें

संदेह नहीं कि मेरे पिता एक वीर सैनिक, एक कुशल सेनापति, एक चतुर राजनीतिज्ञ, एक सफल व्यापारी और एक चालाक दुनियादार हैं लेकिन खेद की बात है कि उन्होंने अपनी प्रतिभा का प्रयोग सही दिशा में न कर केवल स्वार्थ-साधन में किया है। उन्होंने सपूर्ण हाड़ौती प्रदेश की धन-संपत्ति, अनाज और राजसत्ता पर अपना अनधिकार स्वामित्व स्थापित कर रखा है। हाड़ौती की प्रजा इस अत्याचार से मुक्ति चाहती है।

**पृथ्वीसिंह** : हम ज़ालिमसिंह जी की स्वार्थपरता को किसी प्रकार सहन भी कर लेते लेकिन अयोग्य, नीच और विलासी माधोसिंह ने अंग्रेज़ों का सहारा लेकर हमारी प्रभुसत्ता पर आक्रमण किया है और अंग्रेज़ी सेना और तोपों के सहारे हम से अनुचित संधि पर हस्ताक्षर कराना चाहता है। हम राजपूत हैं—पृथ्वीराज चौहान के वंशज हैं, उनके वंशज हैं जिन्होंने सदा न्याय का साथ दिया है और सदा ही प्राणों पर खेलकर न्याय की रक्षा की है। आज मातृभूमि का सम्मान हम से बलिदान माँगता है। हम अपने कर्त्तव्य से पीछे नहीं हटेंगे।

**महाराव** : बंधुओ, आज हमारे सामने अत्यन्त कठिन समय प्रस्तुत है। हम जानते हैं कि हम न्याय पर हैं।

अंग्रेज़ों ने स्वर्गीय पिताश्री महाराव उम्मीदसिंह जी से संधि की थी जिसमें लिखा है कि महाराव और उनके वंशज अपने प्रदेश के प्रभुसत्ताप्राप्त स्वामी रहेंगे। हम और कुछ नहीं चाहते। हम तो इस संधि का अक्षरशः पालन चाहते हैं। हम किसी दबाव में आकर अंग्रेज़ों की और उनके कृपापात्र माधोसिंह की कठपुतली बनकर नहीं रहना चाहते। इतिहास साक्षी है, हाड़ावंश ने मुग़ल सम्राट् जहाँगीर, शाहजहाँ आदि सम्राटों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन किया था। शान्ति और स्नेह के अवतार दारा शिकोह की ढाल बनकर हाड़ा राजकुमारों ने अपने प्राण दिए थे—हम वफ़ादारी करना जानते हैं। हम अंग्रेज़ों के भी मित्र बन सकते हैं—लेकिन उनकी तोपों से डरकर उनकी आधीनता स्वीकार नहीं करेंगे।

**सर्फ़ अली :** महाराव के राज में हिन्दू और मुसलमान सभी मज़हबों और जाति के लोग सुख-चैन से भाईचारे के साथ रहते आए हैं। हिन्दू और मुसलमानों में भाईचारा कायम करने का जो नेक काम शहन-शाह अकबर ने शुरू किया था हाड़ा महाराव उस पर आज तक कायम रहे हैं। हम मुसलमानों पर महाराव की कितनी मुहब्बत है, हम पर कितना यक़ीन है यह तो इसी से साबित है कि मुझे राज-

पल्टन का सिपहसालार बनाया गया था। हमारे साथी मिर्ज़ा मोहम्मद अली महाराव के ख़ास वकील हैं। हम लोगों ने महाराव का नमक खाया है और आज इस नमक का बदला चुकाने का वक्त आया है तो क्या हम पीछे हट जावेंगे ?

**मो० अली :** भाई सर्फ़अली ठीक ही फ़रमाते हैं। हालाँकि आज ज़ालिमसिंह जी की चालबाज़ियों ने हमें कमज़ोर कर दिया है, फिर भी कुर्बानी देने का माद्दा हम में है। यह हिन्दुस्तान सिर्फ़ हिन्दुओं का ही नहीं मुसलमानों का भी है। इस ज़मीन के अन्न से हम पले हैं, इसकी धूल में हम खेले हैं। यह हमारी माँ है और इसकी आज़ादी के लिए जान देना हमारा फ़र्ज़ है।

**महाराव :** हमें विश्वास है कि हमारे देशवासी इस संकट काल में हमारा साथ देंगे। हम इस समय विकट परिस्थिति में है। अंग्रेज़ी एवं ज़ालिमसिंह की सेना ने किले को घेर लिया है। उनकी तोपों की आवाजें आसमान के पर्दे फाड़ रही हैं। हम लोग इस किले के भीतर बहुत थोड़े हैं। कुल ५०० सैनिक हमारे पास हैं। उस पर सबसे भयानक बात यह है कि किले में आनेवाला पानी भी शत्रुओं के षड्यंत्र ने बन्द कर दिया है।

**सर्फ़ अली :** हाँ, इसी तरह आगरा के किले में जानेवाला

पानी औरंगजेब ने बन्द करके नेकदिल बादशाह शाहजहाँ को किले के फाटक खोलने के लिए मजबूर कर दिया था।

**पृथ्वीसिंह :** हमें भी किले का फाटक खोलना पड़ेगा लेकिन हम सम्राट् शाहजहाँ की तरह बूढ़े और अपंग नहीं हैं। हमारे हाथों में तलवारें हैं, हमारी नसों में जवानी का जोश है, हम शत्रुओं की सेना को काटते हुए, तोपों का मुँह बन्द करते हुए, निकल जाएँगे या मदा के लिए रणभूमि में सो जावेंगे।

**गोवर्धन :** किले में बन्द रहने से तो हमें भूख और प्यास से तड़पकर सिर्फ जान देने का ही सौभ्य प्राप्त हो सकता है। हाँ, यदि फाटक खोलकर शत्रु से लोहा लेकर यदि हम चंबल पार जा सकें तो हमें विश्वास है हाड़ौती का प्रत्येक व्यक्ति महाराव के आवाहन पर प्राण न्योछावर करने को प्रस्तुत हो जावेगा।

**महाराव :** इसी बात का निश्चय करने के लिए आज हमने आप साथियों को यहाँ बुलाया है। हमारे सामने जीवन-मरण का प्रश्न है। हम अपने लिए आप लोगों के प्राणों से खेलना नहीं चाहते। आप चाहें तो हम अपने मस्तक से राजमुकुट उतारकर माधोसिंह के मस्तक पर रख दें। हमारे लिए हाड़ौती में रक्त की नदियाँ बहें, चंबल और पार्वती का

जल रक्त से लाल हो, हज़ारों घरबार बर्बाद हों, यह हम नहीं चाहते—लेकिन हम से यह भी नहीं होगा कि हम माधोसिंह के दम और अंग्रेज़ों की धमकी के आगे आत्म-समर्पण करदें। हम अकेले ही युद्ध-भूमि में जाकर अपने भाग्य का निर्णय कर लेंगे।

**मो० अली** : महाराव अपनी रैयत पर यक़ीन रखें। हमारी रगों में जब तक एक बूँद भी खून है, हम महाराव की ढाल बनकर रहेंगे। हाड़ौती का हर आदमी महाराव को अपने वालिद की तरह मानता है। क्या हुआ जो ज़ालिमसिंह की साज़िश से आज हमारी फौज भी हमारे साथ नहीं है, लेकिन हमारी फ़ौज तो सारा हाड़ौती प्रदेश है। अंग्रेज़ अपनी तोपों के ज़ोर से हाड़ौती के आम लोगों के दिलों से महाराव के लिए वफ़ादारी का जज़बा तो नहीं छीन सकते। सारे हाड़ौती को मरघट बनाए बिना अंग्रेज़ महाराव को संधि-पत्र पर दस्तख़त करने को राज़ी नहीं कर सकते। महाराव, हमें किले के फाटक खोलने ही होंगे।

**महाराव** : तो भगवान श्रीकृष्ण हमारे रक्षक रहें। उन्होंने अर्जुन को जिस गीता का ज्ञान देकर संग्राम करने को प्रस्तुत किया था वही गीता का ज्ञान आज हमें भी कर्त्तव्य के पथ पर जाने के लिए

प्रेरित कर रहा है। ज़ालिमसिंह जी हमारे नाना हैं, हमारा एक भाई किशनसिंह भी नादानी में आकर आज उनके साथ है। अनेक राजपूत योद्धा ज़ालिमसिंह और माधोसिंह के साथ हैं। आज हमारे ही लोगों ने हम पर शस्त्र उठाए हैं। शस्त्र का उत्तर तो शस्त्र से देना पड़ेगा। आज भाई की तलवार भाई पर उठेगी।

**पृथ्वीसिंह :** जो अपनी मातृभूमि के प्रति विश्वासघात करता है—जो मनुष्यता के विरुद्ध आचरण करता है वह चाहे हमारा पिता ही हो हम उससे **विद्रोह** करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। बहुत दिनों से हाड़ाओं की तलवारों ने रक्त का स्वाद नहीं लिया था। वह अपनी म्यानों में बेचैन है। महाराव, अब फाटक खोलकर शत्रु से लोहा लेने की आज्ञा दीजिए।

**महाराव :** हाँ, हम केवल आज्ञा ही नहीं देते, बल्कि शत्रु से लोहा लेने में हम सब से आगे रहेंगे। भगवान हमारा रक्षक है।

**गोवर्धन :** महाराव किशोरसिंह की जय !

**सब :** महाराव किशोरसिंह की जय !!

**पट परिवर्त्तन**

# दूसरा अंक

## पहला दृश्य

**समय** : प्रभात

**स्थान** : एक खेत

**[दुर्गा किसानों की भीड़ में भाषण दे रही है। वह सैनिक वेश में है और हाथ में कोटा राज्य का नारंगी रंग का झण्डा लिये हुए है।]**

**दुर्गा** : हाड़ौती के वीर और उदार किसानो, क्या तुम जानते हो कि कोटा का वास्तविक राजा कौन है ?

**एक किसान** : महाराव किशोरसिंह जी।

**दुर्गा** : लेकिन, मान लो कोई व्यक्ति महाराव किशोरसिंह जी को पदच्युत कर उनकी गद्दी पर बैठना चाहे तो तुम लोग क्या करोगे ?

**दूसरा किसान** : हम उसे राजा नहीं मानेंगे, हम उसे राज-कर नहीं देंगे।

**दुर्गा** : लेकिन क्या तुम उसे राजगद्दी पर बैठ जाने दोगे ?

**पहला किसान** : जिसे महाराव नहीं रोक पावेंगे उसे हम कैसे रोक सकते हैं ? महाराव के पास सेना है, तोपें हैं, तलवारें हैं और सेनाएँ एकत्रित करने के लिए धन है।

**दुर्गा** : खेद की बात है कि तुम लोग वास्तविक स्थिति से परिचित नहीं। महाराव की सेना पर आज महाराव का अधिकार नहीं। वह आज विश्वासघाती ज़ालिमसिंह और उनके पुत्र माधोसिंह के हाथों में हैं। कृष्णभण्डार[1] भी इन लोगों के ही अधिकार में है। नई सेना खड़ी करने के लिए पर्याप्त धन भी महाराव के *पास नहीं।*

**तीसरा किसान** : किन्तु ज़ालिमसिंह जी तो महाराव के नाना हैं, राज्य के शुभचिंतक हैं। त्यागी और स्वार्थहीन व्यक्ति हैं। अब वह महल में न रहकर शहर के बाहर तंबू में रहते हैं। ऐसे महात्मा के प्रति अविश्वास की बातें हम नहीं सुनना चाहते।

**दूसरा किसान** : रहने दे पटेल, तुझे ज़ालिमसिंह महात्मा नज़र आता है क्योंकि उसकी जासूसी करने के पुरस्कार में तुझे आठ हलों की ज़मीन मिली है। उसका महात्मापन हम से पूछ जिनकी

१. कोटा राज्य का खजाना कृष्णभण्डार कहलाता है। महारावों की धारणा रही है कि राज्य का सम्पूर्ण कोष भगवान कृष्ण का है और वे तो केवल उनके खजांची हैं स्वामी नहीं। व्यक्तिगत रूप से उनका उस पर कोई अधिकार नहीं।

ज़मीनें किसी न किसी बहाने से छीनकर उसने निजी जोत में ले ली हैं। आज उसके अन्नागारों में करोड़ों रुपयों का अन्न भरा हुआ है। हाड़ौती प्रदेश की आधी से अधिक जोती जा सकने वाली ज़मीन आज उसकी खुदकाश्त में है। जो आदमी गरीब किसानों की भूमि और जीविका हड़पने से नहीं चूका *उसे राजगद्दी का लोभ हो गया हो तो आश्चर्य* की बात ही क्या है।

**तीसरा किसान** : मैं कहता हूँ तुम लोग इस औरत के कहने में आकर ज़ालिमसिंह जी से वैर न मोल लो। उनके हाथ बहुत लम्बे हैं। हाड़ौती प्रदेश में एक पत्ता भी उनकी आज्ञा के बिना नहीं खड़क सकता। सौ दीवारों की ओट में भी तुम बातें करो उनके पास पहुँच जाती हैं। यदि उनके विरुद्ध कुछ भी षड्यंत्र तुम लोगों ने किया तो परिणाम भयानक होगा। तुम्हें दर-दर का भिखारी बन जाना पड़ेगा।

**दुर्गा** : प्यारे किसानो, इस पटेल की बातों से विचलित न होइए। इसमें संदेह नहीं कि ज़ालिमसिंह ने ५० वर्षों से कोटा राज्य के स्वर्गीय महाराव को अपने हाथ का खिलौना बनाकर रखा। वह बहुत चतुर है। उसने अपनी चतुराई से

हाड़ौती के सभी बड़े-बड़े सामन्तों को शक्तिहीन और सम्पत्तिहीन कर दिया ताकि किसी दिन सामन्तों की सहायता से जिनका महाराव के साथ रक्त का सम्बन्ध है, महाराव उसके चंगुल से छुट न जावें। उसने नये-नये क़ानून बनाकर किसानों को अपनी भूमि से वंचित कर चाकरी करने पर बाध्य कर दिया। उसने गुप्तचरों का जाल बिछाकर हर उस व्यक्ति को बंदीगृह में डाल दिया जिसने उसके विरुद्ध ज़रा सी भी आवाज़ उठायी। वह ऐसा चतुर है कि जब मराठों का सितारा तेज़ था तो उनका मित्र बनकर उनकी सेनाओं के लिए अन्न देकर उनका कृपापात्र बना रहा और अब अंग्रेज़ों का बोल-बाला देखकर उनका सहारा लिया है।

**तीसरा किसान** : तो तुम समझती हो, ऐसे व्यक्ति से लोहा लेने में हम लोगों की खैर है ?

**दुर्गा** : खैर है या नहीं, यह तो मैं अभी नहीं कह सकती। मैं तो केवल यह कहती हूँ कि अन्याय अब सीमा को पार कर गया है। यदि हम में मनुष्यता जीवित है तो हमें अन्याय से लड़ने के लिए प्रस्तुत होना चाहिए। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि ज़ालिमसिंह ने कोटा के किले पर

घेरा डाल रखा है। अंग्रेज़ी सेना भी उनके साथ है। उनकी तोपें आग उगल रही हैं। शत्रुओं ने किले में पानी जाना तक रोक दिया है। महाराव और उनके साथियों के प्राण संकट में हैं।

**पहला किसान :** लेकिन हम क्या कर सकते हैं? अंग्रेज़ों की तोपों का सामना हम निश्शस्त्र किसान कैसे कर सकते हैं?

**दुर्गा :** अपने पराक्रम से। तुम लोगों को संगठित होना होगा। तुम लोग भले ही किसान हो लेकिन तुम लोगों में से अधिकांश तलवार चलाना जानते हैं। तलवारें भी तुम्हारे पास हैं। समय मिलने पर तोपें भी तुम बना सकते हो। पिंडारियों और मराठों के बहुत से तोपची जो अंग्रेज़ों के कारण आज बेकार हो गये हैं और जो जंगलों में मुँह छुपाये फिरते हैं, हम उन्हें अपना शौर्य प्रदर्शित करने के लिए फिर से रण-क्षेत्र में ला सकते हैं। हम में यदि अन्याय से लड़ने की दृढ़ भावना जागृत हो जावे तो कोई कारण नहीं कि हम हाड़ौती प्रदेश को ज़ालिमसिंह और माधोसिंह जैसे दुष्टों से मुक्त न कर पावें और अंग्रेज़ों की दासता से न बचा पावें।

**दूसरा किसान** : देवि, यहाँ भी शत्रु के गुप्तचर मौजूद हैं। आपको खुलेआम ऐसी बातें नहीं करनी चाहिएँ।

**दुर्गा** : स्वाधीनता के पुजारियों को गुप्तचरों का भय दिखाना व्यर्थ है। भाइयो, मैं तो सर पर कफ़न बाँधकर निकली हूँ। मैं राजमहलों में पली हूँ, और कष्टों मे मेरा परिचय नहीं है, लेकिन जिस समय देश पर विपत्ति के बादल घिरे हों उस समय सुख-विलास में डूबे रहना कायरता है—नीचता है। इसलिए मैंने अंगारों पर चलने का निश्चय किया है। मै मौत को गले लगाने अपने महल से निकली हूँ। मौत से कायर ही डरते हैं। तुम लोगों में से अनेक राजपूत हैं, अनेक हाड़ा हैं। जो राजपूत नहीं भी हैं वे भी वीर हृदय रखते हैं। स्वाधीनता किसे प्यारी नहीं ? दासता को कौन गले लगाना चाहता है ? कोई नहीं। परिंदे भी पिंजरे में रहना स्वीकार नहीं करते। अंग्रेज़ों की दासता की जंजीरों में जकड़े जाने से तो मर जाना कहीं अधिक श्रेष्ठ है। स्वाधीनता की लड़ाइयाँ गुप्त मार्गों से नहीं लड़ी जातीं। मैं गुप्तचरों से नहीं डरती। स्वाधीनता की लड़ाई तो खुली लड़ाई है—और हमारा सबसे बड़ा बल बलिदान की प्रबल इच्छा है।

**पहला किसान** : निश्चय ही, देवी। हम आपकी आज्ञा पर आग में कूदने को भी प्रस्तुत हैं। महाराव हमें प्राणों से अधिक प्यारे हैं। राजा को हम ईश्वर का अंश मानते हैं और उसके लिए प्राण न्यौछावर करने को तैयार हैं।

**दुर्गा** : किन्तु, प्रश्न राजा को बचाने का नहीं है। कोई राजा राम की भाँति आदर्श मानव भी हो सकता है तो कोई राजा रावण की भाँति राक्षस भी। मूल प्रश्न तो अन्याय के विरुद्ध लड़ने का है। अपनी स्वाधीनता की रक्षा करने का है। अंग्रेज़ों ने धीरे-धीरे भारत के बड़े भाग पर अधिकार कर लिया। राजाओं की आपसी लड़ाई का लाभ उठाकर उन्होंने एक के बाद एक राजा का राज्य छीन लिया और दुख की बात है कि प्रजा ने अंग्रेज़ी राज के जुए को चुपचाप अपने कन्धों पर रख लिया।

**तीसरा किसान** : तो तुम समझती हो हम अंग्रेज़ी राज के जुए से बच सकेंगे ?

**दुर्गा** : क्यों नहीं ? प्रजा यदि ठान ले तो कोई भी विदेशी हम पर शासन नहीं कर सकता। प्रजा अगर संगठित होकर खड़ी हो जावे तो उसकी हुँकार मात्र से शासक का कलेजा काँप जावे। कुछ हज़ार या लाख दो लाख सेना से अंग्रेज़

भारत पर राज जमाए नहीं रह सकते। फिर अंग्रेज़ों की सेना के सारे सैनिक अंग्रेज़ तो नहीं हैं। उनकी अधिकांश सेना तो भारतीयों की है। हम ही लोगों के भाई-बन्धु कुछ चाँदी के टुकड़ों पर बिककर स्वाधीनता के लिए लड़ने-वालों के रक्त से अपने हाथ रंग रहे हैं और अपने देश को अपने ही हाथों से पराधीनता की बेड़ियाँ पहना रहे हैं।

**दूसरा किसान :** लेकिन छोटे से हाड़ौती प्रदेश की प्रजा क्या कर सकती है ?

**दुर्गा :** एक छोटी सी चिनगारी महाज्वाला में परिवर्त्तित हो सकती है। एक बार पराधीनता के प्रति देश के किसी एक कोने से जनसाधारण में विद्रोह की भावना प्रस्फुटित होने की देर है वह हिमालय पर्वत से कन्याकुमारी तक फैल सकती है। अभी तक अंग्रेज़ों से जो लड़ाइयाँ हुईं वे राजाओं के राजमुकुट बचाने के लिए हुईं, देश के जनसाधारण ने अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए तो अभी लड़ाई लड़ी ही नहीं। उसका श्रीगणेश हाड़ौती से होना चाहिए।

**पहला किसान :** इसका अर्थ हुआ कि हम महाराव के लिए लड़ाई नहीं लड़ेंगे ?

**दुर्गा :** महाराव इस समय हाड़ौती प्रदेश की प्रजा के

प्रतिनिधि हैं। उनका अनिष्ट हाड़ौती प्रदेश का अनिष्ट है। उनका पराधीन होना सम्पूर्ण हाड़ौती प्रदेश का पराधीन होना है।

**तीसरा किसान :** महाराव भविष्य में प्रजापालक ही सिद्ध होंगे इसका क्या प्रमाण है ?

**दुर्गा :** इसका पहला प्रमाण यही है कि वह स्वाधीनता के प्रेमी हैं। अंग्रेज़ों से संधि करके और ज़ालिम-सिंह और माधोसिंह के हाथ में राजसत्ता सौंप कर वह सुखविलास का जीवन बिता सकते हैं— लेकिन नहीं वह अपने और अपने प्रदेश के सम्मान को बट्टा नहीं लगाना चाहते। वह जानते हैं कि कदाचित उन्हें अपने प्राणों से भी हाथ धोना पड़े लेकिन वह अपने प्रण पर अटल हैं और फिर मान लो, विजय पाने पर महाराव प्रजा-पीड़क ही सिद्ध हों, तो जो प्रजा उन्हें अंग्रेज़ों से बचा सकती है वह उनके मस्तक से भी राजमुकुट छीन सकती है। राजा तो प्रजा की इच्छा से ही राजगद्दी पर बैठा रह सकता है।

**दूसरा किसान :** तब हमें करना क्या होगा ?

**दुर्गा :** अंग्रेज़ों से युद्ध करना होगा। यहाँ से दल बाँधकर अभी आस-पास के गाँवों में जाना होगा। हमें अपनी एक सेना खड़ी करनी होगी।

जिनके पास तलवारें हैं वे तलवारें ले आवें, जिनके पास घोड़े हैं वे अपने घोड़े लावें, जो जितना धन दे सकता है वह उतना धन दे, जो जितना अनाज दे सकता है वह अनाज दे। पहले तो हमें कोटा के किले पर आक्रमण करनेवाली सेना से लोहा लेकर महाराव को गढ़ से मुक्त कराना है, उसके पश्चात् एक लम्बी लड़ाई लड़नी है। बलिदानों के रक्त से रंगित पथ पर चलना है। बोलो, तुम लोग तैयार हो।

**अनेक आवाजें** : हम तैयार हैं।

**दुर्गा** : बोलो, हाड़ोती प्रदेश की जय !

**अनेक आवाजें** : हाड़ौती प्रदेश की जय !

**दुर्गा** : तब आओ, मेरे साथ समर-गीत गाते हुए चलो।

**सब** : (**गीत गाते हैं** )

मातृभूमि करती आह्वान,
करो युद्ध के लिए प्रयाण।

रिपुओं के निर्दय दल आए,
हैं संकट के बादल छाए,
पर तुम क्यों मन में सकुचाए,
करो रक्त-गंगा में स्नान।
मातृभूमि करती आह्वान।
करो युद्ध के लिए प्रयाण॥

ओ स्वतंत्रता के दीवानो।
पागल प्राणों में प्रण ठानो।
अतुलित बल-पौरुष पहचानो।
गाओ सब मिल रण के गान।
मातृभूमि करती आह्वान।
करो युद्ध के लिए प्रयाण॥
यम के प्राण कँपानेवालो,
हे रण के मद में मतवालो,
आज देश का मान बचा लो।
बढ़े चलो बनकर तूफ़ान।
मातृभूमि करती आह्वान।
करो युद्ध के लिए प्रयाण॥

७१

**[सब का गाते-गाते प्रस्थान।]**

**पट परिवर्त्तन**

## दूसरा दृश्य

**स्थान :** कोटा के गढ़ के बाहर रणक्षेत्र

**समय :** प्रभात

**[जालिमसिंह और माधवसिंह सैनिक वेश में प्रवेश करते हैं। नैपथ्य में से आवाज़ें सुनायी देती हैं। 'जय ब्रजनाथ', 'श्रीजी की जय', 'सुदर्शनधारी भगवान् कृष्ण की जय', 'कसारि गोवर्धन गिरिधारी की जय', 'हाड़ानरेश**

**महाराव किशोरसिंह की जय'। नेपथ्य से तोपों के चलने की आवाज़ें भी निरंतर सुनायी देती रहती हैं।]**

**माधोसिंह** : पिता जी, महाराव ने क़िले का मुख्य द्वार खुलवा दिया और वह अपने साथियों सहित केसरिया बाना धारण किए मरणाव्रत लेकर हम से लोहा लेने बढ़ रहे हैं।

**जालिमसिंह** : माधोसिंह, इसके अतिरिक्त तुम महाराव से क्या आशा करते थे ?

**माधोसिंह** : किन्तु हमारी तोपें भी आग उगल रही हैं। हमारी तोपों के सम्मुख ये थोड़े से हाड़ा योद्धा कितनी देर टिक सकेंगे ? देखते-देखते ये सभी दीवाने धराशायी हो जावेंगे।

**जालिमसिंह** : माधोसिंह, मेरी बूढ़ी आँखें भली भाँति देख नहीं सकतीं। तुम मुझे बताओ हाड़ा सेना के हरावल में कौन है ?

**माधोसिंह** : पिता जी, सब से आगे स्वयं महाराव किशोर-सिंह जी हैं। उनके दक्षिणपार्श्व में राजकुमार पृथ्वीसिंह और वामपार्श्व में गोवर्धन है। निश्चय जानिए पिता जी आज इनमें से कोई भी जीवित नहीं बचेगा।

**जालिमसिंह** : और तुम इनके मरण की सम्भावना से प्रसन्न हो। किन्तु मेरे जीवित रहते ऐसा नहीं होने पावेगा।

**माधोसिंह :** क्यों, क्या गोवर्धन के प्रति आपकी ममता जागृत हुई है। जो पुत्र पिता के विरुद्ध शस्त्र पकड़ता है क्या वह क्षमा का पात्र है।

**जालिमसिंह :** एक पिता को अपने पुत्र के प्राणांत की संभावना से विचलित हो उठना सर्वथा स्वभाविक है। किन्तु गोवर्धन से अधिक चिन्ता मुझे महाराव की है। उन्हें भी मैंने गोद में खिलाया है, बेटा। इसके अतिरिक्त तुम जानते हो हाड़ा राजवंश का नमक हमारी रग-रग में समाया हुआ है। हमें उनके रक्त से अपने हाथ रंगने का पाप नहीं करना चाहिए। यह राजपूत धर्म के विरुद्ध है।

**माधोसिंह :** किन्तु पिता जी, आपके साहस, पराक्रम और चातुर्य से ही हाड़ाओं की राजगद्दी ५० वर्षों के आँधी-तूफ़ानों में सुरक्षित रह सकी है। महाराव को झालाओं का उपकार मानना चाहिए।

**जालिमसिंह :** बेटा, उपकार कैसा ? मै तो महाराव का चाकर था। चाकर ने अपना कर्त्तव्य किया। तुम्हें क्या पता नहीं। तुम्हारे प्रपितामह केवल पच्चीस झालाओं को लेकर कोटा के वर्तमान महाराव के पितामह की सेवा में आए थे। उन्हें संसार में कहीं सर छुपाने को स्थान न

था। न उनके पास धन था, न ज़मीन। उनके वक्ष में केवल एक राजपूत का हृदय धड़कता था और हाथों में तलवार थी। महाराव किशोरसिंह के पितामह ने—कोटा के उस समय के महाराव ने—उन्हें आश्रय दिया और उन्हीं की कृपा का फल है कि आज तुम राजस्थान के सबसे अधिक धनवान व्यक्ति के पुत्र हो। तुम्हारे पिता के इंगित पर केवल कोटा की राजनीति ही संचालित नहीं होती बल्कि राजस्थान के सभी छत्रपति आज उससे मार्ग-दर्शन चाहते हैं।

**माधोसिंह :** पिता जी, सम्पूर्ण राजस्थान चाहे आप पर आस्था रखता हो किन्तु कोटा के महाराव आपका विश्वास नहीं करते। वह हम से घृणा करते हैं, हमें शत्रु मानते हैं और आज वह हमें राह के भिखारी बना देना चाहते हैं। हम उन पर दया नहीं कर सकते। मैं महाराव की मृत्यु के मूल्य पर भी अपने अधिकारों की रक्षा करूँगा। आपकी महाराव के प्रति ऐसी ही आस्था थी और दासी-पुत्र गोवर्धन यदि आपको·····

**झालिमसिंह :** चुप रहो माधोसिंह, तुम चाहे जो कुछ करो तुम गोवर्धन की माँ का अपमान नहीं करने

पाओगे। तुम्हारा पिता आज जीवित है तो गोवर्धन की माँ के कारण ही। उसने अपने प्राण संकट में डालकर मेरे प्राणों की रक्षा की थी। जब हाड़ा सामन्तों के षड्यंत्र ने मेरे प्राण लगभग ले ही लिये थे उस समय जिसे तुम दासी कहकर अपमानित करते हो, उस महान् नारी ने मेरे प्राणों की रक्षा की थी। मैं उसके उपकार से कभी उऋण नहीं हो सकता।

**माधोसिंह :** तो जान पड़ता है उसी महानारी की आज्ञा से आप भीतर ही भीतर शत्रु से मिले हुए हैं।

**ज़ालिमसिंह :** नहीं माधोसिंह, मैं परिस्थितियों का शिकार हूँ। मैं जानता हूँ, न्याय और सत्य महाराव के साथ है लेकिन फिर भी आज मैं उनके पक्ष में खड़ा नहीं हो सकता। जिस प्रकार भीष्म को कौरवों का साथ देना पड़ा था उसी प्रकार आज मैं अंग्रेज़ों के पक्ष में हूँ। माधोसिंह और गोवर्धन मेरी दो आँखें हैं। महाराव मेरा हृदय हैं। मैं तीनों में से किसी का अनिष्ट नहीं चाहता। मेरे लिए बहुत बड़ा संकट उपस्थित है। मेरा बस चलता तो मैं तुम्हें इस गृह-कलह का सूत्रपात नहीं करने देता, लेकिन तुम्हारे प्राणों में जो अधिकार-लिप्सा की ज्वाला

प्रज्वलित हुई है उसे अंग्रेज़ों ने फूँक मार-मार कर प्रज्वलित किया है। वह उसे कभी शांत न होने देंगे। उन्होंने भारत में जगह-जगह गृह-कलह उपस्थित कर अपना उल्लू सीधा किया है। वही खेल अब वह राजस्थान में खेलना चाह रहे हैं। इसका सूत्रपात उन्होंने कोटा से किया है और तुम्हें अपना हथियार बनाया है।

**माधोसिंह** : किन्तु आप स्वयं ही तो कहते थे एक दिन सारे भारत पर अंग्रेज़ों का प्रभुत्व होगा। उनके राज्य-विस्तार को रोकने का कोई उपाय नहीं। जो राजा-रईस अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखना चाहते हैं उन्हें उनका मित्र बनना ही पड़ेगा।

**ज़ालिमसिंह** : हाँ, यह तो सूर्य के प्रकाश की भाँति उजागर है और यही कारण है कि स्वर्गीय महाराव को मैंने अंग्रेज़ों से संधि करने के लिए राज़ी किया था। तुमने यदि अपने अधिकार का प्रश्न खड़ा न किया होता तो यह अंग्रेज़ों की आँधी कोटा राज्य पर से शान्तिपूर्वक गुज़र जाती, किन्तु भाग्य में तो कुछ और ही लिखा था।

**[नेपथ्य में 'जय ब्रजनाथ', 'सुदर्शन चक्रधारी भगवान् कृष्ण की जय', 'महाराव किशोरसिंह की जय' के नारे तेज़ होते हैं।]**

**माधोसिंह :** महाराव अपने साथियों सहित हमारी तोपों की मार के बहुत निकट पहुँच गये हैं।

**जालिमसिंह :** तब तो हमें विलम्ब नहीं करना चाहिए। माधोसिंह, तुम जाओ और तोपचियों को तोपें चलाने से रोको। तुम्हें तुम्हारे अधिकार चाहिएँ, संरक्षक का पद चाहिए न कि महाराव के प्राण। रोको बेटा, यह अनर्थ रोको। राजपूत होकर भी क्या तुम राजपूतों के स्वभाव को नहीं समझते। महाराव से तोपों के भय से तुम कुछ भी करा सकने में समर्थ नहीं हो सकते।

**माधोसिंह :** किन्तु अब हमारे पास उपाय भी क्या है? महाराव तो क्रोध से पागल हो रहे हैं। हम युद्ध को रोकना भी चाहेंगे तब भी वह तो युद्ध नहीं रोकेंगे। फिर अंग्रेज़ एजेंट क्या हमें युद्ध रोकने देंगे। पिता जी यह युद्ध की ज्वाला नहीं रुकेगी। यह भड़केगी और महाराव के साथ सभी हाड़ाओं को भस्मसात् करके छोड़ेगी।

**जालिमसिंह :** नहीं, नहीं, ऐसा नहीं होने पावेगा। मुझे अब भी विश्वास है कि महाराव मेरे स्नेह का आदर करेंगे। मुझ पर विश्वास करेंगे। मैं उनके चरणों पर गिरकर क्षमा माँग लूँगा। राजपूत जितना वीर और रोषमय होता है उतना ही क्षमाशील भी। इस समय तो हमारा कर्त्तव्य

महाराव और उनके प्राणों की रक्षा करना है। बेटा, अंध उन्माद का नाम राजनीति नहीं है। तुम जो चाहते हो, अंग्रेज़ जो चाहते हैं, वह महाराव को मानना ही पड़ेगा, लेकिन इस को मनवाने के लिए राजपूतों के रक्त से हाड़ौती की धरती को रंगने की आवश्यकता नहीं। माधोसिंह, तुम मुझे तोपचियों के पास ले चलो। मैं स्वयं जाकर तोपें दागने से बन्द कर दूँगा।

[अंग्रेज़ एजेंट का प्रवेश]

**अंग्रेज़ एजेंट :** ज़ालिमसिंह, तुम्हारा महाराव कैसा दीवाना है। हम ने सोचा था कि हम किले में पानी का जाना बंड कर डेगा टो वह हठियार डाल डेगा—लेकिन वह टो किले का फाटक खोलकर लड़ मरने पर आमाडा हो गया। वह हमारी टोपों से ज़रा भी नहीं डरटा। अब टो इन लोगों को टोप से उड़ाना होगा। अभी टक हम ने टोपचियों से कहा महाराव पर टोप का निशाना न मारो, लेकिन अब टो वह लोग बहोट नजडीक आगया। अगर अब उनको बचाया टो हमारा टोप छीन लेगा। अब हम उनको नहीं बचा सकटा, ज़ालिमसिंह।

**ज़ालिमसिंह :** लेकिन, महाराव के प्राण लेने का अर्थ सम्पूर्ण

राजस्थान को अंग्रेज़ों का शत्रु बना लेना है। राजस्थान भर में अंग्रेज़ों के विरुद्ध भयंकर घृणा का तूफ़ान उठ खड़ा होगा। अंग्रेज़, जो राजस्थान के राजाओं को अपना मित्र बनाने का, अपना सहायक और समर्थक बनाने का स्वप्न देख रहे हैं वह धूल में मिल जाएगा।

**अंग्रेज एजेंट** : हम समझटा ज़ालिमसिंह, लेकिन इस बखट हमारा अंग्रेज़ कौम का इज्ज़ट का सवाल है। हमको हमारा हुकूमट से हिडायट है कि महाराव को जान से न मारा जाए, हाँ, उनके साठियों पर रहम न किया जाए। पर अब किया क्या जावे। महाराव अपनी छोटी सी सेना के सब से आगे हैं। आँधी की टरह वह बढ़टा चला आटा है। उनको अपनी जान की ज़रा भी चिटा नहीं।

**ज़ालिमसिंह** : लेकिन हमें तो उनकी जान की चिन्ता करनी होगी। हमें उनके मार्ग से अपनी सेना हटा लेनी होगी।

**माधोसिंह** : इसका अर्थ हुआ हमें हार स्वीकार करनी होगी।

**ज़ालिमसिंह** : माधोसिंह, तुम राजपूतों के युद्ध की परिभाषा की बात करते हो जो युद्ध का तुरन्त ही परिणाम निकाल लेना चाहते हैं, जो प्राण ले

लेते हैं या दे देते हैं, जो पीठ दिखाने से मृत्यु को गले लगाना श्रेयस्कर समझते हैं, जो सिंह की भाँति तीर की तरह ही आगे बढ़ते हैं, जो आक्रमणकारी की पीठ में छुरा नहीं भोंकते। अंग्रेज़ों की युद्ध-नीति इसके विपरीत है। वे अंतिम परिणाम पर दृष्टि रखते हैं। आवश्यकता पड़ने पर कदम पीछे हटाने में अपना अपमान नहीं समझते। वे लड़ाइयाँ हारते हैं, हिम्मत नहीं हारते और शत्रु को थकाकर परास्त कर देते हैं।

**माधोसिंह :** जिस भाँति मराठे मुग़लों से लड़े थे।

**अंग्रेज़ एजेंट :** लेकिन उन मराठों को भी हम से हार खाना पड़ा।

**ज़ालिमसिंह :** हाँ, क्योंकि उनकी शक्ति असंगठित रही। एक दिन शिवाजी ने सारे भारत को एक मानकर स्वाधीनता का दीपक जलाया था लेकिन उनके उत्तराधिकारियों ने भारत पर मराठा राज्य स्थापित करने का स्वप्न देखा। उन्होंने राजपूतों का सहयोग प्राप्त करने का यत्न न कर उन्हें अपना दास बनाने का यत्न किया। वह अपनी ही लालसा की ज्वाला में जल मरे।

[**नैपथ्य में 'ब्रजनाथ की जय', 'सुदर्शन चक्रधारी गिरिधारी की जय', 'महाराव**

**किशोरसिंह की जय, के नारे और भी तेज होते हैं।]**

**अंग्रेज एजेंट :** महाराव हमारी सेना के बहोट पास आगया है। हमें जल्डी ही कुछ फैसला कर डालना होगा।

**जालिमसिंह :** मेरी सम्मति में हमें अपनी सेना तुरन्त हटा लेनी चाहिए। जब महाराव चंबल के पार चले जावें तो हम गढ़ पर अधिकार कर लें। इस समय उनके अदम्य उन्माद को रोका नहीं जा सकता। हम महाराव को पराजित तो कर सकते हैं लेकिन उनके मन को नही बदल सकते उसके लिए और भी शान्त वातावरण की आवश्यकता है।

**अंग्रेज एजेंट :** अच्छी बाट है। माधोसिंह, तुम अपनी सेना को हटाओ, हम भो अपनी फौज को घेरा उठा लेने को बोलटा है लेकिन जालिमसिंह, यह लड़ाई बंड नहीं होगा। तुम्हारे कहने से हम एक बार महाराव को मौका डेटा है।

**[सब का प्रस्थान।]**

**पट परिवर्त्तन**

## तीसरा दृश्य

**स्थान** : कोटा से छः मील दक्षिण में स्थित महाराव का रंगवारी महल

**समय** : दिन

**[महाराव किशोरसिंह पृथ्वीसिंह, गोवर्धन, मिर्ज़ा मुहम्मद अली, सर्फअली तथा कुछ अन्य हाड़ा सामन्त राजसभा में यथास्थान आसीन हैं। एक दास महाराव के पीछे छत्र लिये खड़ा है और दोनों तरफ़ दो दासियाँ चँवर झल रही हैं।]**

**किशोरसिंह** : आज हमें स्वाभिमान और स्वाधीनता की रक्षा के लिए कोटा का दुर्ग छोड़ देना पड़ा है और यहाँ रंगवारी में अपनी राजधानी स्थापित करनी पड़ी है। आप जानते हैं राजपूत को अपनी बापौती छोड़ते हुए कितनी आत्मवेदना होती है। हमें दुर्ग को छोड़ने का बहुत अफ़सोस है।

**एक सामन्त** : महाराव आत्मसम्मान रखने के लिए राजपूतों को प्रायः ऐसी मर्मपीड़ा सहनी ही पड़ती है। महाराणा प्रताप का उदाहरण हमारे सामने है। उन्हें भी राजधानी को त्यागकर वन-प्रदेश की शरण लेनी पड़ी थी। सम्राट् अकबर जैसे शक्तिशाली और चतुर शत्रु से जीवन भर

संघर्ष करना पड़ा था। जब तक उनके शरीर में श्वास रहा उन्होंने शत्रु के आगे मस्तक नहीं झुकाया।

**पृथ्वीसिंह** : मेवाड़ के सीसोदिया राजवंश की भाँति ही हाड़ा भी स्वाधीनता-प्रेम में किसी से कम नहीं हैं। हम भी प्राणों की आहुति देकर कोटा राज्य के सम्मान की रक्षा करेंगे।

**गोवर्धन** : महाराव, सत्य और न्याय हमारे साथ है। हाड़ौती की प्रजा महाराव के लिए सर्वस्व बलिदान करने को प्रस्तुत है। मुझे विश्वास है महाराव एक दिन फिर कोटा दुर्ग का उद्धार करेंगे जिस प्रकार महाराणा हमीरसिंह ने चित्तौड़ दुर्ग का किया था।

**[सरा सामन्त** : हमारी नसों में वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान और परम् पराक्रमी छत्रसाल हाड़ा जैसे वीर पुरुषों का रक्त बहता है। हम अन्याय को किसी प्रकार सहन नहीं करेंगे।

**सर्फ़ अली** : महाराव, ये अंग्रेज़ हिन्दू और मुसलमान दोनों कौमों के दुश्मन हैं। इन्होंने मुग़ल बादशाह की ताकत खत्म की, बंगाल की नवाबी को मिटाया, मराठों को मिट्टी में मिलाया और अब इन्होंने राजपूतों पर नज़र डाली है। हम सभी ने इस खतरे को पहचाना होता तो अंग्रेज़ यहाँ पैर कैसे फैला पाते ?

**मोहम्मद अली :** सम्राट् अकबर के समय से हाड़ाओं और मुग़लों का मेल रहा है। हाड़ाओं ने अपनी तलवार के ज़ोर पर मुग़ल बादशाहत को बढ़ाने और मज़बूत बनाने में हाथ बटाया है, क्योंकि वह जानते थे, सारे हिन्दुस्तान का एक झण्डे के नीचे होना ज़रूरी है। जब तक मुग़ल बादशाह यह समझते रहे कि किसी भी क़ौम का दिल दुखाना इंसानियत के खिलाफ़ है तब तक हिन्दू और मुसलमान दूध और पानी की तरह मिले रहे। जहाँ इस अमूल में फ़र्क आया वहीं दोनों के दिल फट गये। नतीजा यह हुआ कि मुग़ल बादशाहत की आलीशान इमारत खण्डहर हो गयी। महाराव, नेक दिल दाराशिकोह का साथ देते हुए छत्रसाल हाड़ा और कोटा और बूँदी के कितने ही शहज़ादों ने और बहादुर सिपाहियों ने उज्जैन और धौलपुर की लड़ाइयों में बहादुरी से लड़ते हुए जान कुरबान कर दी। खानदान का खानदान दोस्ती का फ़र्ज़ अदा करते हुए मर मिटा। इसे क्या हम भूल सकते हैं। महाराव, मेरी नसों में भी मुग़ल खून बहता है। अगर मैं आपके किसी काम आ सका तो मेरे जन्नतनशीं बुजुर्गों को खुशी होगी।

**किशोरसिंह :** आप सभी साथियों के कथन से हमें बहुत उत्साह प्राप्त हुआ, किन्तु हमें हमारे मार्ग की कठिनाइयों को नहीं भूलना चाहिए। हमारे शत्रु की शक्ति हम से कई गुना अधिक है। जिस राजगद्दी को हम त्यागकर आए हैं उसे कभी प्राप्त भी कर सकेंगे, इसमें मुझे संदेह है। हम केवल अन्याय का विरोध कर सकते हैं, किन्तु उस पर विजय भी पा सकते हैं, यह संदेहजनक है। कोटा का महाराव भले ही स्वाभिमान और आन की रक्षा के लिए वन-वन भटके और अंत में प्राणों की आहुति दे डाले लेकिन आप सब किस लिए अपने सुखों का त्याग करें।

**पृथ्वीसिंह :** जिस आन का प्रश्न आपके लिए है, वही मेरे लिए भी। आप बड़े भाई हैं, इसलिए गद्दी के स्वामी हैं, किन्तु हाड़ा राजवंश के सम्मान की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति देना मैं भी अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। आप जानते हैं मैं बड़ी से बड़ी विपत्तियों से नहीं डरता। बरसात के दिनों में जब चंबल में भयंकर बाढ़ आती है, मैंने उसे पार किया है। मैंने ज़मीन पर रहकर सिंह को सामने से ललकारकर तलवार से उसका शिकार किया है। यह शरीर एक न

एक दिन मिट्टी में मिलेगा फिर मौत या कष्टों से डरना क्या ? मैं कायरता का कलंक अपने मस्तक पर नहीं लगने दूँगा। यदि आपने अंग्रेज़ों की अनुचित शर्तों को स्वीकार करते हुए संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किए तो मैं तो आपसे भी विद्रोह कर दूँगा।

**गोवर्धन :** महाराव, यद्यपि मेरे शरीर में भी राजपूत रक्त है—लेकिन शायद उतनी मात्रा में नहीं जितना आपके और साथियों में क्योंकि मेरी माँ ऊँचे समाज की नहीं। मुझे सच पूछो तो अंग्रेज़ों से मिलकर आप जैसे ऊँची जाति वालों से प्रतिशोध लेना चाहिए, लेकिन महाराव, आपने और राजकुमार पृथ्वीसिंह ने मुझ पर जो स्नेह की निरंतर वर्षा की है, उससे मेरी प्रतिशोध-भावना संयत हो गयी है। पराए अपशकुन के लिए मैं अपनी नाक नहीं कटा सकता। मेरे देश की कुछ परम्पराएँ अपमान-जनक हैं, केवल इसीलिए मैं देश का शत्रु नहीं बन सकता। मैं अपने देश को अंग्रेज़ों का दास नहीं बनने देना चाहता। इसमें संदेह नहीं कि व्यक्तिगत रूप से मुझे माधोसिंह पर क्रोध है और केवल उसे अधिकार-वंचित रखने के लिए मैं आपके साथ हुआ था—लेकिन अब तो बात

ही बदल गयी है। अब माधोसिंह, गोवर्धन और महाराव का प्रश्न नहीं रहा—अब तो देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न हमारे सामने है।

**[ज़ालिमसिंह का प्रवेश]**

**ज़ालिमसिंह** : हाँ, देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न हमारे सामने है, लेकिन अंधे उन्माद से यह प्रश्न हल नहीं होगा गोवर्धन !

**[महाराव तथा सभी अपने आसनों से उठ खड़े होते हैं।]**

**किशोरसिंह** : कौन, नाना जी ?

**ज़ालिमसिंह** : महाराव, सेवक ज़ालिमसिंह चरणों में प्रणाम करता है।

**[ज़ालिमसिंह महाराव के चरण छूना चाहता है किंतु महाराव उनके हाथ पकड़ लेते हैं।]**

**महाराव** : नाना जी, मुझे पापी न बनाइए। चरण तो मुझे आपके छूने चाहिएँ।

**ज़ालिमसिंह** : सेवक का स्थान सदा ही राजा से छोटा है। आज मेरे बेटों की नादानी से तुम्हारे और मेरे बीच अविश्वास और संदेह की दीवारें खड़ी हो गयी हैं लेकिन सच्चा प्यार और सच्ची भक्ति की धारा पर्वतों को भी काट गिराती है। तुम आश्चर्य करते होगे कि मैं यहाँ कैसे आ पहुँचा, क्यों आ पहुँचा—लेकिन महाराव

जिस समय ज़ालिमसिंह केवल स्नेह भाव से तुमसे मिलने आएगा, उसे तुम्हारे पास आने से कोई रोक नहीं सकता। मुझे तुम्हारे पास आने में कुछ भय नहीं, बेटा। मैंने तुम्हें गोद में खिलाया है। तुम जानते हो, मेरे शरीर पर जो यह चादर है, यह वही है जिसे एक दिन श्रीजी के मंदिर में तुम्हारे खड़े होने के लिए मैंने बिछा दिया था। यह चादर मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय है क्योंकि कभी इस पर तुम्हारे चरण-कमल पड़े थे। बेटा, आज तुम मुझे अपना शत्रु समझते हो।

**पृथ्वीसिंह :** किन्तु आप माधोसिंह के पिता हैं।

**ज़ालिमसिंह :** मेरा दुर्भाग्य है कि मैं माधोसिंह का पिता हूँ और महाराव और राजकुमार पृथ्वीसिंह यह आपका दुर्भाग्य है कि आप गोवर्धन को अपना मित्र समझते हैं। इन दोनों भाइयों की प्रतिद्वन्द्विता ने हाड़ौती की धरती को रक्त से रंगने की ठानी है। इसका परिणाम बहुत भयंकर निकलेगा।

**सफ़ अली :** लेकिन आप चाहें तो इस खून-खराबी को आज रोक सकते हैं।

**ज़ालिमसिंह :** इसीलिए तो मैं यहाँ आया हूँ। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मुझे आँखों से भली भाँति सूझता भी नहीं लेकिन मेरे हिए की तो अभी फूटी नहीं हैं।

मैं अपने जीते-जी हाड़ा राजगद्दी को आँच नहीं आने देना चाहता।

**मोहम्मद अली :** लेकिन आज आप अंग्रेज़ों के मित्र हैं।

**ज़ालिमसिंह :** यह भी तो मेरा दुर्भाग्य है, मिर्ज़ा साहब। लेकिन जब होल्करनरेश ने कोटा की स्वतन्त्र सत्ता को समाप्त कर देना चाहा तब अंग्रेज़ों का सहारा लेने के अतिरिक्त कोई चारा भी मेरे पास क्या था। मैं भी भारतीय हूँ और अंग्रेज़ विदेशी हैं। उनका राज भारत में बना रहे और विस्तार पाता रहे यह मैं कैसे चाह सकता हूँ। लेकिन अकेले ज़ालिमसिंह के चाहने से क्या होगा। शेष भारतीय भी तो इस विषय में कुछ सोचें। वे एक दूसरे को ही खा जाने पर क्यों उतारू हैं। होल्कर से कोटा राज्य की रक्षा करने के लिए जब एकबार अंग्रेज़ों का सहारा पकड़ लिया तो क्या वह सरलता से पिण्ड छोड़नेवाले हैं। आप लोग कुछ मेरी विवशता को भी समझें।

**किशोरसिंह :** तो आप चाहते क्या हैं ?

**ज़ालिमसिंह :** महाराव के प्राणों की रक्षा और हाड़ाओं की पवित्र राजगद्दी का सम्मान। आज ये दोनों संकट में हैं महाराव। आप जब कोटा के गढ़ का फाटक खोलकर निकले तभी अंग्रेज़ों की तोपें आपको अपना ग्रास बना सकती थीं—

लेकिन मैंने ही अनुनय करके उस समय रोका। यदि महाराव के शरीर पर ज़रा-सी भी आँच आती तो ज़ालिमसिंह भी जीवित नहीं रहता। मैं महाराव के लिए अपने प्राण देने को सदा प्रस्तुत हूँ। आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप कोटा लौट चलिए। हाड़ाओं की पवित्र गद्दी पर उसके वास्तविक स्वामी को बैठना चाहिए।

**गोवर्धन :** माधोसिंह का आश्रित बनकर।

**ज़ालिमसिंह :** नहीं गोवर्धन ! मैं नहीं चाहता कि महाराव को वास्तविक प्रभुसत्ता प्राप्त न हो। स्वर्गीय महाराव उम्मीदसिंह का मैं कहने के लिए संरक्षक था—लेकिन हमारा परस्पर ऐसा प्रेम था कि कभी हमारा किसी बात में संघर्ष नहीं हुआ। जो राजा है वह राजा है, जो चाकर है वह चाकर है। ज़ालिमसिंह या माधोसिंह का अपना क्या है। जो कुछ है वह हाड़ाओं का दिया दान ही तो है। झाला तो यहाँ केवल २५ घोड़े लेकर आए थे, सिर्फ पच्चीस तलवारें उनके पास थीं। २५ घोड़ों और पच्चीस तलवारों से कोटा राज्य की जो सेवा मेरे प्रपितामह से बनी वह उन्होंने की और उदार हाड़ा राजवंश ने हमें धन-सम्पत्ति, अधिकार और वैभव से लाद दिया। आज वह सब कुछ

छीन लेना चाहते हैं तो छीन लें। मैंने बहुत पाप किए हैं, यह सब जानते हैं। गरीब प्रजा का धन अनेक तरीकों से लूटकर अपनी तिजोरियाँ मैंने भरी हैं—अब मैं प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ। वर्षों से मेरा मन वैराग्य की ओर अग्रसर हो रहा है तभी तो मैं महल में न रहकर नगर से दूर तंबू में रहता हूँ। अब महाराव को पुनः राजगद्दी पर बैठा लूँ, फिर राज-काज का सारा मोह छोड़कर नाथद्वारे चला जाऊँगा। वहीं श्रीजी के चरणों में जीवन की शेष घड़ियाँ बिता दूँगा। महाराव, आओ मेरे साथ, बाहर हाथी तैयार है। कोटा की राजगद्दी आपकी प्रतीक्षा कर रही है।

**[जालिमसिंह महाराव किशोर सिंह का हाथ पकड़ते हैं और उन्हें ले चलते हैं। मंत्रमुग्ध से महाराव चल पड़ते हैं। सब का पीछे-पीछे प्रस्थान।]**

**पट परिवर्त्तन**

## चौथा दृश्य

स्थान : चंबल का किनारा

समय : रात्रि

**[चंबल की धारा दिखाई नहीं देती केवल किनारे की रेत और टीले दिखाई देते हैं। नैपथ्य में से नदी के बहने की ध्वनि आती है। सैनिक वेश में दुर्गा हाथ में जलती हुई मशाल लिये घूम रही है और गीत गा रही है।]**

**दुर्गा : (गीत)**

नाव है तूफान में, मैं
पार जाऊँ किस तरह ?
है अँधेरी रात भीषण
हैं सितारे मुँह छुपाए।
कुछ समझ पाती नहीं मै
मार्ग पाऊँ किस तरह ?
नाव है तूफ़ान में, मैं
पार जाऊँ किस तरह ?
हैं किनारे दूर दोनों
दे रहीं लहरें चुनौती।
किन्तु कहता है हृदय, मै
हार जाऊँ किस तरह ?
नाव है तूफ़ान में, मै
पार जाऊँ किस तरह ?

काल बैरी बन गया है
है नहीं कोई सहारा,
जुल्म के आगे जगत के—
सर झुकाऊँ किस तरह ?
नाव है तूफ़ान में, मैं
पार जाऊँ किस तरह ?
एक दिन दिल में किसी ने
प्यार का दीपक जलाया
आज आँधी चल रही--
इसको बचाऊँ किस तरह ?
नाव है तूफ़ान में, मैं
पार जाऊँ किस तरह ?

[सैनिक वेश में गोवर्धन का प्रवेश]

**गोवर्धन** : सचमुच हमारी नाव तूफ़ान में फँस गयी है, दुर्गा ।

**दुर्गा** : कौन गोवर्धन ?

**गोवर्धन** : क्यों, मुझे पहचानना भी कठिन हो गया है ?

**दुर्गा** : गोवर्धन, तुम को नहीं पहचानूँगी तो किसे पहचानूँगी ?

**गोवर्धन** : दुर्गा, हमारी सभी योजनाएँ विफल हो गयी हैं। महाराव और पिता जी में समझौता हो गया और संभव है कि माधोसिंह और महाराव में भी हो जाए ।

को मैंने कुछ-कुछ पहचाना है। अपने राजा को देवता समझने वाले परिश्रमी किन्तु निर्धन किसानों की कष्ट-गाथाओं ने मेरे प्राणों को और भी विचलित कर दिया है। राजा लोग अपने राजमुकुटों की, अपने विलास-साधनों की, रक्षा के लिए अंग्रेज़ों से लड़ते रहते हैं—लेकिन इन्होंने सर्वसाधारण के सुख-दुख की बात कभी नहीं सोची। इन्होंने अपनी बड़ी-बड़ी सेनाओं को रखने के लिए सर्वसाधारण को चूसा है। यही कारण है कि अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए सर्वसाधारण ने पूरे उत्साह से साथ नहीं दिया और बिना सर्वसाधारण के सहयोग के ये लोग अंग्रेज़ों से पार नहीं पा सकते, बल्कि ये अंग्रेज़ हमारे समाज की विषमता का लाभ उठाकर सर्वसाधारण को संघर्ष से दूर रखने में समर्थ होते रहे हैं। हमें इस परिस्थिति से लड़ना है। हमें सर्वसाधारण में यह भावना भरनी है कि देश के वास्तविक स्वामी तुम हो—न ये भारतीय राजा-महाराजा, न विदेशी अंग्रेज़। गोवर्धन, याद रखो समय पड़ने पर तुम्हें अपने अनन्य सखा महाराव के विरुद्ध भी शस्त्र उठाना पड़ेगा।

**गोवर्धन** : दुर्गा, तुम यह क्या कहती हो ?

**दुर्गा** : मैं ठीक कहती हूँ । देश सर्वोपरि है । महाराव हमारा साथ दें अच्छी बात है—हम उनका सम्मान करेंगे—लेकिन जब हम भविष्य की ओर दूर तक देखते हैं तो गोवर्धन, वहाँ इन राजाओं के लिए कोई स्थान नहीं दिखाई देता । ये भारत की एकता के लिए अभिशाप हैं । हमारे देश का ढाँचा बदले बिना हम इसे ऊँचा नहीं उठा सकते ।

**गोवर्धन** : दुर्गा, तुम सचमुच दिव्य हो । तुम्हारे मुख से उच्चारित एक-एक शब्द वेद-वाक्य की भाँति महत्त्वपूर्ण है । दुर्गा, तुम मुझे जिस पथ पर चलने को कहोगी—चलूँगा ।

**दुर्गा** : तो आओ मेरे साथ । मैं तुम्हारा परिचय अपने नवीन साथियों से कराऊँ ।

**[दोनों का प्रस्थान ।]**

**पट परिवर्त्तन**

## पाँचवाँ दृश्य

**स्थान** : कोटा के राजमहल में राजसभा-कक्ष

**समय** : दिन

**[राजसभा भरी हुई है । राजसिंहासन पर महाराव किशोरसिंह राजसी वेश में बैठे हुए**

हैं। उनके पीछे एक दासी छत्र लिये खड़ी है, तथा दोनों तरफ दो दासियाँ चँवर डुला रही हैं। महाराव के पैरों से कुछ दूर पर दो-तीन तिपाहियाँ हैं, जिन पर कुछ वस्तुएँ रखी हैं, एक तिपाही पर मोहरों से भरा हुआ एक थाल है, दूसरी पर एक स्वर्ण-थाल में टीका करने का सामान है। पास ही दो-तीन तलवारें, जिनकी मूठें स्वर्ण की हैं, रखी हुई हैं। महाराव के एक तरफ ज़ालिमसिंह और दूसरी तरफ अंग्रेज एजेंट, ज़ालिमसिंह के पास माधोसिंह और अंग्रेज एजेंट के पास राजकुमार पृथ्वीसिंह, उसके बाद गोवर्धन बैठा है। सफ़ अली, मिर्ज़ा मोहम्मद अली तथा अन्य सामंत भी यथास्थान बैठे हुए हैं, नर्तकी गा रही है और नाच रही है।]

नर्तकी : (गीत और नृत्य)

आज का शुभ दिन खुशी का
ला रहा तूफ़ान सुन्दर।
देवता आकाश से करते
निरन्तर पुष्प वर्षा।
भूमि का अंतर जवानी—
प्राप्त करके समुद हर्षा।
आज अधरों पर सभी के—
खिल उठी मुसकान सुन्दर।

आज का शुभ दिन खुशी का—
ला रहा तूफ़ान सुन्दर ।
राजमहलों और कुटियों
के हुए हैं उर प्रफुल्लित,
प्रीत की सरिता हुई है
आज प्राणों में तरंगित ।
हर हृदय की धड़कनों में
गूँजते हैं गान सुन्दर ।
आज का शुभ दिन खुशी का—
ला रहा तूफ़ान सुन्दर ।

**अंग्रेज एजेंट** : महाराव, हम को आपका डेश का गाना बहोट पसंड आटा है ।

**महाराव** : धन्यवाद । हमने तो आपका देश देखा नही लेकिन हम समझते हैं कला का रूप तो प्रत्येक देश में थोड़े परिवर्त्तन के साथ एक सा ही होता है । **(नर्तकी से)** नर्तकी, हम तुम से प्रसन्न हुए **(थाल में से कुछ मोहरें उठाकर देते हुए)** लो यह पुरस्कार !

**नर्तकी** : महाराव की कृपा के लिए धन्यवाद ।

**[नर्तकी पुरस्कार ग्रहण करती है ।]**

**झालिमसिंह** : नर्तकी, अब तुम जा सकती हो ।

**[नर्तकी और उसके साजिन्दों का प्रस्थान । नेपथ्य से तोपों के चलने और तुरही के बजने की आवाजें सुनाई देती हैं ।]**

**महाराव** : फिर ये तोपें ?

**जालिमसिंह** : चिन्तित होने की बात नहीं, महाराव । ये तोपें आपके सम्मान में चलाई जा रही हैं । अंग्रेज़ी शासन की इच्छा है कि आज स्वयं अंग्रेज़ एजेंट आपका राजतिलक अपने हाथ से कर सदा के लिए कोटा राज्य को स्नेहसूत्र में बाँधा जाय । मैं समझता हूँ, महाराव को इसमें आपत्ति नहीं होनी चाहिए ।

**महाराव** : किन्तु एक दिन अंग्रेज़ी शासन हमें गद्दी से उतारकर हमारे अनुज बिशनसिंह को गद्दी का स्वामी बनाना चाहता था ।

**अंग्रेज एजेंट** : नहीं, नहीं, अंग्रेज़ों का हुकूमट किसी के रीटि-रिवाज में डखल नहीं डेना माँगटा । राजकुमार बिशनसिंह स्वयं भी नहीं चाहटा कि वह महा-राव के रास्टे का काँटा बने । इसीलिए वह आज डरबार में नहीं आए ।

**जालिमसिंह** : और उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि वह कभी कोटा दुर्ग में पदार्पण नहीं करेंगे ।

**पृथ्वीसिंह** : यही उनके लिए उचित भी था । वह हाड़ा राजवंश के आदर्श और नियमों से विमुख कैसे हो सकते थे । उन्हें तो आप लोगों ने बहका लिया था ।

**माधोसिंह** : राजकुमार पृथ्वीसिंह, आज की शुभ घड़ी में पिछली दुर्भाग्यपूर्ण बातों को याद करने से

कोई लाभ नहीं। असल अपराधी मैं हूँ। मुझे महाराव दण्ड दे सकते हैं।

**महाराव :** नहीं माधोसिंह, हम किसी को दण्ड नहीं देना चाहते। हम चाहते हैं कि सब अपनी सीमा में रहें। हाड़ाओं की इस पवित्र गद्दी का सभी सम्मान करें। स्वार्थवश दूसरे के अधिकारों पर डाका न डालें। आप सभी कोटा राज्य के आधार-स्तम्भ हैं। आप लोग यदि कोटा की प्रभुसत्ता का असम्मान करेंगे तो उससे न आपको लाभ होगा न कोटा राज्य की प्रभुसत्ता स्थिर रह सकेगी।

**जालिमसिंह :** इस बात का प्रमाण देने के लिए कि हम महाराव को अपने हाथ की कठपुतली नहीं बनाना चाहते मेरा प्रस्ताव है कि सर्फ़ अली को राजपल्टन का अध्यक्ष बनाया जावे। जब सेना महाराव के विश्वासपात्र व्यक्ति के हाथ में होगी तब महाराव को किसी तरह की आशंका करने का अवसर नहीं मिलेगा।

**गोवर्धन :** मीठा ज़हर देना आप खूब जानते हैं।

**पृथ्वीसिंह :** तुम क्या कह रहे हो, गोवर्धन। आज महाराव वास्तविक शक्ति पा रहे हैं। हाड़ाओं की राजगद्दी अब झालाओं की कृपा पर निर्भर नहीं रहेगी।

**गोवर्धन :** आश्चर्य राजकुमार पृथ्वीसिंह ! आप भी ऐसा सोचते हैं। तब मुझे कुछ नहीं कहना। आप जितने वीर है उतने ही भोले भी। काश आप भविष्य के पर्दे को उठाकर देख पाते। आज मेरा स्वर सब के लिए विवादी बन गया है—लेकिन मै समझता हूँ, मैं जो कह रहा हूँ वह सत्य है।

**माधोसिंह :** गोवर्धन ! तुम्हारे हृदय में शुद्ध रक्त के राजपूतों के विरुद्ध जो घृणा है वही तुम से यह सब कुछ कहला रही है। तुम शत्रु हो अपने पिता के क्योंकि वह तुम्हें क्षत्रियों के समान सम्मान राजपूत समाज में नहीं दिला सके। तुम्हें क्रोध है मुझ पर क्योंकि तुम मेरे समान स्थान समाज में नहीं पा सकते। तुम महाराव और राजकुमार पृथ्वीसिंह को भड़काते हो क्योंकि तुम उन्हें संकट में डालकर एक राजपूत राजवंश का सर्वनाश देखकर पैशाचिक आनन्द लेना चाहते हो।

**गोवर्धन :** (**तलवार निकालकर**) नीच, पामर ! तुम मेरे और महाराव तथा राजकुमार पृथ्वीसिंह के बीच अविश्वास के बीज बोना चाहते हो। इस शस्त्र की शिक्षा शायद तुमने अपने गुरू इस अंग्रेज़ एजेंट से सीखी है। मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता। माधोसिंह ! निकालो तलवार !

**महाराव :** शांत गोवर्धन, तुम हमारे मित्र हो और तुम्हारी तलवार हमारी अनुमति के बिना म्यान से बाहर नहीं आनी चाहिए। जिस पर हमने विश्वास किया है उस पर जीवनपर्यन्त विश्वास करेंगे चाहे उसकी कीमत हमें अपने राजपाट और जीवन से चुकानी पड़े। साथ ही हम यह भी कहना चाहते हैं, गोवर्धन, कि कोई मित्रता का हाथ बढ़ाए तो राजपूत उसे स्वीकार करने में संकोच नहीं करता। हम माधोसिंह को भी अवसर देना चाहते हैं।

**अंग्रेज़ एजेंट :** महाराव, आप किसी तरह का चिटा न करें। जब टक अंग्रेज़ हिन्दुस्टान में है टब टक कोई भी टाकट कोटा राज्य की टरफ आँख नही उठा सकटा। अब मराठे, जयपुर के महाराजा या पिण्डारी कोटा की सीमा में उट्पाट नही मचा सकटे। हमारी फौज और टोपखानां हमेशा आपकी मडड के लिए हाज़िर होगा। हम एक बड़ी सेना कोटा में रखेंगे।

**गोवर्धन :** ताकि महाराव की स्वाधीनता की भावना फिर कभी सर न उठा सके।

**ज़ालिमसिंह :** गोवर्धन, तुमने फिर विवादी स्वर छेड़ा।

**गोवर्धन :** पिता जी, आपकी भाँति 'मुँह में राम बगल में छुरी' कहावत को मैं चरितार्थ नहीं कर सकता।

**जालिमसिंह :** गोवर्धन, जिस आग को बड़ी कठिनाई से मैंने शांत किया है उसे फिर प्रज्वलित न करो। हाड़ाओं के नमक से मेरा भी शरीर पला है और तुम्हारा भी। ईश्वर के बाद हमारे लिए अगर कोई पूज्य है तो वह हैं महाराव। उनका अहित मैं कभी नहीं सोच सकता। मेरी बुद्धि को भ्रम हो सकता है लेकिन मेरी ईमानदारी पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है। गोवर्धन, एक दिन तुम्हारे मस्तिष्क से भी संदेह के बादल दूर हो जावेंगे।

**गोवर्धन :** मेरे अंतःकरण में कोई बादल नहीं हैं, पिता जी। मुझे यह सारा आयोजन एक विकट षड्यंत्र जान पड़ता है।

**सर्फ़ अली :** भाई गोवर्धन, इस वक्त इन बातों पर सोचना ठीक नहीं। जब एक बार महाराव और अंग्रेज़ एजेंट हाथ मिला चुके हैं तो हमें फिलहाल चुप रहना चाहिए।

**मोहम्मद अली :** बेशक हमें अभी से कुछ नहीं सोच लेना चाहिए। महाराव के लिए हम लोग जान देने के लिए तैयार हैं और अगर अभी कोई ख़तरा महाराव के लिए आया तो हम लोग हर तरह की कुर्बानी देकर उन्हें ख़तरे से बचावेंगे, लेकिन आज की इस नेक घड़ी में

हमें ऐसे अल्फ़ाज़ नहीं कहने चाहिएँ जिससे आपस में फूट की खाई गहरी हो।

**अंग्रेज़ एजेंट :** आपने बहोट अकलमण्डी की बाट कही। मिर्ज़ा मोहम्मद अली और सर्फ़ अली, आप लोग आज मे हमारा डोस्ट हुआ। टुम बहादुर आडमी है। अंग्रेज़ बहादुरों का इज्ज़ट करटा है। हम आप लोगों को फौज में ऊँचा ओहडा डिलाएगा।

**गोवर्धन :** जो बुद्धि के द्वार बन्द कर ले उसे कुछ भी नहीं समझाया जा सकता, महाराव।

**पृथ्वीसिंह :** तुम महाराव का भी अपमान करते हो गोवर्धन।

**गोवर्धन :** राजकुमार पृथ्वीसिंह, महाराव से ज्यादा मुझे उनका सम्मान प्रिय है। उनके सम्मान पर और उनकी स्वाधीनता पर आँच आते देखकर मेरे प्राण पागल हो उठते हैं। तुम मेरी मर्म-व्यथा को नहीं समझ सकते।

**जालिमसिंह :** गोवर्धन, तुम जानते हो, मैं तुम्हे माधोसिंह से भी ज्यादा प्यार करता हूँ। मैं जानता हूँ, तुम प्रतिभाशाली और वीर पुरुष हो। तुम अपनी शक्ति अच्छे मार्ग में लगाओ यह मेरी अभिलाषा है। तुम चाहो तो मै तुम्हारे पैर भी पड़ सकता हूँ। अस्सी वर्ष का बूढ़ा बाप तुम्हारे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है कि उस गृह-कलह की आग को भड़काओ मत।

महाराव के हित में ही हम सब का हित है। मेरे जीवन की ये अंतिम घड़ियाँ हैं। मैं चाहता हूँ कि एक बार मैं तुम सबको एक देखूँ। उसके बाद नाथद्वारे जाकर जीवन के शेष दिन श्रीजी की आराधना में बिता दूँ। मेरा सम्पूर्ण जीवन हाड़ा राजवंश की सेवा में बीता है और मेरे जीवन की अंतिम साध भी यही है कि मैं हाड़ा राजगद्दी के सम्मान की रक्षा में अपने शरीर के अंतिम रक्त बिंदु को समर्पित करूँ। तुम भी मेरे रक्त से बने हो। तुम मुझ पर विश्वास करो और आज की इस शुभ घड़ी को असंतोष और आशंकाओं के बादलों से आच्छादित न करो।

**अंग्रेज एजेंट :** महाराव, मुझे आज्ञा दीजिए, ताकि मैं आपका राजटिलक कर सकूँ।

**महाराव :** मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

**[अंग्रेज एजेंट महाराव के मस्तक पर तिलक लगाते हैं।]**

**गोवर्धन :** दुर्भाग्य भारत का कि यहाँ के राजाओं को अंग्रेज़ों के हाथ से राजतिलक कराना पड़ रहा है। इसका समर्थन वे लोग कर सकते हैं जिन्हें अपने महलों की, अपने विलास-साधनों की, रक्षा करने की चिन्ता है। जो अपनी विलास-लालसाओं की पूर्ति के लिए अपने स्वाभिमान

और देश की स्वाधीनता को बेच देते हैं। भारत के साधारण जन, जिनके पास न महल हैं न अन्य सुख-साधन, जिनकी एकमात्र सम्पत्ति है स्वाधीनता, कभी अंग्रेज़ों को स्वीकार नहीं कर सकते।

**महाराव :** (**तिलक करने के बाद**) हम आज की इस शुभ घड़ी में अंग्रेज़ों के प्रतिनिधि को यह पुरस्कार प्रदान करते हैं। (**मोहरों से भरा थाल अंग्रेज एजेंट को देते है।**)

**अंग्रेज एजेंट :** (**थाल लेते हुए**) हम महाराव की इस कृपा के लिए आभार मानटे हैं और उन्हें विश्वास डिलाटे है कि अंग्रेज़ हुकूमट हमेशा उनकी इज्ज़ट करेगी।

**महाराव :** और आज के इस शुभ दिन हम आदरणीय ज़ालिमसिंह जी और उनके पुत्र माधोसिंह को ये सिरोपाव प्रदान करते हैं।

[**महाराव ज़ालिमसिंह और माधोसिंह को पोशाकें देते हैं।**]

**ज़ालिमसिंह :** बेटा, महाराव के चरण छुओ।

[**माधोसिंह महाराव के चरणों को छूने के लिए झुकता है, किन्तु महाराव उसे गले लगा लेते हैं।**]

**पट-परिवर्तन**

# तीसरा अंक

## पहला दृश्य

**स्थान** : ज़ालिमसिंह के डेरे के
बाहर का मैदान

**समय** : संध्या

**[ज़ालिमसिंह और गोवर्धन घूमते हुए वार्तालाप में व्यस्त हैं।]**

**गोवर्धन** : पिता जी, आपने अंग्रेज़ों का प्रपंच राजस्थान में भी विस्तारित होने देने में सहायता देकर भारत के प्रति विश्वासघात किया है।

**ज़ालिमसिंह** : गोवर्धन, हमारा देश शताब्दियों से पारस्परिक विग्रहों से आहत है, इसे शांति चाहिए। यह शांति तभी स्थापित हो सकती है जब गौरी-शंकर के शिखर से कन्याकुमारी और खैबर घाटी से असम प्रदेश तक सारा भारत एक छत्र के नीचे आए।

**गोवर्धन** : और यह छत्र एक विदेशी शक्ति हो यही आपकी मान्यता है।

**ज़ालिमसिंह** : नहीं, यह मेरी मान्यता नहीं है, लेकिन मैंने देश के एक कोने से दूसरे कोने तक अपनी दृष्टि दौड़ाई है, कहीं भी मुझे वह व्यक्तित्व, वह शक्ति दिखाई नहीं दी जो सम्पूर्ण भारत

को एक कर सके। इस देश को पराधीनता के पाश से बचा सकना असम्भव है।

**गोवर्धन :** किन्तु जान-बूझकर अपने आपको पराधीनता के जुए में फँसा देना तो नितांत कायरता है। आप जो कुछ कर रहे हैं वह केवल स्वार्थ-भावना से। अपने पुत्र माधोसिंह की कुत्सित इच्छाओं की पूर्त्ति करने के लिए आपने अंग्रेज़ों का सहारा लिया है। मैं भी तो आपका पुत्र हूँ। मुझ में और माधोसिंह में आप अंतर क्यों देखते हैं ?

**जालिमसिंह :** तुम जानते हो गोवर्धन मैं तुम्हें माधोसिंह से अधिक चाहता हूँ, किन्तु माधोसिंह मेरा न्यायोचित उत्तराधिकारी है, उसे उत्तराधिकार में इस सुविधा और सम्मान की उपलब्धि होगी जो मुझे प्राप्त है। यह भारत की चिरप्राचीन परम्पराओं मान्यताओं के अनुसार उचित ही है। फिर भी मैंने तुम्हारे हितों की ओर से आँखें बंद नहीं कर ली हैं। तुम्हें भी एक अलग जागीर कोटा राज्य से प्राप्त हो और मेरी सम्पत्ति का भी एक बड़ा भाग तुम्हें प्राप्त हो सके इसका मैं प्रबन्ध करना चाहता हूँ, किन्तु तुम्हें कोटा राज्य में अशांति के बीज नहीं बोने चाहिएँ।

**गोवर्धन :** अर्थात् आप जागीर का प्रलोभन देकर मेरी स्वतन्त्र भावना को खरीद लेना चाहते हैं, किन्तु मुझे न ऐश्वर्य चाहिए, न प्रभुता, न विलास-सामग्री । मैंने मखमली गद्दों को छोड़कर हाड़ौती की भूमि को अपनी सेज बनाने का निश्चय किया है । आपके पापों का प्रतिकार करना मेरा कर्त्तव्य है ।

**जालिमसिंह :** किन्तु, अब तुम कर ही क्या सकते हो ? कोटा के महाराव भी अब राज्य में शांति चाहते है ।

**गोवर्धन :** हो सकता है महाराव को शांति का नाम रख कर आने वाली मृत्यु पसंद आ गयी हो । लेकिन मैं इस मृत्यु को स्वीकार नहीं कर सकता । न महाराव को यह अधिकार प्राप्त है कि वे हाड़ौती के लाखों नर-नारियों को विदेशी शक्ति की दासता के पाश में जकड़ दें न आप को । मैं जनसाधारण के प्रतिनिधि के रूप में आपसे प्रार्थना करता हूँ कि महाराव को अंग्रेज़ों की आधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य न कीजिए, नहीं तो यहाँ के वातावरण में ऐसा तूफ़ान उठेगा, कि उसे कोई भी शक्ति रोक नही पावेगी ।

**जालिमसिंह :** गोवर्धन, मुझे अभिमान है कि मैंने एक ऐसे पुत्र को उत्पन्न किया जो स्वाधीनता और स्वाभिमान के लिए पागल है ।

**गोवर्धन** : आप मेरी भावनाओं को केवल पागलपन समझते हैं।

**जालिमसिंह** : बेटा, भावना का अर्थ पागलपन ही है। भावनाओं के उद्रेक में मनुष्य महान् बलिदान करता है तो महान् नीचता भी। गोवर्धन, भावना मनुष्य को किधर वहा ले जायगी इसकी वह कल्पना भी नही कर सकता। तुमने अनेक बार चंबल में आने वाली बाढ को देखा है ऐसा ही रूप भावनाओं के उद्रेक का होता है। इसे विवेक और संयम से रोकने की ज़रूरत है।

**गोवर्धन** : और विवेक और संयम है कायरता, स्वार्थपरता—विदेशी सत्ता की दासता।

**जालिमसिंह** : बेटा, यदि मुझे ज़रा सी भी संभावना दिखाई देती कि किसी प्रकार अंग्रेज़ों की आधीनता से भारत को मुक्त किया जा सकता है तो मैं पहला व्यक्ति होता जो तुम्हारे स्वर में स्वर मिलाकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध देशवासियों को खड़ा करता। तुम तो जानते हो, मैंने पिण्डारी नेताओं की अंग्रेज़ों के विरुद्ध कितनी सहायता की। जब अंग्रेज़ सेनाओं ने उनका पीछा किया तब उनके स्त्री-बच्चों तक को मैंने अपने घर में आश्रय दिया।

**गोवर्धन** : उस समय तक आपको आशा थी कि संभवतः अंग्रेज़ पिण्डारियों पर काबू न पा सकेंगे, किन्तु

जैसे ही पिण्डारियों की शक्ति क्षीण हुई कि आपने अंग्रेज़ों की शरण पकड़ ली।

**जालिमसिंह :** जब मैं तुम्हारी तरह युवक था तब मैं भी स्वप्न देखता था कि भारत की वीर-भावना को जागृत करूँ, लोगों को देश की स्वाधीनता के नाम पर एक ध्वजा के नीचे एकत्रित करूँ किन्तु दुर्भाग्य देश का कि कभी दो राजा एक न हो सके। सारे राजाओं को एक कर पाना असाध्य था। पलासी के युद्ध से लेकर आज तक भारत का कितना रक्त अंग्रेज़ों का प्रतिरोध करने में बहा है लेकिन उनकी सत्ता का पोत इस रक्त-सागर में से होकर आगे ही बढ़ता गया है। रक्त तो भारत ने दिया लेकिन एक साथ नहीं। कभी एक राजा ने दूसरे राजा के राजमुकुट को भू-लुंठित होते देखकर यह नहीं सोचा कि कल हमारी बारी है। आज कोटा के महाराव अंग्रेज़ों का प्रतिरोध करें भी तो एकाध पलासी की लड़ाई का पुनरावर्तन और हो जावेगा—इससे अधिक क्या होगा। इसीलिए मैं तुमसे कहता हूँ हाड़ौती में रक्त के बादल मत बरसाओ।

**गोवर्धन :** पिता जी, मैं मानता हूँ कि सम्भवतः हम रक्त देकर भी अंग्रेज़ों के पंजे से छुटकारा नहीं पा सकेंगे—लेकिन फिर भी देश की स्वाधीनता के

लिए बहाया हुआ रक्त व्यर्थ नहीं जाता यह इतिहास कहता है। भारत के राजा कभी एक नहीं होंगे और वे कभी भारत को अंग्रेज़ों से मुक्त नहीं कर पावेंगे। सच पूछो तो वे राज करना जानते हैं—स्वाधीनता का अर्थ नहीं समझते। उनके मस्तक पर राजमुकुट कायम है तो वह समझते हैं वे स्वाधीन हैं। उन्होंने नहीं जाना कि जब जनसाधारण का जीवन स्वतन्त्र है तभी देश स्वतन्त्र है। ये लोग सदा ही सर्व-साधारण का रक्त-शोषण करते रहे—ये क्या जानें कि देश की स्वाधीनता क्या वस्तु है। वे यह भी नहीं जानते कि भारत क्या है। जिन राजाओं को अंग्रेज़ों ने मिटा दिया वे तो मिट गये, किन्तु अब जो बच रहे हैं उनके हित और अंग्रेज़ों के हित मानों एक हो चुके हैं। यदि भारत के रहनेवालों में कभी स्वाधीनता प्राप्त करने की इच्छा जाग्रत होगी तो ये राजा ही अंग्रेज़ों की ढाल बनेंगे। जिस प्रकार आप मुझे रोक रहे हैं उसी प्रकार ये स्वार्थों की रक्षा के लिए प्रत्येक स्वाधीनता-प्रेमी का गला घोंटेंगे।

**जालिमसिंह** : क्या राजा मनुष्य नहीं है ?

**गोवर्धन** : उनकी मनुष्यता को स्वार्थपरता ने मार डाला है। महाराव किशोरसिंह और राजकुमार

पृथ्वीसिंह की मनुष्यता अभी साँस ले रही है। मैं उसे मरने नहीं दूँगा।

**झालिमसिंह** : तुम उनके मस्तक पर से राजमुकुट छिनवाना चाहते हो, गोवर्धन !

**गोवर्धन** : हाँ, पिता जी, मै उनके मस्तक पर दासता के कलंक से काला हुआ राजमुकुट नहीं देखना चाहता। मैं उनका सिंहासन जनसाधारण के हृदय में स्थापित करना चाहता हूँ। मैं उन्हें हाथ पकड़कर कोटा की राजगद्दी से नीचे उतार लेना चाहता हूँ और जनसाधारण के दुख-दारिद्रय भरे जीवन में खड़ा कर देना चाहता हूँ। जिस देश के स्वरूप को वे नहीं जानते उसे मैं उन्हें दिखाना चाहता हूँ।

**झालिमसिंह** : तुम जानते हो महाराव का संरक्षण अंग्रेज़ करते हैं।

**गोवर्धन** : मुझे अंग्रेज़ों के भय से आतंकित नहीं कीजिए। मैं आपसे उस महाराव की याचना करता हूँ जो केवल ५०० वीरों को साथ लेकर आपकी और अंग्रेज़ों की सम्मिलित विशाल सेना और तोपखाने का सामना करने निकले थे। जिन्होंने स्वाभिमान और स्वाधीनता के मोल पर अपने मस्तक पर राजमुकुट धारण करना अस्वीकार कर दिया था। आप शायद न समझ पा रहे हो कि केवल हाड़ौती प्रदेश ही

नही—सम्पूर्ण भारत का अंतःकरण एक बंद ज्वालामुखी है। इस ज्वालामुखी को प्रस्फुटित करने की आवश्यकता है। अंग्रेज़ों के पाँव अभी जमे नहीं हैं। अभी समय है कि इन्हें यहाँ से उखाड़ फेंका जाय।

[**अंग्रेज एजेंट का अनेक सैनिकों के साथ प्रवेश**]

**अंग्रेज एजेंट** : बण्डी बनालो इस बाग़ी को।

[**एक साथ सब सैनिक गोवर्धन को पकड़ लेते हैं।**]

**गोवर्धन** : (**दाँत पीसकर**) कायर, यही अंग्रेज़ों की विश्वप्रसिद्ध वीरता का उदाहरण है। साहस हो तो मुझ से तलवार लेकर युद्ध करो। सोते हुए सिंह को धोखे से मार डालने में कोई बहादुरी नहीं।

**अंग्रेज एजेंट** : गोवर्धन, टुम अंग्रेज़ हुक़ूमट और महाराव के खिलाफ़ बग़ावट करना माँगटा है। हमारे पास इसका काफ़ी सबूट है। टुम को हाड़ौती में नहीं रहने डिया जा सकटा। टुम अंग्रेज़ों के डोस्ट ज़ालिमसिंह का बेटा है इसलिए हमारा हुक़ूमट टुम को कोई सखट सज़ा नहीं डेगा। सिर्फ़ टुमको हाड़ौटी से दूर रखेगा। टुम को हिफ़ाजट के साथ डिल्ली में रखेगा। टुम को एक अच्छी पेंशन भी डेगा।

**गोवर्धन** : पिता जी, क्या आप भी इस षड्यन्त्र में शामिल हैं?

**ज़ालिमसिंह** : बेटा, कौन पिता अपने पुत्र का अनहित चाह सकता है—लेकिन जब बेटा पागलपन में आकर आत्महत्या ही करने लगे तो उसकी रक्षा करना तो पिता का कर्त्तव्य है । बेटा, तुम हाड़ौती में जिस अशांति की ज्वाला को भड़का रहे थे उसका परिणाम महाराव, मैं, माधोसिंह, राजकुमार पृथ्वीसिंह और तुम्हारे प्राणों के अंत में नहीं होता, अपितु और भी सहस्रों निरपराध लोगों की हत्या में भी होता । तुम्हारे और हम सब के हित में यही अच्छा है कि तुम्हारी छाया भी हाड़ौती प्रदेश को न छू सके ।

**गोवर्धन** : किन्तु पिता जी, एक गोवर्धन को बन्दी बना लेने से यह ज्वाला शांत नहीं होगी । इस भूमि से अनेक गोवर्धन उत्पन्न होंगे, देश की स्वाधीनता के शत्रुओं से प्रतिशोध लेंगे । बंदी बनाकर आप मेरे विचारों को नहीं बदल सकेंगे—मेरी आत्मा हाड़ौती के वीर पुरुषों का आह्वान करती रहेगी कि वह एक स्वर से पराधीनता के विरुद्ध आवाज़ उठावें—केवल आवाज़ ही नहीं शस्त्र भी उठावें । चलिए, मुझे ले चलिए । कहाँ ले जाना चाहते हैं ?

**ज़ालिमसिंह** : ठहरो बेटा, एक बार तुम्हें आशीर्वाद तो दे लूँ । मैं कितना निष्ठुर हूँ कि आज स्वयं

अपने पुत्र को बंदी कर रहा हूँ। तुम्हारी माँ ने मेरे प्राणों की रक्षा की थी, बेटा। अपनी प्राणों की रक्षिका के हृदय के टुकड़े को उससे सदा के लिए बिदा कर रहा हूँ। कैसा कृतघ्न हूँ मैं ? आज तुम्हारी माँ जब मुझसे पूछेगी कहाँ है मेरा लाल तो मै क्या उत्तर दूँगा ? और जब वह सुनेगी कि उसका पुत्र अंग्रेज़ों का बंदी हो गया है तो उसका तो शोक से कलेजा फट जावेगा। बेटा, मेरा कहा चाहे न मानो लेकिन अपनी माँ का ही ख्याल कर तुम शांत व्यक्ति की तरह रहने का वचन दो तो तुम्हें अब भी मुक्त किया जा सकता है।

**गोवर्धन :** नहीं पिता जो, मैं असत्य भाषण नहीं कर सकता, असत्य वचन नहीं दे सकता, किसी की पीठ में छुरी नहीं भोंक सकता। मैं जानता हूँ मेरे वियोग में माता जी का बुरा हाल होगा—सम्भवतः वह जीवन से भी हाथ धो बैठे, लेकिन क्या मैं अपनी माँ के मोह में पड़कर मातृभूमि से द्रोह करूँ ? नहीं, यह कभी नहीं होगा।

**अंग्रेज़ एजेंट :** गोवर्धन, टुम बहोट अच्छा आडमी है, इज्ज़ट के काबिल। हमारा इंगलैण्ड में टुमारा जैसा लोगों का बहोट कडर करटा है। यहाँ का

बाट और है। चलिए हम कोशिश करेगा कि डिल्ली में तुम को कोई टकलीफ़ न हो।

**[सब का प्रस्थान।]**

**पट परिवर्त्तन**

## दूसरा दृश्य

**स्थान** : महाराव किशोरसिंह का शयन-कक्ष

**समय** : रात्रि

**[महाराव किशोरसिंह पर्यंक पर सो रहे हैं। कमरे में एक मध्यम शमा जल रही है। काले वस्त्र में अपने सम्पूर्ण शरीर को ढके हुए दुर्गा का प्रवेश।]**

**दुर्गा** : हत्यारे, तू सो रहा है !

**किशोरसिंह** : **(नींद से चौंककर)** कौन ? यह किसकी आवाज़ है ?

**दुर्गा** : हत्या करके तू चैन की नीद सो सकता है ?

**किशोरसिंह** : **(बैठकर)** हत्या, किसकी हत्या ? मैंने तो किसी की हत्या नहीं की।

**दुर्गा** : तेरे हाथ रक्त से रंगे हुए हैं।

**किशोरसिंह** : **(खड़े होकर हाथों को देखते हुए)** कहाँ, हमारे हाथों में तो एक बिन्दु भी रक्त नहीं है।

**दुर्गा** : तूने अपनी आँखें भी खो दी हैं। तुझे अपने हाथों में लगा हुआ रक्त भी दिखाई नहीं देता।

तेरी आँखों की पुतलियों पर कायरता की चर्बी चढ़ गयी है ।

**किशोरसिंह :** ए स्त्री, तू कौन है ?

**दुर्गा :** महाराव, तुम मुझे नहीं पहचानते ? तुमने पहले मुझे कभी नहीं देखा ?

**किशोरसिंह :** तू यहाँ कैसे आयी ? मेरे महल के चारों तरफ़ सदा पहरा रहता है ।

**दुर्गा :** कोई भी पहरा हवा या आवाज़ को रोकने में समर्थ नहीं ।

**किशोरसिंह :** तुम अपने शरीर पर पड़े हुए आवरण को उतारो ।

**दुर्गा :** और आप अपनी आत्मा पर पड़े हुए आवरण को उतारिये । मैं कुछ नहीं हूँ—मैं तुम्हारा खोया हुआ स्वाभिमान हूँ । तुम्हारे अंतर से विलुप्त हुए स्वतन्त्र भावना की आवाज़ हूँ । मैं तुम्हारे मृत क्षत्रियत्व की चीख हूँ ।

**किशोरसिंह :** स्वाभिमान, स्वतन्त्र भावना, क्षत्रियत्व । क्या ये सब हम में समाप्त हो चुके हैं ?

**दुर्गा :** हाँ, आपके दिवंगत पूर्वज आपको धिक्कारते हैं । आपने—पृथ्वीराज चौहान के वंशज महाराव किशोरसिंह हाड़ा ने—विदेशियों के हाथों में अपना और अपने लाखों प्रजाजनों का भाग्य सौंप दिया है । आप दिन में जागते हुए भी सोते हो और सोते हुए भी सोते हो । मैं आप

को ऐसी जागृति देने आई हूँ जो आपको सोते हुए भी जागृत रख सके ।

**किशोरसिंह** : तुम उन्मादिनी हो, नारी ।

**दुर्गा** : निश्चय ही मैं उन्मादिनी हूँ और चाहती हूँ कि आप भी उन्मत्त बनें । कायरता प्रदान करने वाले होश से छुटकारा पाएँ । आप में फिर वह उन्माद जागृत हो जो केवल ५०० वीर हाड़ाओं को साथ लेकर अंग्रेज़ों की विशाल सेना से लोहा लेने निकला था ।

**किशोरसिंह** : तुम चाहती हो कि चंबल का पवित्र जल नर-रक्त से लाल हो ।

**दुर्गा** : आप रक्त की लाली से घबराते हैं । क्षत्रिय कभी रक्त से नहीं घबराया । हाड़ौती की धरती रक्त माँगती है—आपकी कुल-देवी आशपूर्णा देवि की लम्बी लाल जिह्वा रक्त माँगती है ।

**किशोरसिंह** : किन्तु, कुछ क्षणों पहले तुम हमें हत्यारा कह कर हमारा तिरस्कार कर रही थीं ।

**दुर्गा** : क्योंकि आपने अपने आपकी हत्या की है । आत्मघात करनेवाला व्यक्ति कायर और तिरस्कार के योग्य होता है ।

**किशोरसिंह** : देवि, तुम अपने आनन से रहस्य का अवगुंठन उठाओ, और अपनी रहस्यमयी वाणी का रहस्य समझाओ ।

**दुर्गा :** महाराव, आप अपनी आत्मा की आवाज़ सुनें। आपकी सुरक्षा के लिए माधोसिंह को आपके महल के चारों तरफ़ कड़ा पहरा लगाने की क्यों आवश्यकता हुई ? कभी सोचा आपने ? महाराव, क्षत्रिय की तलवार जब तक उसके हाथ में है उसे किसका भय हो सकता है। आपके हाथों में हाड़ौती के लाखों नर-नारियों के जीवन, धर्म और सतीत्व की रक्षा का भार है। यदि रक्षक स्वयं अपनी रक्षा करने में समर्थ न रहे तो उनकी रक्षा कैसे कर सकेगा जो उस पर निर्भर हैं।

**किशोरसिंह :** तुम ठीक कहती हो, देवि।

**दुर्गा :** असल में महाराव आप बंदी हैं। कहने के लिए आप प्रभुसत्ता-प्राप्त महाराव हैं किन्तु वास्तव में आप कुछ भी करने में स्वतन्त्र नहीं हैं। ज़ालिमसिंह और माधोसिंह अंग्रेज़ों के सहारे आपकी सत्ता को छीन रहे हैं और आप निश्चिन्त होकर सो रहे हैं। कौनसा राज-काज आपकी आज्ञा से होता है ?

**किशोरसिंह :** कौनसा कार्य हमारी अनुमति के बिना होता है ?

**दुर्गा :** तो गोवर्धन को आपने ही बंदी बनाकर दिल्ली भेजा है।

**किशोरसिंह :** क्या कहा, गोवर्धन को बंदी बनाया गया है !

**दुर्गा** : आश्चर्य महाराव, आपको यह ज्ञान भी नहीं और आप कहते हैं आपकी अनुमति के बिना कोटा राज्य में कुछ नहीं हो सकता।

**किशोरसिंह** : गोवर्धन से माधोसिंह आशंकित है, उसने अपने मार्ग का काँटा दूर करने के लिए सम्भवतः यह कार्यवाही की है।

**दुर्गा** : उसे आपकी अनुमति लिये बिना ऐसा करने का दुस्साहस कैसे हुआ ?

**किशोरसिंह** : हम माधोसिंह को दण्ड देंगे।

**दुर्गा** : दे सकने की सामर्थ आप में है ? आपके महल के चारों तरफ़ पहरा है। आपकी प्रत्येक गति-विधि पर निगाह है। राजकुमार पृथ्वीसिंह भी इसी प्रकार इन लोगों के घेरे में हैं।

**किशोरसिंह** : तब ?

**दुर्गा** : तब आपको अपने सम्मान की रक्षा के लिए युद्ध करना पड़ेगा।

**किशोरसिंह** : किन्तु सेना ?

**दुर्गा** : जब आपके पूर्वजों ने कोटा बूँदी के प्रदेश पर राज्य स्थापित किया था, तब उनके पास कौन सी सेना थी ? उनके प्राणों में अदम्य उत्साह था। उस समय वे किसी राज्य के स्वामी नहीं थे। खोने के लिए उनके पास अपने प्राणों के अतिरिक्त कुछ नहीं था। आपके मस्तक पर जो राजमुकुट है, चैन की नींद सोने के लिए

रत्नजटित पर्यंक है, पीने के लिए स्वर्ण की सुराहियों में बहुमूल्य मदिरा है, सेवा करने के लिए अनेक दास-दासियाँ हैं, रहने के लिए ऊँचे महल हैं—ये ही सब चीज़ें हैं जिनका मोह आपको कायर बनाता है।

**किशोरसिंह** : तब तुम हम से क्या अपेक्षा करती हो ?

**दुर्गा** : मैं नहीं महाराव स्वयं आपका स्वाभिमान और हाड़ौती के लाखों प्रजाजन की स्वाधीनता आप से अपेक्षा करती हैं कि आप अपने धर्म को—कर्त्तव्य को—समझें।

**किशोरसिंह** : हमारा अंग्रेज़ों का मित्र बनना हाड़ौती के जन-साधारण को स्वीकार नहीं है ?

**दुर्गा** : मित्रता ! इसे आप मित्रता कहते हैं—बंधन को—पराधीनता को—आप मित्रता कहते हैं ! आप चाहें तो अपने आपको अंग्रेज़ों का गुलाम बनाकर अपने राजमुकुट को सुरक्षित रख लें—किन्तु आपकी प्रजा इसे स्वीकार नहीं करेगी।

**किशोरसिंह** : तो क्या वह कोटा के महाराव से—अपने स्वामी से-विद्रोह करेगी ?

**दुर्गा** : जो स्वयं अपना स्वामी नहीं उसे कौन अपना स्वामी मानेगा ? महाराव, जो प्रजा अपने स्वामी के लिए अपना सर्वस्व, अपने प्राण भी समर्पित करने को प्रस्तुत है उसे निराशा के अंधकार-सागर में तिरोहित न कीजिए। आशा और

प्रकाश की किरण बनकर उनके बीच चलकर खड़े होइए ।

**किशोरसिंह :** देवि, तुम कौन हो, सच कहो । तुम हमें भुलावा देने तो नहीं आई ।

**दुर्गा :** भूले हुए को और क्या भुलाया जा सकता है महाराव । अभी तो इतना ही जानकर संतोष कीजिए कि मैं उन व्यक्तियों की प्रतिनिधि हूँ जो पराधीनता की यातना को समझते हैं । हाड़ौती के लाखों स्वतन्त्रता-प्रेमी नर-नारियों की ओर से मैं महाराव के चरणों में फरियाद करने आयी हूँ । महाराव को उनके वास्तविक रूप में देखना उन्हें अभीष्ट है । वे ज़ालिमसिंह, माधोसिंह और उनके सहायक अंग्रेज़ों के अत्याचारों से त्रस्त हैं । प्रजा अपने राजा के अतिरिक्त किसके पास पुकार करे ?

**किशोरसिंह :** निश्चय ही हम अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे । हम अभी जाकर ज़ालिमसिंह जी और माधोसिंह को दण्ड देंगे—और अंग्रेज़ों को अपने देश से निकालकर ही दम लेंगे । (**खूँटी से टँगी हुई तलवार उठाकर**) हमारी तलवार में जंग नहीं लगी है, देवि । हमारा पुरुषत्व सोया नहीं है । हम एक क्षण का विलम्ब भी नहीं चाहते । हम जाकर इसी समय रण-वाद्य बजाएँगे । अब हमारी नींद खुल गयी है—इसके पहले कि

हम फिर सो जावें हम कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर होना चाहते हैं।

**दुर्गा :** शान्त महाराव ! मै उत्तेजित करके आपके सोए हुए क्षत्रियत्व को जाग्रत करने आयी थी। भगवती की कृपा से आप पुनर्जीवित हो गये हैं—किन्तु उतावले होने से कार्य नहीं चलेगा। हमें अभी बहुत कुछ करना है। आप स्वाभिमान और स्वाधीनता के लिए अकेले ही समर-भूमि में उतर पड़ें तब भी मुझे प्रसन्नता होगी और भले ही हाड़ाओं के रक्त से अर्जित यह राज्य मिट भी जाय फिर भी इतिहास में आपका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा—फिर भी मैं चाहती हूँ कि आपको यह संघर्ष अकेले ही न करना पड़े। ज़ालिमसिंह और माधोसिंह ने जो भाड़े की सेना एकत्रित की है उसके अतिरिक्त हाड़ौती में एक भी प्राणी नहीं जो महाराव का साथ देने को प्रस्तुत न हो। मुझे उन सभी को एकत्रित करना है।

**किशोरसिंह :** तुम उन्हें कैसे एकत्रित कर सकोगी, देवि ?

**दुर्गा :** केवल आपके और देश की स्वाधीनता के नाम पर उनसे शस्त्र पकड़ने की प्रार्थना करनी है। सर्फ़ अली और मिर्ज़ा मोहम्मद अली से मैं बात कर चुकी हूँ। राजपल्टन और कोटा राज्य का तोपखाना इन्हीं के हाथ में है। कहने के

लिए वे ज़ालिमसिंह और माधोसिंह की आज्ञा का पालन कर रहे हैं—किन्तु वास्तविकता यह है कि समय पड़ने पर वे उन्हें तोप से उड़ा देने को प्रस्तुत हैं।

**किशोरसिंह** : हम उनसे मिलना चाहते हैं।

**दुर्गा** : वे भी आपसे मिलना चाहते हैं—किन्तु उपयुक्त अवसर आने दीजिए। अभी मुझे दिल्ली जाना है।

**किशोरसिंह** : दिल्ली !

**दुर्गा** : हाँ महाराव, दिल्ली। बिना गोवर्धन को मुक्त किए हाड़ौती की स्वाधीनता का यज्ञ प्रारम्भ नहीं हो सकता। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की भाँति हाड़ौती के तीनों भाग्य-विधाताओं—महाराव किशोरसिंह, राजकुमार पृथ्वीसिंह और गोवर्धन को मैं साथ देखना चाहती हूँ।

**किशोरसिंह** : देवि, अब तो तुम अपने परिचय को अंधकार में न देखो।

**दुर्गा** : (**आवरण हटाते हुए**) मैं हूँ, दुर्गा। झाबुआ-नरेश की दासी-पुत्री। एक नीच नारी।

**किशोरसिंह** : दुर्गा, जन्म के कारण कोई नीच-ऊँच नहीं होता। कर्म ही असली कसौटी है। तुम सचमुच महान् हो।

**दुर्गा** : महाराव, क्या एक नीच जाति की युवती स्वाधीनता के युद्ध में योग देने की अधिकारिणी है ?

**किशोरसिंह :** देश किसी एक जाति का नहीं है, दुर्गा। फिर इतनी ऊँची भावनाओं की स्वामिनी नारी को कौन नीच कह सकता है ? और तुम जानती हो हाड़ौती भगवान कृष्ण की आराधक है, जिन भगवान ने विदुर के घर भोजन किया—कभी नीची-ऊँची जाति का विचार नहीं किया। हम तो तुम में साक्षात लक्ष्मी को देखते हैं और जी करता है हम तुम्हारे चरण छू लें।

**दुर्गा :** महाराव, आज आपके मधुर वचन सुनकर उच्च वर्ण के लोगों के प्रति मेरे मन में जो क्रोध की ज्वाला भड़क रही थी वह सहसा शान्त हो गयी। एक बार माधोसिंह ने मुझे नीच समझकर मेरे जीवन के साथ खिलवाड़ करना चाहा था—और मेरे मन में व्यक्तिगत रूप से उससे तथा ऊँची जाति के प्रत्येक व्यक्ति से प्रतिशोध लेने की भावना प्रबल हो उठी थी। उसी भावना के वशीभूत मैंने गोवर्धन को माधोसिंह के विरुद्ध उत्तेजित किया। उसी उत्तेजना ने बढ़कर माधोसिंह और महाराव में संघर्ष कराया—और आग इतनी बढ़ी कि उस में अंग्रेज़ों की शक्ति भी आ टपकी। अब तो लपटें सब तरफ फैल गयी हैं। अब जो समस्या खड़ी हुई है—उसमें मेरी व्यक्तिगत समस्या तो जलकर भस्म हो गयी—अब तो देश की

स्वाधीनता का प्रश्न उपस्थित हो उठा है।

**किशोरसिंह :** तुम अद्‌भुत नारी हो, दुर्गा।

**दुर्गा :** महाराव, मुझ में कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं है। मैं तो दुर्बलताओं से भरी हुई एक साधारण नारी हूँ। मैं प्यार चाहती हूँ, सम्मान चाहती हूँ और स्वतन्त्रता चाहती हूँ। ख़ैर, इन बातों को जाने दीजिए और मेरे साथ राजकुमार पृथ्वीसिंह के कक्ष तक चलिए। उनसे भी परामर्श करके मैं आज ही दिल्ली जाना चाहती हूँ।

**किशोरसिंह :** किन्तु तुम्हीं ने तो कहा था मेरे और पृथ्वीसिंह के महलों पर पहरा है।

**दुर्गा :** हाँ, पहरा है किन्तु जो पहरेदार हैं वे वास्तव में हमारे अपने आदमी हैं और शत्रु अपना समझ बैठे हैं। आइए, आप बेधड़क मेरे साथ आइए।

**[दोनों का प्रस्थान।]**

**पट परिवर्त्तन**

## तीसरा दृश्य

**स्थान :** चंबल-तट

**समय :** संध्या

**[तट दिखाई नहीं देता केवल नदी किनारे की रेत और पत्थर दिखाई दे रहे हैं। नैपथ्य**

**से नदी के बहने का कलकल शब्द सुनाई देता है। राजकुमार पृथ्वीसिंह, सर्फ़ अली और मिर्ज़ा मोहम्मद अली का प्रवेश।]**

**पृथ्वीसिंह** : कल माधोसिंह महाराव के पास आया था और उनसे प्रार्थना करता था कि अब अंग्रेज़ों के साथ उस सन्धि पर हस्ताक्षर हो जाने चाहिएँ जिसके अनुसार उसे ज़ालिमसिंह जी के पश्चात् उत्तराधिकार में संरक्षक का पद प्राप्त हो जावे।

**सर्फ़ अली** : मैं तो जानता था यह झगड़ा खत्म नहीं होगा। महाराव को सच्चे माने में महाराव बनाने के लिए हम लोगों को अभी काफ़ी कुर्बानियाँ देनी पड़ेंगी।

**मोहम्मद अली** : ज़ालिमसिंह जी ने अपने मीठे अल्फ़ाज़ से महाराव का हृदय न जीत लिया होता तो हम लोग कभी हथियार नहीं डालते।

**पृथ्वीसिंह** : सुबह का भूला शाम को घर आ जाये तो उसे भूला नहीं कहना चाहिए। हम भटक अवश्य गये, इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारे हृदय से स्वाधीनता की रक्षा की भावना सदा के लिए समाप्त हो गयी। महाराव को जिस दिन दुबारा सिंहासन पर बैठाया गया था मैं तो उसी दिन से आशंकित था। मुझे तो एक क्षण के लिए भी एक भी अंग्रेज़ का हाड़ौती की

भूमि पर रहना स्वीकार नहीं। मेरी भुजाएँ तो उनसे युद्ध-भूमि में लोहा लेने के लिए प्रत्येक पल फड़कती रहती हैं।

**सर्फ़ अली :** महाराव का रुख देखकर हमारा चुप रहना ही मुनासिब था। जब एक बार हमने लड़ाई खत्म कर दी तो हमारा यही ज़ाहिर करना ठीक था कि हम हर तरह ज़ालिमसिंह और माधोसिंह के तरफ़दार हैं। मैंने तो कई बार आपके और गोवर्धन के खिलाफ़ भी बहुत बातें उन लोगों से कहीं।

**मोहम्मद अली :** और मेरा भी यही रवैया रहा।

**पृथ्वीसिंह :** तभी तो आज आप लोग राजपल्टन और हमारे तोपखाने के अध्यक्ष हैं—लेकिन सच पूछो तो मिर्ज़ा साहब मुझे यह सब छल-कपट पसन्द नहीं। मैं तो जो बात हृदय में हो उसे मुँह पर लाने में आगा-पीछा नहीं सोचता, चाहे इससे मुझे हानि ही क्यों न हो ?

**सर्फ़ अली :** हाँ, यही तो राजपूतों की फितरत है, लेकिन आजकल के ज़माने में साफ़दिली मुसीबतों को बढ़ाती है। हम आजकल माधोसिंह का दम भरते हैं—उसके हुक्म के पाबन्द दिखायी देते हैं—इससे बहुत से हाड़ा बहादुर हम से नाराज़ भी नज़र आते हैं लेकिन अगर हम ऐसा

न करते तो महाराव को आनेवाली मुसीबतों से न बचा पाते ।

**मोहम्मद अली :** और सच पूछो तो, राजकुमार पृथ्वीसिंह जी, आपकी और महाराव की ज़िंदगी ख़तरे में पड़ जाती । यह ज़ालिमसिंह बहुत ज़ालिम है । मुँह पर जितना मीठा है दिल के भीतर उतना ही ज़हरीला भी । कोटा राज्य को महफ़ूज़ और ख़तरे से बाहर रखने का बहाना बनाकर इसने हाड़ा सरदारों पर क्या-क्या जुल्म नहीं किये, बहुत लोगों का तो शक है कि आपके दादा साहब के कत्ल की साज़िश भी इन्होंने की थी ।

**सफ़र अली :** और सारा कसूर मढ़ा गया उनके घामाई जसकरन पर ।

**पृथ्वीसिंह :** क्योंकि वह बेचारे दासी-पुत्र थे और लोग समझते हैं दासी-पुत्र कैसा भी नीच काम कर सकते हैं । किन्तु यह भी सत्य है कि अपने हृदय में प्रत्येक हाड़ा समझता है कि स्वर्गीय महाराव उम्मीदसिंह—हमारे पिताश्री के, जो उस समय अल्पवयस्क थे, संरक्षक बनने के लिए ही ज़ालिमसिंह ने हमारे दादा जी की हत्या कराई ।

**मोहम्मद अली :** और इतना ही नहीं बूढ़े दीवान अखैराम को

भी जन्नत-नशीं कर दिया ताकि दीवानी के हुक़ूक भी उन्हें हासिल हो जावें।

**पृथ्वीसिंह :** यह साँप हाड़ाओं की राजगद्दी से ऐसा चिपटा कि इसे दूर करने की हर योजना बेकार गयी। आठौन के सामंत देवसिंह ने हाड़ौती के प्रायः सभी सामंतों को इस ज़ालिम के हाथों से कोटा की राजगद्दी को मुक्त करने के लिए एकत्रित करके एक बड़ी सेना भी संगठित की और विद्रोह का झण्डा खड़ा किया लेकिन इसने पिण्डारियों की सहायता लेकर उनके प्रयत्नों को विफल कर दिया और बेचारे देवसिंह को और उनके अनेक साथियों को प्राणों से हाथ धोना पड़ा। उसके पश्चात् मुहासेन के सामंत बहादुरसिंह ने बड़ी गुप्त रीति से इसको और उसके साथियों को दुनिया के परदे से उठा देने का प्रयत्न किया किन्तु इसे सुराग़ मिल ही गया और राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र करने के अपराध में अभागे बहादुर-सिंह और उनके साथियों को प्राणों से हाथ धोने पड़े। इस षड्यंत्र में हमारे काका जी को भी सम्मिलित सिद्ध किया गया और उन्हें सारा जीवन काल-कोठरी में बिताना पड़ा। यह साँप यद्यपि बूढ़ा हो गया है लेकिन इसकें ज़हर के दाँत टूटे नहीं हैं। अब यह चाहता है कि

इसके बाद इसका बेटा माधोसिंह कोटा की राजगद्दी से चिपटा रहे—लेकिन मैं किसी प्रकार ऐसा नहीं होने दूँगा।

**सफ़र अली :** इस साँप का बच्चा कम ज़हरीला नहीं है, इस ने अंग्रेज़ों को अपने साथ मिलाकर हमारे लिए बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी कर दी है।

**पृथ्वीसिंह :** इसमें संदेह नहीं कि हमारे सामने बहुत बड़ी कठिनाई है—फिर भी मेरा दृढ़ निश्चय है कि जीवन की अंतिम श्वास तक मैं इस साँप की थूथरी कुचल डालने का यत्न करूँगा। चाहे उस दिन महाराव और माधोसिंह गले मिले थे लेकिन मैं जानता हूँ आज तक हाड़ाओं का रक्त पीते रहने वाले इस साँप पर महाराव भी दया नहीं करना चाहते। उनका हृदय भी प्रतिशोध के लिए व्याकुल है। लोग कदाचित समझते हैं कि गोवर्धन ही हमें भड़काकर, ज़ालिमसिंह और माधोसिंह को उनके न्यायोचित अधिकारों से वंचित कराना चाहता है और स्वयं वे अधिकार प्राप्त करना चाहता है किन्तु वास्तविकता यह नहीं है। आज गोवर्धन भी अगर अपने पिता के पक्ष में होता तो वह भी हमारा शत्रु होता और हम उससे भी लोहा लेते।

[गोवर्धन और दुर्गा का प्रवेश। दोनों ही वेश बदले हुए हैं।]

**गोवर्धन** : राजकुमार पृथ्वीसिंह जी, गोवर्धन उपस्थित है। यदि ज़ालिमसिंह का पुत्र होना ही कोई अपराध है तो खुशी से उसका सर कलम कर दीजिए।

**सर्फ़ अली** : बहुत बड़ी उम्र है आपकी गोवर्धन। अभी राजकुमार आपकी ही बातें कर रहे थे।

**गोवर्धन** : हाँ, मैंने उसका कुछ अंश सुन लिया है। मेरे पिता जी की जो प्रशस्ति उन्होंने गाई उसके कारण मेरा मस्तक लज्जा से नत हो गया। पिता बदले नहीं जा सकते नहीं तो मैं तुरन्त बदल डालता। मैं अपनी माता को दिन में हज़ार बार कोसता हूँ कि उसने मुझे ऐसा कुपिता क्यों दिया।

**पृथ्वीसिंह** : और तुम्हारे पिता भी तुम्हारी माता को कोसते होंगे कि उसने उन्हें ऐसा कपूत क्यों दिया।

**मोहम्मद अली** : हर माँ-बाप की यह ख़्वाहिश होती है कि उनकी औलाद अच्छे और बुरे दोनों रास्तों में उनका साथ दे। साथ न देने वाले बेटे को वे कपूत ही कहते हैं।

**दुर्गा** : देश-द्रोही कहाने से कपूत कहाना ज़्यादा अच्छा है। मैं जो गोवर्धन का इतना सम्मान करती हूँ वह केवल इसलिए कि वह सत्य के मार्ग पर

चलने के लिए अपने पिता से भी विद्रोह करते हैं।

**गोवर्धन :** और मैं इस लड़की को इसलिए पसंद करता हूँ कि इसे मेरा कपूत होना पसंद है।

**[सब हँसते हैं।]**

**पृथ्वीसिंह :** ख़ैर, यह बताओ तुम दिल्ली से यहाँ कैसे आ सके ?

**गोवर्धन :** दुर्गा की कृपा से।

**सर्फ़ अली :** किन्तु अंग्रेज़ों का पहरा तो सर्फ़ अली के पहरे से ज्यादा कड़ा है। यहाँ मेरे पहरे में तो दुर्गा महाराव और राजकुमार पृथ्वीसिंह से मिलने में कामयाब हो सकती है—लेकिन दिल्ली में गोवर्धन से मिल पाना तो आसान काम नहीं था।

**दुर्गा :** यह सच है—और वास्तविकता यह है कि यत्न करने पर भी मैं दिल्ली में इनकी छाया भी न छू सकी।

**मोहम्मद अली :** तब इन्हें वहाँ से छुटकारा कैसे मिला ?

**गोवर्धन :** जनाब, मैं विवाह करने आया हूँ।

**पृथ्वीसिंह :** विवाह, किस से ?

**गोवर्धन :** दुर्गा से।

**[दुर्गा लज्जा से सर झुका लेती है।]**

**गोवर्धन :** दुर्गा ने अपने पिता झाबुआनरेश से अंग्रेज़ी शासन को पत्र लिखवाया कि वह अपनी पुत्री

का विवाह उनके बंदी गोवर्धन से करना चाहते हैं, उन्हें झाबुआ आकर विवाह करने की अनुमति दी जावे ।

**पृथ्वीसिंह** : और अंग्रेज़ों ने अनुमति दे दी ।

**गोवर्धन** : उन्होंने मेरे पिता जी से पूछा और उनकी स्वीकृति से मुझे झाबुआ आने की आज्ञा मिल गयी ।

**सर्फ़ अली** : लेकिन इस समय तो आप कोटा राज्य में हैं और मुझे हिदायत है कि आप हाड़ौती की हद में पैर रखें तो आपको गिरफ्तार कर लूँ ।

**गोवर्धन** : आपकी प्रभु-भक्ति का सारा वृत्तान्त मुझे दुर्गा ने सूचित कर दिया है । एक बार पिता ने मुझे अंग्रेज़ों के हाथों से हथकड़ियाँ डलवाई थीं—इस बार आप यह शौक पूरा कर लीजिए मैं तो जब तक जीवन के बंदीगृह से छुटकारा नहीं पाता तब तक किसी न किसी के बंधन में रहूँगा ही । यह मेरे भाग्य में लिखा है ।

**पृथ्वीसिंह** : अभी तो तुम दुर्गा के हाथ से हथकड़ियाँ पहनो ।

**गोवर्धन** : किन्तु दुर्गा कहती है मुझे विवाह की सौगात में माधोसिंह का मस्तक चाहिए ।

**सर्फ़ अली** : बड़ी ज़ालिम शर्त है ।

**गोवर्धन** : हाँ, ज़ालिम है ।

**मोहम्मद अली** : क्योंकि शर्त पूरी करने से ज़ालिमसिंह पर जुल्म होना है ।

[**गोवर्धन को छोड़कर सब हँस पड़ते हैं।**]

**पृथ्वीसिंह** : क्यों गोवर्धन, तुम क्यों नहीं हँस सके ? क्या पिता के प्रति प्रेम उमड़ आया ?

**गोवर्धन** : राजकुमार, क्या आप समझते हैं मैं मनुष्य नहीं हूँ। आप यह क्या कल्पना करते हैं कि पिता के लिए मेरे हृदय में प्रेम नहीं है। पुत्र के नाते मैं अपने पिता को अवश्य प्यार करता हूँ।

**पृथ्वीसिंह** : और कहीं यह प्यार अचानक युद्ध-भूमि में ज़ोर मार गया तो हमारी तो नैया ही डूब जायगी।

**गोवर्धन** : आप ऐसा संदेह मुझ पर करते हैं ?

**पृथ्वीसिंह** : भाई तुम मनुष्य हो न।

**दुर्गा** : हाँ, ये मनुष्य हैं—लेकिन राक्षस नहीं। ये समझते हैं कि जो देशद्रोह करता है वह हमारा कितना भी प्रिय हो उस पर दया नहीं की जा सकती। प्यार तो ज़ालिमसिंह जी भी इनको कम नहीं करते—लेकिन उन्होंने इन्हें बंदी बनवाने में कम संकोच किया।

**पृथ्वीसिंह** : हम आशा करते हैं कि रणभूमि में ये अपने पिता का मस्तक काटकर उनके चरण छूएँगे।

**दुर्गा** : अभी से क्या कहा जा सकता है कि कौन किस का मस्तक काटेगा। अभी तो हम यही कह सकते हैं कि हम हथेली पर सर लिये स्वाधीनता के संग्राम में प्रवेश करेंगे। ख़ैर, ये बातें तो फिर भी हो सकेंगी—हमें शीघ्र ही वापिस

झाबुआ पहुँचना है। अभी महाराव के दर्शन कर तुरन्त ही भावी योजना निश्चित कर ली जाय तो समय का अधिक सदुपयोग हो।

**पृथ्वीसिंह** : हाँ, हाँ, हमें तुरन्त चलना चाहिए।

**[सब का प्रस्थान।]**

**पट परिवर्त्तन**

## चौथा दृश्य

**स्थान** : ज़ालिमसिंह के तम्बू के बाहर का मैदान

**समय** : संध्या

**[माधोसिंह और ज़ालिमसिंह वार्तालाप में संलग्न हैं।]**

**माधोसिंह** : पिता जी, आपने कहा था जिसे शहद पिलाकर मारा जा सकता है उसे ज़हर देकर मारने और बदनाम होने से क्या लाभ। महाराव किशोर-सिंह कुछ समय व्यतीत होने पर मुझे वे सब अधिकार हस्तांतरित कर देंगे जो आपको स्वर्गीय महाराव उम्मीदसिंह के राज्य-काल में प्राप्त थे, किन्तु वह तो अपनी हठ से तिल भर भी नहीं हटते।

**ज़ालिमसिंह** : बेटा, हम झालाओं के प्रति हाड़ाओं के अविश्वास की जड़ें बहुत गहरी हैं। हाड़ा इस प्रदेश के शासक हैं, वे इस बात को कैसे भूल सकते हैं ?

**माधोसिंह** : किन्तु, झालाओं ने भी तो कोटा राज्य की सुरक्षा और सम्मान के लिए कम बलिदान नहीं किए हैं।

**जालिमसिंह** : इसका उन्हें समुचित पुरस्कार भी तो मिला है।

**माधोसिंह** : यह पुरस्कार नहीं, पिता जी, हमारा रक्त से अर्जित किया हुआ अधिकार है। हम इसे किसी प्रकार भी नही छोड़ सकते। हमने अपनी तलवार और बुद्धि से कोटा राज्य को अनेक विपत्तियों से बचाया है। हाड़ाओं को यह नही भूलना चाहिए कि झालाओं की तलवार और बुद्धि कोटा राज्य के लिए संकट भी बन सकती है।

**जालिमसिंह** : यही बात तो हाड़ा नही भूल पाते। प्रत्येक क्षण वे अनुभव करते हैं कि उनके मस्तक पर झालाओं की तलवार लटकी हुई है। वे जैसे भी बने इस निरन्तर बने रहने वाले भय से मुक्ति चाहते हैं। मै जब स्वर्गीय महाराव उम्मीद-सिह का संरक्षक घोषित किया गया था उस समय वह अल्पवयस्क थे और मेरे संरक्षण को अपनी सुरक्षा समझ सकते थे। मैंने उनके चारों ओर ऐसा वातावरण बना रखा था कि वह समझें कि उनके सगे-सम्बन्धी उनकी गद्दी की तरफ लालच की नज़र से देखते हैं और उनके प्राणों के ग्राहक हैं—बिना मेरी सहायता

के उनके मस्तक पर राजमुकुट स्थिर नहीं रह सकता था।

**माधोसिंह :** आज भी तो कोटा राज्य की स्थिरता हमारी सद्भावना पर ही निर्भर है—आज अंग्रेज़ हमारी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करने को प्रस्तुत हैं। फिर किस लिए महाराव अपनी स्वतन्त्र इच्छा से चलना चाहते हैं।

**ज़ालिमसिंह :** इसका कारण है कि जब इन्हें गद्दी प्राप्त हुई तब यह अल्पवयस्क नहीं थे। बचपन से इनमें स्वतन्त्र सत्ता का उपभोग करने की लालसा प्रस्फुटित और विकसित होती रही है। इन्होंने स्वर्गीय महाराव उम्मीदसिंह की भाँति अपने आस-पास के संसार से आँखें बन्द नहीं रखीं—इन्होंने देखा कि तुम्हें जो ऐश्वर्य और सांसारिक सुखों की प्राप्ति हुई है वह उन्हें राजवंश में जन्म लेने पर भी प्राप्त नहीं हो सकी। यह अन्तर इनके हृदय में काँटे की तरह खटकता रहा है। यह कभी तुम्हारे प्रति सदय नहीं हो सकते।

**माधोसिंह :** किन्तु हमें इनकी दया की अपेक्षा क्यों करनी चाहिए ? हमने हमारे भाग्य का निर्णय उसी दिन कर लिया होता जब महाराव और उनके साथी दुर्ग के फाटक को खोलकर हमारी और अंग्रेज़ों की सेना को चुनौती देते हुए

सामने आए थे। हमारे तोपखाने ने इन्हें भूनकर रख दिया होता। न महाराव रहते, न गोवर्धन, और न पृथ्वीसिंह। सभी को स्वर्ग की सीढी पर पाँव रखना पड़ता।

**जालिमसिंह :** और सदा के लिए हमारे मस्तक पर कलंक का टीका लग जाता। राजस्थान भर में एक भी राजपूत ऐसा न मिलता जिसके हृदय में हमारे प्रति सम्मान और स्नेह का लेशमात्र भी बच पाता। वह स्थिति तो हमारे लिए मृत्यु से भी भयानक ही होती।

**माधोसिंह :** हमारी तलवार सबका मुँह बंद कर देती। तब कोटा की राजगद्दी पर हाड़ा नहीं भाला होते। जब अंग्रेज़ हमारे साथ हैं तो किसका साहस है कि कोई हमारी तरफ़ उँगली भी उठा पाए।

**जालिमसिंह :** बेटा, तुम अंग्रेज़ों को अभी नहीं जान पाए हो। वह आज हमारे मित्र हैं तो केवल इसलिए कि आज उन्हें हमारे सहयोग की आवश्यकता है न कि इसलिए कि उनका हम पर स्वाभाविक स्नेह है। हमारे और उनके बीच स्नेह होने का कोई कारण भी तो नहीं। वे समुद्र पार से आए हैं, उनकी संस्कृति, उनकी भाषा, उनके हित सभी कुछ भिन्न हैं। यदि आज वह हम पर कृपा करते हैं तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि वह

हमारा उपयोग अपने हित में करना चाहते हैं। यह उनकी स्वार्थपरता है।

**माधोसिंह :** तो आप क्या चाहते हैं, मैं भी उनसे विद्रोह करूँ ?

**जालिमसिंह :** उनसे विद्रोह करना भी किसी प्रकार सम्भव नहीं, बेटा। जिस क्षण उन्हें ज्ञात होगा कि हम उन्हें शत्रु समझते हैं उनकी तोपों का मुँह हमारी तरफ़ होगा और कदाचित तुम नहीं जानते कि अंग्रेज़ राजाओं की स्वतन्त्र भावना को एक बार सहन भी कर सकते हैं लेकिन हम लोगों को नहीं—जिनके हाथ में कुछ शक्ति तो है लेकिन मस्तक पर राजमुकुट नहीं। अंग्रेज़ों को राजाओं से भय नहीं है—वे उनके लिए काल के थपेड़ों से भूमिसात् होने की प्रतीक्षा में खड़े हुए खण्डहर हैं। वे तो उन्हें कभी भी मिट्टी में मिला सकते हैं—लेकिन हम जो जनसाधारण से मिलते हैं, उन से दुख-सुख की बातें करते हैं, उनके लिए संकट है। उन्हें तो भारत के जनसाधारण के पसीने की कमाई लूट-लूटकर इंग्लैण्ड भेजनी है। वे नही चाहते कि जनसाधारण में उनके प्रति अविश्वास और असंतोष पैदा हो। सो बेटा, यदि हमने अंग्रेज़ों से जरा भी कन्नी काटी तो समझ लो हमारा सर्वनाश निकट है।

**माधोसिंह** : फिर भी क्या हमें कोटा राज्य में आज तक जो अधिकार प्राप्त थे, उन्हें छोड़ देना चाहिए ।

**जालिमसिंह** : तुम छोड़ना भी चाहोगे तो अंग्रेज़ छोड़ने नही देंगे, तुम्हारी इस उदारता को वह अंग्रेज़ों के प्रति विद्रोह समझेंगे ।

**माधोसिंह** : तब हमें करना क्या चाहिए ?

**जालिमसिंह** : प्रतीक्षा । बेटा, अब मेरे जीवन का अंतिम दिन सन्निकट है । मेरे सामने अतीत की तस्वीरें निरंतर घूमती रहती हैं । सत्ता प्राप्ति के मद ने मुझ से कितने अनर्थ कराए यह मैं जानता हूँ । हाड़ाओं के हृदय में मेरे प्रति जो संदेह, अविश्वास और विरोध की भावनाएँ हैं वे बिना कारण तो नहीं । मेरे हाथ हाड़ाओं के रक्त से रंगे हुए हैं और रक्त-रंजित हाथों से ही मैंने स्वर्गीय महाराव उम्मीदसिंह के मस्तक पर राजतिलक किया था और उन्हीं से महाराव किशोरसिंह का अभिषेक भी किया ।

**माधोसिंह** : पिता जी, हाड़ाओं ने जब कोटा राज्य की स्थापना की थी तो उन्होंने भी तो भील और मीनाओं के शवों पर ही अपना राज-सिंहासन रखा था । यदि आज हम हाड़ाओं के शवों पर अपनी सत्ता का सिंहासन रखें तो इसमें अस्वाभाविक क्या है, अनुचित क्या है ?

**जालिमसिंह** : ऐसा किया जा सकता तो कदाचित् अस्वाभाविक

और अनुचित न होता। राज्यों की स्थापना के पीछे भयानक नर-संहार की कहानियाँ छुपी हुई हैं। किन्तु नर-संहार के पश्चात् भी झाला हाड़ाओं के सिंहासन पर नहीं बैठ सकते। हम सत्ता के जिस शिखर तक चढ़ सकते थे, चढ़ चुके हैं। इससे ऊपर चढ़ने की लालसा आत्म-हत्या है।

[ अंग्रेज एजेंट का प्रवेश ]

**अंग्रेज एजेंट :** हल्लो ज़ालिमसिंह और माधोसिंह, तुम लोग यहाँ पर मजे से आराम करता है और उधर कोटा के राजमहलों में क्या साज़िश हो रहा है इसका तुम को पटा भी नहीं।

**ज़ालिमसिंह :** क्या साज़िश हो रही है ?

**अंग्रेज एजेंट :** बगावट। तुम्हारा गोवर्धन विवाह करने की अनुमति लेकर झाबुआ आया और मालूम है वह इस वखट कहाँ है ?

**ज़ालिमसिंह :** हमें तो इतना ही ज्ञात है कि वह झाबुआ में है।

**अंग्रेज एजेंट :** हम ने सुना था कि हाड़ौती में ज़ालिमसिंह की इच्छा के विरुद्ध एक पट्टा भी नहीं हिल सकटा लेकिन वह सब झूठ साबिट हुआ। यहाँ का हर पट्टा अंग्रेजों का डुशमन है।

**माधोसिंह :** यह आपका भ्रम है। अंग्रेज़ जिनके मित्र हैं, जिन पर कृपा करते हैं वे उनके लिए प्राण देने को प्रस्तुत हैं।

**अंग्रेज़ एजेंट :** लेकिन हम कहटा है यह जान देने का नोबट क्यों आना चाहिए। अंग्रेज़ अपनी हिफ़ाजट करना जानटा है। उसको चिन्टा है टो उनकी जिनकी हिफ़ाजट करने का बीड़ा उसने उठा रखा है।

**जालिमसिंह :** बात क्या है ? स्पष्ट कहिए।

**अंग्रेज़ एजेंट :** आपने वचन डिया था—महाराव अंग्रेज़ों का डोस्ट बनकर रहेगा। गोवर्धन कभी हाड़ौटी में नहीं आएगा। सर्फ़ अली और मिर्ज़ा मोहम्मद अली हमारा वफादार होकर रहेगा, इसीलिए उनके हाथों में कोटा की राजपल्टन और टोप-खाने को सौपा गया। आज ये सब लोग मिलकर एक हो गया है और लड़ाई करने का टैयारी करटा है।

**माधोसिंह :** क्या यह ठीक है कि गोवर्धन इस समय कोटा के राजमहल में है।

**अंग्रेज़ एजेंट :** हाँ, है। हमारा जासूस खबर लाया है। हम तुम लोगों का टरह सोटा नहीं रहटा। हम अपनी आँखें हमेशा खुला रखटा है।

**माधोसिंह :** मै इसी समय राजमहल में जाकर गोवर्धन को दण्ड देना चाहता हूँ।

**अंग्रेज़ एजेंट :** (हँसकर) माधोसिंह, तुम से गोवर्धन ज्यादा चटुर है। तुम अगर राजमहल में गया टो जिडा वापस नहीं आ सकटा। ठण्डे दिमाग से

सोचने की ज़रूरत है। पिछली लड़ाई में ज़ालिमसिंह के कहने से हमने महाराव को माफ़ कर डिया—और हमें ऊपर से भी यही आडेश मिला था—लेकिन इस वार हमें उनको माफ़ नहीं करना होगा।

**ज़ालिमसिंह :** गोवर्धन सचमुच हाड़ौती के लिए धूमकेतु है। यह सर्वनाश कराए बिना शांत नहीं होगा।

**अंग्रेज एजेंट :** हम उसे हमेशा के लिए शांट कर डेगा। हम कोटा के किले का ईट से ईट बजा डेगा। ज़ालिमसिंह, हमने टुमारी राजपल्टन का कभी भरोसा नहीं किया। हम जानटा था कि इस अभिमानी और बुद्धिहीन महाराव, मटवाले पृथ्वीसिंह और चालाक गोवर्धन के डिलों में जलने वाली आग अभी टण्डी नहीं हुई। यह एक बार फिर भड़केगी। हमने इसका मुकाबला करने का सब इंटज़ाम कर रखा है। हमने डिल्ली से और फ़ौज मँगाया है। इस बार हम इस बगावट का मुँह टोड़कर रहेगा। आओ, माधोसिंह, टुम हमारे साथ आओ।

**ज़ालिमसिंह :** लेकिन मुझे एक अवसर और प्रदान कीजिए। मैं चाहता हूँ कि मेरे जीते-जी यह रक्त-वर्षा न हो।

**अंग्रेज एजेंट :** टुम डर रहा है ज़ालिमसिंह। इस बूढ़ा शेर में डम नहीं रहा।

**जालिमसिंह** : राजपूत कभी बूढा नहीं होता ।

**अंग्रेज एजेंट** : टब टुम अपने बेटे गोवर्धन की चिंटा करटा है ।

**जालिमसिंह** : चिन्ता करने से भी क्या मैं उसे बचा सकूँगा । उसने जब ठान ली है कि वह जीवन का बलिदान करेगा—तब उसे ब्रह्मा भी नहीं रोक सकता—लेकिन मैं देखता हूँ, छोटी सी बात पर सहस्त्रों लोगों की हत्या क्यों हो ? मुझे जितनी हाड़ौती के वासियों के प्राणों की चिन्ता है उतनी अंग्रेजों के प्राणों की भी । मैं चाहता हूँ युद्ध का अवसर न आवे ।

**अंग्रेज एजेंट** : नही ज़ालिम, इस बार हम टुमको शत्रु के डेरे में नहीं जाने डेगा । उन्होंने टुम को, माधोसिंह को और हरेक अंग्रेज़ को मार डालने का टय किया है । उन्होंने बहोट भयानक टैयारी किया है । सिर्फ किले के अण्डर ही नहीं बाहर भी भील मीनाओं की नयी पल्टन उन्होंने बनाया है । इस बार लड़ाई बहोट सख्ट होगा ।

**माधोसिंह** : तब तो हमें इसका प्रतिकार करना ही होगा । चलिए, मै प्रस्तुत हूँ ।

[**अंग्रेज एजेंट और माधोसिंह का प्रस्थान ।**]

**जालिमसिंह** : सचमुच परिस्थिति भयंकर है । इस युद्ध को टाला नहीं जा सकता । भयानक से भयानक परिस्थिति में भी मेरी बुद्धि ने मुझे धोखा नहीं दिया—किन्तु इस बार अंधकार अत्यन्त गहन

है और कहीं से प्रकाश की एक किरण भी नज़र नहीं आती। गोवर्धन और माधोसिंह—मेरे दोनों ही पुत्र हाड़ौती के लिए दुष्ट नक्षत्र हैं। जी चाहता है दोनों का गला घोंट दूँ—लेकिन पिता हूँ, मैं अपने हाथ से अपनी आँखें नहीं फोड़ सकता। तब, तब जाऊँ श्रीजी के चरणों में। उन्हीं से आदेश लूँ।

**[जालिमसिंह का प्रस्थान।]**

**पट परिवर्त्तन**

## पाँचवाँ दृश्य

**स्थान** : काली सिंध नदी के पूर्वी तट पर महाराव किशोरसिंह का डेरा

**[महाराव किशोरसिंह, सर्फ़ अली, मिर्ज़ा मोहम्मद अली, गोवर्धन और दुर्गा तथा कुछ और हाड़ा सामंत वार्त्तालाप कर रहे हैं।]**

**महाराव** : पूरे दो मास से हमारा अंग्रेज़ों की विशाल शक्ति से संघर्ष चल रहा है। पहली एक-दो मुठभेड़ों में हमें विजय प्राप्त हुई। अंग्रेज़ी सेना के पाँव उखड़ गए किन्तु फिर भी युद्ध समाप्त तो न हो सका। आज की लड़ाई ने हमारी सेना के धैर्य को समाप्त कर दिया।

**गोवर्धन** : आज भी विजय हमें वरमाला पहनाती—लेकिन हमारी सेना के संचालक राजकुमार पृथ्वीसिंह

के आहत होकर घोड़े से गिर पड़ने के पश्चात् हमारे योद्धाओं के पाँव उखड़ गये, और हमारी विजय पराजय में परिणत हो गयी।

**महाराव** : हमारा भाई हाड़ाओं की वीर परम्परा के अनुसार शत्रु सेना में तोर की भाँति प्रवेश कर गया और उसके साथ पच्चीस से अधिक युद्ध के दीवाने हाड़ा ही जा सके। पृथ्वीसिंह आहत होकर शत्रु के हाथों पड़ गया है। पता नहीं वह आज जीवित भी है या नहीं। मेरा हृदय उसके लिए आशंकित और व्याकुल है। कितनी बड़ी कीमत हमें अपनी हठ के लिए देनी पड़ रही है। सोचते हैं किस लिए यह सम्पूर्ण रक्तपात किया जा रहा है।

**दुर्गा** : महाराव, भाई के स्वर्गवास की संभावना पर विचलित होना प्रत्येक मनुष्य के लिए स्वाभाविक है। राजकुमार पृथ्वीसिंह जैसे सर्वप्रिय, महान् हृदय और वीर शिरोमणि अनुज के लिए आपको शोकाकुल होना तो सर्वथा स्वाभाविक है। वह शक्ति के पुंज रहे हैं। उनकी अंगारों की भाँति प्रज्वलित आँखों के एक इशारे से हमारी सेना में स्फूर्ति का समुद्र उमड़ता रहा है। आज शत्रु ने उन्हें हम से छीन लिया है। हमारी यह बहुत बड़ी हानि है।

**सर्फ़ अली** : महाराव, हमारी जो थोड़ी सी तोपें बची थी—वे भी दुश्मनों के हाथों पड़ गयी हैं। हमारी दो महीने की लगातार लड़ाइयों से थकी हुई फ़ौज—जिसे फ़ौज नही कहा जा सकता—अब मैदान में अंग्रेज़ों का मुक़ाबला नहीं कर सकती।

**मोहम्मद अली** : और जिन राजाओं ने हमें मदद देने के वादे किए थे वे लोग अपने घोंसलों से बाहर भी नहीं निकले।

**गोवर्धन** : किन्तु हाड़ौती का प्रत्येक नर-नारी आज हमारे साथ है। हमें निराश होकर हथियार नहीं डाल देने चाहिएँ। राजकुमार पृथ्वीसिंह का कथन याद करो जो सदा ही कहा करते थे पराधीन होकर जीवित रहने से मृत्यु श्रेयस्कर है।

**महाराव** : गोवर्धन, हम यह तो नही कहते कि हमें पराधीनता की बेड़ियाँ पहन लेनी चाहिएँ। हाड़ा होने के नाते हम प्रत्येक परिस्थिति में अपनी आन के लिए प्राण चढ़ाने को प्रस्तुत हैं—किन्तु साथ ही सोचते हैं हम अपनी हठ के लिये हाड़ौती के निरपराध लोगों के रक्त से इस धरती को लाल क्यों होने दें। आज हमारा भाई हम से छिन गया है—लक्ष्मण जैसा भाई। लंका में जब लक्ष्मण को शक्ति-बाण लगा था उस समय राम की जो दशा हुई थी, वही इस समय हमारी है। राम तो लक्ष्मण को फिर पा गये

थे लेकिन हम तो कदाचित अपने अनुज को फिर नहीं पा सकेंगे ।

**एक सामंत :** क्षत्रिय को इतना व्याकुल नहीं होना चाहिए । इस धरती पर जब तक एक भी हाड़ा जीवित है तब तक अंग्रेज हाड़ौती की भूमि में पैर नही जमा पावेंगे । राजकुमार पृथ्वीसिंह ने गत दो महीनों में जिस तरह के अवतार बनकर शत्रु दल से संघर्ष किया और उनकी तलवार ने जिस तरह सहस्रों को मृत्यु की गोद में सुलाया उसकी स्मृति हमारे प्राणों को सदैव उत्साहित करती रहेगी ।

**महाराव :** हम जानते है कि जिस तरह हमारा अंतःकरण प्रतिशोध की भावना से प्रज्वलित है उसी प्रकार हाड़ौती के प्रत्येक वासी का भी । किन्तु हम समझते हैं कि तलवार का उत्तर तलवार से देकर हम अंग्रेज़ों से भारत को मुक्त नहीं कर सकेंगे । इसके लिए किसी और भी बड़ी शक्ति की आवश्यकता है । युद्ध का परिणाम तो विजेता और पराजित दोनों के लिए भयानक है ।

**दुर्गा :** एक क्षत्रिय के मुख मे हम क्या सुन रहे हैं ? आज आपके पूर्वज क्या कहते होंगे ?

**महाराव :** दुर्गा, तुम नारी हो । अपनी स्वाभाविक कोमलता को त्यागकर तुमने हाथों में तलवार पकड़ी है,

फिर भी तुम्हारे अंतःप्रदेश में चिर जागृत कोमलता नष्ट नहीं हो गयी ऐसा हमारा विश्वास है। तुम तो हाड़ौती के हृदय में प्रवेश पा सकी हो। तुमने देखा है कि गरीब जन-साधारण की इस युद्ध से क्या स्थिति हुई है। हाड़ौती का एक भी घर ऐसा नहीं जिसके घर का कोई दीपक इस समर की आँधी से बुझा नहीं। प्रत्येक घर में मातम का अँधेरा छा रहा है।

**गोवर्धन** : तब क्या महाराव युद्ध बंद कर देना चाहते हैं?

**महाराव** : हम युद्ध समाप्त नहीं करेंगे लेकिन इस युद्ध में हम उन लोगों की बलि नहीं लेना चाहते—जिनका इस गृह-कलह से कोई सम्बन्ध नहीं है। कोटा की राजगद्दी के लिए होने वाले युद्ध को अकेला महाराव लड़ेगा।

**सर्फ अली** : अकेले महाराव!

**महाराव** : हाँ सर्फ़ अली, अकेला महाराव। हम अपनी इच्छा से राजगद्दी का त्याग करेंगे। पराधीन होकर गद्दी पर बैठने से उसे त्याग देना उचित है।

**दुर्गा** : तब तो शत्रु उस गद्दी पर आसीन होंगे।

**महाराव** : दुर्गा, युद्ध करने के पश्चात् भी तो वही होने वाला है। जब परिणाम सुनिश्चित है तब इसे बिना रक्तपात के ही क्यों न अंगीकार किया जावे?

**गोवर्धन :** यह तो पराजित मनोवृत्ति है, महाराव ।

**महाराव :** नहीं गोवर्धन, पराजय और त्याग में अंतर है । हम अंग्रेजों की शर्तें मानकर अपने मस्तक पर राजमुकुट धारण किए रहे तो यह पराजय है और यदि सत्ता को त्यागकर अपने आपको श्रीजी के चरणों में समर्पित कर दें तो यह पराजय नहीं है ।

**दुर्गा :** शत्रु के लिए मार्ग खुला छोड़ देना कायरता ही है, महाराव ।

**महाराव :** लेकिन हम मार्ग कहाँ छोड़ रहे हैं । हमारी आत्मा सदा संघर्ष करती रहेगी । हम भगवान कृष्ण के अनुगामी हैं, उन्हें भी एक दिन रण-भूमि को छोड़ना पड़ा था—तभी तो रण-छोड़ कहलाए । समय आने पर उन्हीं रण-छोड़ ने शत्रु का अंत किया । उन्हीं रणछोड़ ने अर्जुन को गीता का ज्ञान देकर युद्ध करने की प्रेरणा दी । दुर्गा, तुम्हारे अंतःकरण में स्वाधीनता के लिए युद्ध करने की जो स्वाभाविक प्रवृत्ति है उसका हम आदर करते हैं । भगवान करे यह प्रवृत्ति प्रत्येक भारतीय में जागृत हो ।

**दुर्गा :** किन्तु इस समय यदि हम युद्ध से विरत हुए तो भारत की स्वाधीनता-प्रेम की भावना को ठेस लगेगी । वह मूर्छित हो जायगी । महाराव, स्वाधीन-भावना को चिर-जागृत रखने के लिए

हमें संग्राम-रत रहकर अपनी साधना में अपने प्राणों की बलि देना नितान्त आवश्यक है। आपके पूर्वज पृथ्वीराज चौहान के वीर-गति पाने पर चौहानों के हाथ से दिल्ली का साम्राज्य चला गया—किन्तु उनकी वीरता की कहानी आज भी भारतीयों को अनुप्राणित करती है। दूर जाने की क्या आवश्यकता है, अस्सी लड़ाइयों के विजेता छत्रसाल हाड़ा ने अंत में सत्य का साथ देने, दाराशिकोह की मित्रता निभाने में अपने प्राणों की बलि दे दी—क्या वह बलि व्यर्थ गयी। महाराव, हमारा कार्य अन्याय और असत्य के आगे मस्तक नहीं झुकाना है और उससे संघर्ष करते हुए अपने प्राण चढ़ाने है। माना आज हम अपने देश की स्वाधीनता की रक्षा नहीं कर पाएँगे। लेकिन फिर भी हमें रक्त देना है—क्योंकि भूमि रक्त माँगती है। रक्त पीकर ही यह भूमि स्वतन्त्रता का फल देगी।

**महाराव** : दुर्गा, तुम महान् हो।

**दुर्गा** : नही महाराव, मै तो एक नीच नारी हूँ।

**महाराव** : नहीं, तुम अगर नीच हो तो संसार में ऊँचा कोई नहीं है।

**गोवर्धन** : ऊँचे तो ज़ालिमसिंह और माधोसिंह हैं जो नीच करतूतें करते हुए ऊँचाई की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं।

**[जालिमसिंह और माधोसिंह का प्रवेश। माधोसिंह के हाथ में एक थाल है जो कपड़े से ढका हुआ है और जालिमसिंह के हाथ में रक्त से रंजित तलवार है।]**

**जालिमसिंह** : नीच जालिमसिंह महाराव के चरणों में प्रणाम करता है।

**माधोसिंह** : और नीच माधोसिंह भी दण्डवत् करता है।

**महाराव** : आपको यहाँ आते हुए भय नहीं हुआ ?

**जालिमसिंह** : जो मृत्यु को गले लगाने निकलता है उसे किसी का भय नहीं होता। बेटा, किशोरसिंह, मैं तुम्हें यह दुखद समाचार देने आया हूँ कि राजकुमार पृथ्वीसिंह वीर-गति को प्राप्त हो गये।

**महाराव** : हाय भैया !

**जालिमसिंह** : यह है राजकुमार की रक्त-रंजित तलवार जिस ने अंतिम क्षण तक अपने शत्रुओं से लोहा लिया—तुम इसी तलवार से हम दोनों नारकीय कुत्तों का मस्तक काट दो, किशोरसिंह !

**माधोसिंह** : और इस थाल में उनकी अँगूठी और उनका कण्ठहार है। मैं भी महाराव से अपने अपराध के लिए दण्ड की याचना करता हूँ। राजकुमार पृथ्वीसिंह के बलिदान ने मेरी आँखें खोल दी हैं। वह वास्तविक क्षत्रिय थे। जब तक उनके हाथ में तलवार रही कोई उनके सामने टिक

नहीं सका लेकिन किसी ने पीछे से उनकी पीठ पर वार करके उन्हें आहत कर दिया और वह घायल होकर गिर पड़े।

**दुर्गा** : पीठ पर आक्रमण करने वाला व्यक्ति अवश्य कोई आप लोगों का ज़रखरीद व्यक्ति होगा जो हमारा बनकर हमारे दल में शामिल होगा।

**माधोसिंह** : मुझे लज्जा के साथ कहना पड़ता है कि आप का अनुमान सत्य है।

**गोवर्धन** : अंग्रेज़ों की विशाल सेना साथ रखकर भी तुमको यह नीचता करनी पड़ी!

**माधोसिंह** : मनुष्य प्रतिहिंसा में विवेक को भूल जाता है, गोवर्धन। मुझे अपनी नीचता पर पश्चात्ताप है। राजकुमार ने अंतिम श्वास लेते हुए कहा—'माधोसिंह, क्षत्रिय किसी की पीठ पर वार नहीं करता। वह सिंह के समान सामने से लड़ता है। तुम ने क्षत्रियत्व को कलंकित किया है। हो सकता है अंग्रेज़ों की सहायता से तुम कोटा की राजगद्दी पर बैठ जाओ लेकिन यदि सचमुच तुम्हारे शरीर में क्षत्रिय रक्त है तो तुम्हारी आत्मा तुम्हें क्षमा नहीं करेगी। तुम्हारी राजगद्दी में से लपटें निकलती जान पड़ेंगी। तुम जीवन भर झुलसोगे।' मैं तभी से झुलसा जा रहा हूँ। महाराव, दया कर राज-

कुमार पृथ्वीसिंह की तलवार से ही मेरा वध कर इस ज्वाला से बचाइए।

**महाराव :** भैया का शव आप यहाँ क्यों नहीं लाए ?

**जालिमसिंह :** महाराव, राजकुमार की इच्छा थी कि जिस पेड़ के नीचे उनके जीवन का अंत हुआ उन्हें वहीं चिता पर जलाया जाय। उनका कहना था—'मेरी प्रेतात्मा सदा ही इस पेड़ पर बैठ कर हाड़ौती की भूमि को युग-युग तक देखती रहेगी। मुझे मुक्ति नहीं चाहिए। मरकर मैं अपनी जन्मभूमि से पृथक् नहीं होना चाहता।

**दुर्गा :** धन्य हो राजकुमार पृथ्वीसिंह।

**जालिमसिंह :** बेटा किशोरसिंह, मैं नहीं जानता तुम मुझ पर और माधोसिंह पर विश्वास कर सकोगे या नहीं लेकिन मैं अपने अंतर्तम से कहता हूँ कि हम दोनों की सत्ता की भूख समाप्त हो गयी। मैं तो तुम्हारे हाथों अपना वध चाहता हूँ—या फिर नाथद्वारे जाकर श्रीजी के चरणों में शेष घड़ियाँ काटना चाहता हूँ। बताओ, तुम्हें दोनों में से कौनसी बात प्रिय है ?

**माधोसिंह :** **(अपनी कमर से तलवार निकालकर महाराव के चरणों में रखकर)** यह है तलवार जो कोटा राज्य ने मुझे प्रदान की थी—इसने कोटा राज्य का ही अहित किया। मैं इसको वापस करता हुआ अपने कृत्यों के लिए क्षमा चाहता

हूँ। मैं अपना जीवन आपको सौंपता हूँ। आप राजकुमार पृथ्वीसिंह की रक्त-रंजित तलवार से या स्वयं मेरी तलवार से मेरा मस्तक काट दीजिए।

**महाराव :** नाना जी, किशोरसिंह योद्धा है, हत्यारा नहीं। युद्ध-भूमि में लोहा लेता हुआ वह आप दोनों के मस्तकों को धड़ से उड़ा देने में संकोच नहीं करेगा लेकिन शरण में आए हुए पर वह हाथ नहीं उठाएगा। लीजिए, यह राजमुकुट (**मस्तक से उतारकर**) इसे अपने आश्रित रखने के लिए आप अंग्रेज़ों को लाए—और हाड़ौती के हज़ारों वीर योद्धाओं के प्राण लिये। मैं इसे आपके हाथो में सौंपकर स्वयं नाथद्वारे जाता हूँ।

**ज़ालिमसिंह :** (**राजमुकुट अपने हाथ में लेकर फिर महाराव के शीश पर रखते हुए**) महाराव, तुम युग-युग के लिए कोटा के महाराव रहोगे। मैं एक अवधि से अंग्रेजी शासन से पत्र-व्यवहार कर रहा था कि किसी प्रकार यह युद्ध बंद होना चाहिए। राजपूतों को तलवार से नहीं स्नेह से जीतना आवश्यक है। अब यह युद्ध बंद करने की आज्ञा अंग्रेज़ी शासन से आगयी है, किन्तु देर से आयी। हमने राजकुमार

पृथ्वीसिंह जैसा रत्न गँवा दिया। तुम्हें मेरे साथ चलकर अपनी गद्दी सँभालनी होगी। बोलो, बेटा, तुम तैयार हो ? चुप क्यों हो, क्या मुझे क्षमा नहीं कर सके ? क्षमा नहीं कर सकते तो दण्ड दो। किशोरसिंह, ज़ालिमसिंह महान् स्वार्थी है, लोभी है, सत्तालोलुप है, लेकिन श्रीजी जानते हैं उसने कभी कोटा की राजगद्दी नहीं चाही, कभी देश की पराधीनता की कीमत पर सत्ता-प्राप्ति की इच्छा नहीं की। मैंने गद्दी नहीं—गद्दीधारी पर शासन चाहा था क्योंकि उसकी मेरी आदत पड़ गयी थी—और यही लालसा माधोसिंह में भी प्रबल हुई, लेकिन अंग्रेज़ हमारे भाग्य-विधाता बनें यह मैं नहीं चाहता था। मुझ से भूल हुई कि अंग्रेज़ मुझ से भी अधिक चतुर हैं इसे समझ न पाया। भूल से जो एक बार उनसे संपर्क स्थापित किया, वही हाड़ौती के लिए गले को फाँसी बन गया। महाराव, मैं बूढ़ा ज़ालिम आपके चरणों में पड़ता हूँ, आप अपनी गद्दी सँभालो और अपनी जन्मभूमि हाड़ौती से मुख न मोड़ो। स्वाधीनता की जो तड़प

आप में हाड़ौती ने देखी है वह भारत का सदा अनुप्राणित करती रहेगी ।

**[ज़ालिमसिंह महाराव के चरणों में गिरता है, महाराव उठाकर उनको गले लगा लेते हैं । ]**

**पटाक्षेप**